श्री बगलामुखी

(पीताम्बरा)

नित्यान्हिकम्

श्री बगलामुखी (पीताम्बरा)
नित्यान्हिकम्
(तान्त्रिक क्रम से)

लेखक व सम्पादकः
श्रीजी चरणानुरागी आचार्य पं. मनीषशंकर शास्त्री चतुर्वेदः
दीक्षा नामः- ज्ञानानन्दनाथ जी महाराज
श्रीजी पीठ, गताश्रम टीला, मथुरा।
मो.9412226481

प्रकाशकः
श्रीजी विद्या मन्दिर, मथुरा।

❋ लेखकः
पं. मनीषशंकर शास्त्री (श्री विद्या तंत्र रत्न)
श्री श्रीजी गद्दी गतश्रम टीला, मथुरा।
मो. 9412226481

❋ मूल्यः
रुपया अस्सी मात्र (रु० 80.00)

❋ प्रथम संस्करण
संवत् २०७८

❋ कम्प्यूटर सेटिंगः
मो. 8630706007

❋ प्रकाशकः
श्रीजी विद्या मन्दिर, मथुरा।

विष्यानुक्रमणिका

।। श्री:र्जयति।।

बगलामुखमिव मुखं यस्याः सा बहुब्रीहि समास उत्तरपदलोपा बगलामुख +ड़ीष् बगलामुखी अर्थात बगला के समान मुख वाली देवी, भगवती बगलामुखी के प्राकट्य के विषय में ऐसा वर्णन है एक बार समुद्र में राक्षस ने बड़ा प्रलय मचाया भगवान् विष्णु का बहुत समय तक राक्षस से युद्ध चला परन्तु भगवान् विष्णु उसका संहार न कर सके तो उन्होंने सौराष्ट्रप्रदेश में हरिद्रा सरोवर के समीप महात्रिपुर सुन्दरी की आराधना की तो श्री विद्यात्रिपुर सुन्दरी ने ही बगलामुखी के रूप में प्रकट होकर राक्षस का संहार किया। आपका प्राकट्य दिवस वैशाख शुक्ली चतुर्थी में जयन्ती पर्व के रूप में मनाया जाता है। बगलामुखी की उपसाना से पूर्व मत को चाहिए कि योग्य साधक गुण के द्वारा दीक्षित होकर साधना में प्रवेश करने से माँ की कृपा शीघ्र प्राप्त हो जाती है। साधक संयम नियम पूर्वक तनिष्ठ हो बगलामुखी के पाठ पूजा तथा मन्त्रानुष्ठान करने वाले साधकों को सर्वाभीष्ट की सिद्धि अवश्यमेव होती है इनकी उपासना (साधना) करने मात्र से दुःख दारिद्र व प्रबलतम शत्रु पीड़ा जनित कष्ट व परकृत्य का निवारण हो जाता है और साधक भोग मोक्ष सहित चारों पुरुषार्थों की प्राप्ती कर लेता है इसी भावना को देखते हुए (मैंने) हमने श्री बगलामुखी (पीताम्बरा) नित्यान्हिकम् को माँ श्रीजी के चरणों में समर्पित करते हुये साधकों तक पहुँचाने का अथक प्रयास किया है अतः मैं माथुर चतुर्वेद कुलगुरु अनन्त श्री विभूषित ऊर्धाम्नाय श्री पीठाधिपती श्री शीलचन्द जी बाबा महाराज के चरणों में बारम्बार वन्दन करते हुए इस अनुपम भेंट को साधकों को समर्पित करता हूँ। इति शम्

(इत्यलम् स्वस्तीति)

श्री श्रीजी चरणानुरागी पं. मनीषशंकर शास्त्री चतुर्वेदः
श्रीजी पीठ (मथुरा)

आदि पीठ श्री श्री जी गद्दी का परिचय

प्रात: स्मरणीय जगताराध्या जगज्जननी शिव प्रिया सती जी द्वारा दक्ष प्रजापति के यज्ञ कुण्ड में प्रजापति दक्ष के गर्व खर्व हेतु आरम्भ त्यागोपरान्त भक्त वीर भद्र द्वारा सम्र यज्ञ, यज्ञकर्ता, यज्ञाचार्यो के विनाशोपरान्त समग्र देवों द्वारा कैलाश पर्वत पर बारम्बार स्तुत्यादि से संतुष्ट शिव ने पुनर्यज्ञ प्रारम्भ कर पूर्णाहुति देते सुरों को वर प्रदान किया। साथ ही यज्ञ, मण्डप, यज्ञकर्ता, यज्ञाचार्यो, को अभय जीवन वर प्रदान किया श्रुति ऋचाओं का घोष आकाश को गुंजाय मान कर ही रहा था कि देवाधि देव भगवान शिव ने यज्ञाचार्य ऋषि महर्षियों एवं उपस्थित देवों को देख मधुर माधुरी चितवन से इंगित किया। कुछ समय पूर्व वे सभी मुझे यज्ञ में भाग प्राप्त न हो इस प्रकार का यज्ञ सम्पादित करा रहे थे? अब मुझे यज्ञ में भाग दिलाने मे समर्थ है? प्रभु अन्तर्यामी भगवान विष्णु ने आराध्य देव के चितवन भाव को जान ब्रह्मविद्या के प्रभाव से ब्रह्मावाहन किया। प्रकट होकर ब्रह्मा ने दर्भ निर्मित सात ऋषियों में प्राणों का संचार कर आदि विद्यामय देह प्रदान किया। सर्व प्रथम महागणपति ने उपस्थित हो बुद्धि प्रदान की। सरस्वती ने विद्या, कामदेव ने सौन्दर्य, यम ने धर्म, इन्द्र ने बल, ब्रह्मा ने वेद, शिव ने तन्त्र, एवं सती ज्योति ने आपको ब्रह्म, ब्रह्मविद्या, ब्रह्मदण्ड,ब्रह्मशक्ति एवं ब्रह्माण्ड का समग्र ज्ञान प्रदान कर दिया।

प्रथम चैतन्य ऋषि की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से प्रजापति दक्ष के देखने पर आप मुखरित हुए, मैं दक्ष प्रजापति दक्ष के यज्ञ सम्पादनार्थ ''षट्चक्रम् षोढ़साऽधारं त्रिलिङ्गम् व्योम पंचकम्''। ज्ञान मय आचार्य हूँ।

दक्षो वसिष्ठो धौम्यश्च कुत्स भार्गव सौश्रुवा:।।
भारद्वाजश्च मुनयो सर्व धर्म विदांवर:।।

ये ही सात गोत्र मय ऋषि हुए हैं। सप्त-ऋषियों ने स्वयं भगवान शिव को यज्ञ भाग हेतु यज्ञ सम्पादित कराया। भगवान ने आप सभी को नित्य शिवाशिव मय वरदान प्रदान कर गौलोक धाम तरनि तनूजा तट पर यज्ञार्थ ही निवास करने की प्रेरणा दी स्वनाम धन्य श्री प्रात: स्मरणीय श्री 1008 श्री मकरन्द जी महाराज उपर्युक्त दक्षगोत्र परम्परा श्री ब्रह्म विद्यानुरागी श्री यन्त्रोपाशक का नाम चतुर्वेद समाज को गौरवान्वित करता रहा है। जिनके दर्शन मात्र को जन-जन ने अपना सौभाग्य माना।

आपके विद्वद्वरेण्य सुत श्री 1008 श्री जर्नादन जी महाराज तत्पुत्र श्री 1008 श्री पति जी महाराज श्री विद्या के तन्त्र, मंत्र-यंत्र शास्त्र आगम निगम के प्रकाण्ड तपस्वी साधक हुए। आपके पौत्र श्री 1008 श्री शंकर मुनि जी की कीर्ति कौमुदी समाज पर व्याप्त है। तंत्र सम्राट दीक्षित जी के सानिध्य से आपको श्री यंत्र राज, पूजारत्नम एवं भगवत्याराधन पात्र प्राप्त करने हेतु तंत्र सम्राट के दो द्वारपाल सिंहो के मध्य गुजर कर अम्बिकावन स्थित भगवती राजराजेश्वरी महाविद्या जी के मन्दिर मे अन्य दिन अनुष्ठानादि कर्मो में अग्रसर होना भी अभीष्ट था। आपके पंच तत्वमय विग्रह से क्रमश: श्री 1008 आशाराम जी, श्री 1008 श्री छैलचन्द जी, श्री 1008 श्री कुंजमन जी, श्री 1008 श्री चेतराम जी एवं प्रात: स्मरणीय 1008 श्री शीलचन्द्र जी महाराज पाँच पुत्र रत्न उत्पन्न हुए।

पिता श्री की आज्ञानुसार श्री शीलचन्द्र जी महाराज ने श्री गंगाजी के तट पर अनुष्ठान के द्वारा अनूप शहर में श्री गंगाजी के साक्षात् दर्शन किये एवं श्री विद्यावर की प्राप्ति की। पुन: मथुरा आकर आपने अपने यश पताका से गौरवार्जन प्राप्त किया। आप अपने समय के मूर्धन्य विद्वान तपस्वी साधक रहे हैं। आर्य समाज संस्थापक स्वामी दयानन्द जी ने आपके समय में ही यह शिक्षा ग्रहण की एवं मंदिर के पृष्ट भाग में अध्ययन अभ्यास कर समय का सदुपयोग किया। आपकी प्रवचन शैली बोधगम्य सरल भाषा में तत्व को

प्रतिपादित करने की थी, जिसे सुन श्रोता आत्म विभोर हो ज्ञान ग्रहण करते थे। एक समय वाटिका से आते आपने अपने अग्रज श्री चेतराम जी को तत्कालीन वाराणसी के सुप्रसिद्ध विद्वान हलधर भट्ट से शास्त्रार्थ करते देख, भ्राता से आज्ञा ग्रहण कर भट्ट जी को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

विद्या बल के साथ ही आप में अपार शक्ति, बल भी माँ जगज्जननी की कृपा से था। दो लड़ते हुए सांड़ों को सींग पकड़कर प्रथक कर देना सामान्य बात ही थी। वृद्धावस्था में अनेको नारियलों को बगल में दाबकर तोड़ना तो आपकी दैनिकचर्या की एक अंग मात्र थी।

पला युद्धं पला युद्धं भो भो दिग्गज पण्डिता।।
गंगा दत्त: समा यात: व्याकरण वन केशरी।।

उपर्युक्त गर्जना करने वाले व्याकरण केशरी श्री गंगादत्त जी रंगदत्त जी एवं स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्राप्त शिष्यों ने आपकी यश पताका को सदैव ऊँचा रखा। मथुरा नगरी का गौरव श्री द्वारकाधीश मन्दिर आपके ही श्री कर कमलों द्वारा प्रतिष्ठित है। दसभुजी गणेश मन्दिर भी आपके द्वारा प्रतिष्ठत है। अम्बिका वन स्थित श्री महाविद्या जी का मन्दिर आपकी कृपा का ही फल है।

श्री गोपाल सुन्दरी पूजा पद्धति एवं पीताम्बरा पूजा पद्धति तंत्र शास्त्र की अलौकिक कृतियां आपके द्वारा सम्पादित हस्तलिपि में आज भी श्री जी पीठ पर उपलब्ध है।

कार्तिक कृष्णा 4 को 40 वर्ष की आयु में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। आपने उनका नाम विघ्नहरण रखा, किन्तु प्यार में बऊआ जी और बाद में आप श्री वासुदेव जी के नाम से विख्यात हुए। दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से आपने एक दिवस में अष्टाध्यायी का अध्ययन किया। तदुपरान्त पिता श्री के द्वारा जिव्हा पर बाग्भवकट यंत्र रचना के उपरान्त श्री महाविद्याजी की असीम अनुकम्पा से आप सब शास्त्र निष्णांत हो गये। आप की शिष्य मण्डली में प्रमुख महाराज ध्यान सिंह जी (अर्की मण्डी) को गोपाल सुन्दरी मंत्र की दीक्षा प्रदान कर पद्धति दी। बल्लभ कुल सम्प्रदाय के गोस्वामी देवकी नन्दन जी महाराज (कामवन) आपके प्रशंसकों मे थे। काशी नरेश द्वारा आयोजित विद्वत सम्मेलन में "पंचवक्त्रम" भगवान शिव ने अपने मुखार बिन्दों से क्या विषय प्रतिपादित किये हैं। उपर्युक्त प्रश्न से समग्र विद्वत समाज को आश्चर्य में डाल दिया। पुन: अपने ही प्रश्न का समाधान भी आपने किया। काशी नरेश ने आपका सम्मान किया।

श्री श्री 1008 श्री भैया जी महाराज का जन्म पौष कृष्णा 10 गुरुवार सं. 1940 में पाँच वहिनों के उपरान्त हुआ था। आपका शुभ नाम श्री 1008 श्री केशवदेव जी (प्रकाशानन्द) महाराज था। हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान श्री बुटकन प्रसाद जी चौधरी जी से, व्याकरण, अष्टाध्यायी श्री नारायण दत्त जी से, एवं श्री वनमाली जी से काव्य एवं अष्टादश पुराणों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया। परम-आदरणीय पूज्य पादपितृ चरणों में विराज गंगादत्त जी के पौत्र मोती दत्त जी के साथ "तन्त्र, मंत्र शास्त्र का अध्ययन किया।" कर्मकाण्ड का अध्ययन आपने घर में ही प्राप्त किया था।

यज्ञोपवीतोपरान्त आपने अनुष्ठानादि का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया आपका नित्यान्हिक क्रम प्रात: उठकर प्रात: स्मरण, स्नानादि करके वाच्छाकल्पलता: वाच्छा चिन्तामणि, रश्मिमाला, वैदिक एवं तांत्रिक संध्या, पंच विधि मातृ का न्यास लघुषोढ़ा, महाषोढ़ा, शक्ति न्यास, सहस्राक्षरी गायत्री, पंचशती, पीताम्बरा, इत्यादि जाप करने के उपरान्त अन्यान्य मन्त्रों की अष्टोत्तर आवृत्ति कर पार्थिव पूजन एवं महागणपति के 444 तर्पण प्रति दिवस का दैनिक कृत्य था।

पिता श्री के कैलास वासोपरान्त आपका अभिषेक आश्विन शुक्ला 5 में सं. 1976 में 35 वर्ष की वय में तांत्रिक विधि से पीठाधीश्वर पद पर हुआ। आपके अंग प्रत्यंग पर असाधारण सौन्दर्य तथा श्री मुख पर दिव्य तेज एवं ऐश्वर्य की आभा सदैव सुशोभित रहती थी।

वैष्णव पीठाधीश्वर श्री गोपाल लाल जी महाराज को आपने अपनी मन्त्र शक्ति से असहाय हालत से बचाया। भरतपुर के श्री धाऊजी को 60 वर्ष की वय मे पुत्र दर्शन कराये भरतपुर नरेश श्री किशन सिंह जी को समय-समय पर चमत्कृत किया एवं सम्मान पाया। महाराज ने श्री जी की पुष्प की सेवा हेतु एक रुपया प्रति दिवस, बगीचा में बैलों की जोड़ी एवं समस्त व्यय की व्यवस्था की थी।

शिष्य समुदाय के हितार्थ आपने बाला पद्धति, बगला पद्धति, तारा पद्धति एवं काली पद्धति की रचना की। आपके चार पुत्र हुए।

1. श्री 1008 श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज
2. श्री 1008 श्री गोपाललाल जी महाराज
3. श्री 1008 श्री करूणाशंकर जी महाराज
4. श्री 1008 श्री विश्वनाथ जी महाराज

श्री 1008 श्री शिवप्रकाश देव जी(लाल बाबा) महाराज व्याकरण, श्रीमद् भागवत, पुराण, ज्योतिष, तन्त्र शास्त्र एवं मन्त्र शास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे। कलकत्ता नगरी में अपने समय के मूर्धन्य विद्वान भारत विख्यात कापालिक सम्प्रदाय के आचार्य श्री चाबडिया ओझा आपकी विद्वता से अति प्रभावित हुऐ आपका सम्मान् करते हुऐ अद्भुत यन्त्र भेट किया। सन् 1945 में कुरुक्षेत्र में आयोजित सूर्य यज्ञ में आप सर्वोपरि तीन आचार्यो में एक थे। श्री गोपाल लाल जी महाराज का निधन वाल्ययावस्था में अल्पायु में ही हो गया। श्री 1008 श्री विश्वनाथ जी महाराज ने आधुनिक विषयों का अध्ययन कर स्नातक उपाधि अर्जित की। युवावस्था में आपका कैलाश वास हो गया। आपके शोक में महाराज श्री भैया जी का कैलाश वास श्रावण शुक्ला 15 सं. 2001 में हो गया।

सर्वतन्त्र स्वतन्त्र तांत्रिक सम्राट श्री 1008 श्री करुणाशंकर जी महाराज (कन्ने बाबा) श्री विमर्शानन्द जी महाराज का जन्म माघ शुदी 5 सं. 1967 में हुआ। श्री बुटकन प्रसाद जी चौधरी से प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कर श्री युत् जंगीराम जी से आपने काव्य, व्याकरण एवं श्री मद् भागवत का अध्ययन किया। पूज्यपाद पिता जी के चरणों में बैठ आपने मन्त्र शास्त्र, तन्त्र शास्त्र एवं ज्योतिष कर्म काण्ड का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया।

आप विद्वत् सभा के संरक्षक रहे है। आपकी सर्व तो मुखी प्रतिभा से प्रभावित होकर भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी, उपराष्ट्रपति श्री वासप्पा दानप्पा जत्ती प्रभृत राज नेताओं ने आपको सम्मान प्रदान किया। श्रीमद् भागवत, बाल्मीकि रामायण, श्री मद्देवी भागवत एवं महाभारत के कुशल प्रवक्ता रहे हैं। आपके प्रवचन से प्रभावित हो भारतीय विद्या भवन मुम्बई के संस्थापक एवं उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री कन्हैयालाल माणिक लाल मुंशी के आग्रह पर मुम्बई में श्रीमद् भागवत का प्रवचन किया।

सन् 1965 में वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय में आयोजित प्रथम तान्त्रिक सम्मेलन में मथुरा नगरी से पधारे शिष्ट मण्डल का नेतृत्व आप द्वारा ही हुआ था। उपर्युक्त सम्मेलन में आप ही एक मात्र प्रतिनिधी थे जिन्हें सरकारी व्यय पर सेवक (शिष्य) साथ लाने की अनुमति प्राप्त हुई। आपके साथ प्रसिद्ध तंत्र साधक श्री ब्रह्मा जी महाराज गये। आपको महामहिम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा तंत्र सम्राट की उपाधी से विभूषित किया गया।

संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश ने आपका सम्मान किया एवं 1100 रुपया नकद राशि भेंट की। सं. 2013 में आपने उरई में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया। पुन: पीताम्बरा पीठ दतिया के स्वामी जी द्वारा असमर्थता व्यक्त किये जाने पर आपने उरई (जालौन) में श्री ललिता त्रिपुर सुन्दरी मन्दिर की स्थापना करायी। आप अपने समय के सर्व शास्त्र निष्णात तान्त्रिक सम्राट रहे है। मथुरा नगरी में जो भी विद्वान पधारे आपकी वैदुष्य की प्रशंसा ही करते रहे। प्रज्ञाचक्षु श्री गंगेश्वरानन्द आपके श्री मुख से निर्गत, 'तेषु सार भूता वेदा; तत्रापि गायत्री सात्र द्वतय अस्पष्टा च, तत् सवितु .... इति स्पष्टा, कामो योनि कमला वज्र पाणि गुहा हस इति सां केतिकै शब्दै: यां विद्यां प्रकट यतुं नासमर्था वेद् पुरूषोऽपि सा अवश्य विज्ञेया।' सुनकर प्रज्ञाचक्षु आश्चर्य चकित हो गये एवं अपका सम्मान किया। जगन्नाथ पुरी के महन्त श्री गंगाशरण दास जी आपको वशिष्ट जी के सम्बोधन से ही जानते थे। धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज आपकी अलौकिक तंत्र शास्त्र शक्ति देख आप से मथुरा आगमन पर सदैव परामर्श करते रहते थे।

आप द्वारा प्रणीत भगवत्या पंचरत्न स्तोत्रम्, श्री यमुना पूजन पद्धति, बाला कल्प, महागणपति पूजन पद्धति श्रेष्ठतम ग्रन्थ है। भगवत्या: नित्यान्हिकम् ग्रन्थ तन्त्र शास्त्र की आलौकिक कृति है।

नाथद्वारा आप के प्रमुख शिष्यों मे गो. तिलकायत श्री गोविन्द लाल जी महाराज नाथद्वारा की बहू जी अखण्ड सौभाग्य वती विजय लक्ष्मी बहू जी, भारत वर्ष विख्यात् वैद्य सुरेश चतुर्वेदी, तांत्रिक पं. अमरनाथ जी चतुर्वेदी इत्यादि प्रमुख है। दिनांक 11-12-1980 को प्रात: काल स्मरण करते आप योग मार्ग द्वारा अपने प्राणों का त्याग कर कैलाश वास किया। शाक्त समुदाय में आप जैसा सद्दृश, तत्व वेत्ता, मर्मज्ञ, विद्वान का होना अति कठिन है। आपने अपने जीवन काल में अष्टोत्तर शत नव रात्रि एक ही श्री यंत्र राज पर की है आपका दैनिक क्रम प्रात: स्मरणस्नानादि से निवृत्त हो कल्पलता वांछा चिन्तामणि, रश्मीमाला, वैदिक एवं तान्त्रिक संध्या, पंचविधि मातृका न्यास लघु षोढ़ा, महा शक्ति न्यास, सहस्त्रा क्षरी गायत्री मन्त्र जाप, पंचदशी, पीताम्बरा मन्त्र अन्यान्य मन्त्रों का अष्टोत्तर शत जाप पार्थिव पूजन एवं महागणपति 444 तर्पण प्रमुख थे।

आपके चार पुत्र हुए जिनमें श्री 1008 श्री पृथ्वी धरन जी महाराज, श्री 1008 श्री कृष्णानन्द जी महाराज, 1008 श्री बनवारी जी महाराज, श्री 1008 श्री ठाकुर जी महाराज जिसमें प्रथम ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण श्री पृथ्वीधरन जी महाराज को पीठाधीश्वर पद पर अभिशिक्त किया आप बड़े ही सरल व सन्त स्वभाव प्रवत्ति के धनि थे आपके कैलाश वास उपरान्त श्री कृष्णानन्द जी महाराज को पीठ पर विराजमान किया आप स्वयं विद्वत्ता में द्वितीय सूर्य के समान थे आप छै मास गद्दी पर विराजमान रहे और अचानक हृदय गति रुक जानें के कारण आपने नश्वर शरीर को छोड़ कैलाश वास गमन किया। शिष्य समुदाय ने गद्दी पर संवत् 2065 चैत्र शुक्ला ललिता पंचमी को **श्री 108 श्री ठाकुर जी बाबा महाराज** को श्री जी पीठ पर अभिशिक्त कर पीठासीन किया आपने ब्रह्म विद्या व अन्यान्य शास्त्रों का ज्ञान अपने पित्र चरणों में बैठ कर प्राप्त किया वर्तमान समय में आपने अपने पूर्वजों की परम्परा का अनुसरण करते हुए श्री जी की सेवा में समर्पित है।

नूतन पीढ़ी में आपके पुत्र **पं. मनीषशंकर शास्त्री** परम्परागत दीक्षित हैं। आपने तंत्र शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान मातामह प्रसिद्ध तंत्र साधक 1008 श्री ब्रह्मा जी महाराज से प्राप्त किया।

लेखक-- **आचार्य पं. दामोदर शास्त्री**
(दम्मो पंडित)
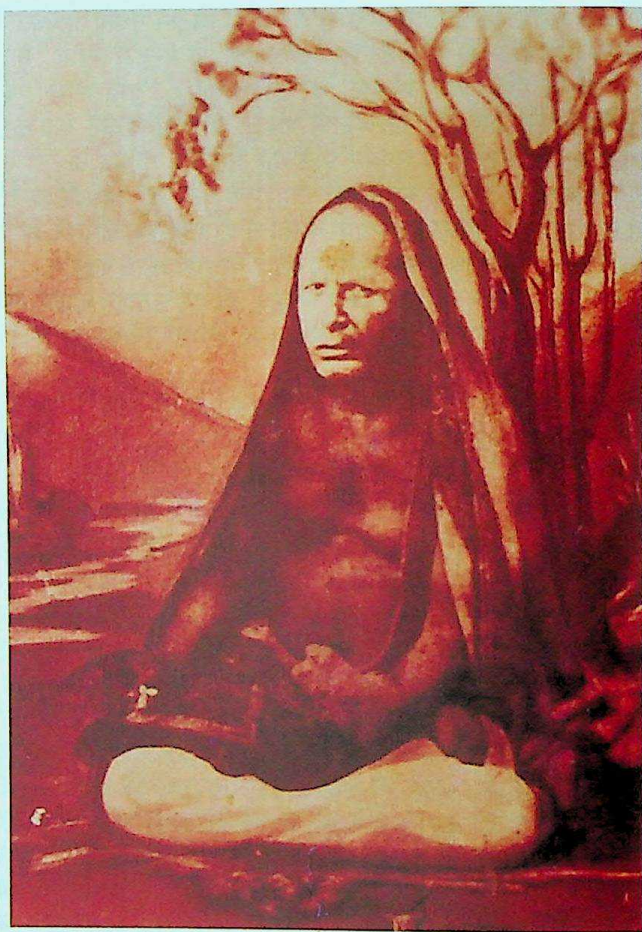
अनन्त श्री विभूषित श्री पीठाधिपति

प्रातः स्मरणीय १००८ श्री वासुदेवजी बाबा महाराज
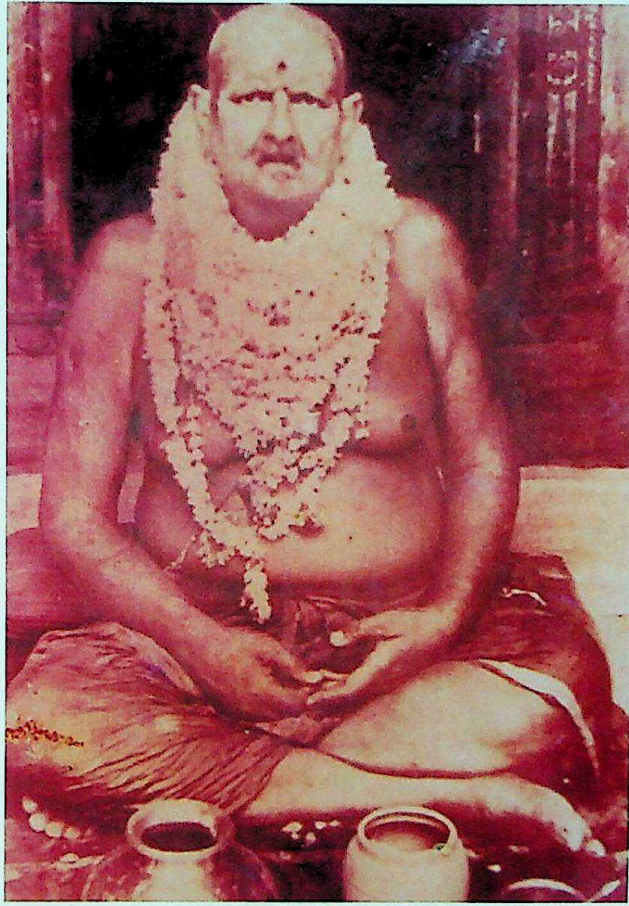
अनन्त श्री विभूषित श्रीजी पीठाधीश्वर

माथुर कुल कमल दिवाकर

१००८ कै० श्री केशवदेव जी माहाराज (भैया जी)

अनन्त श्री विभूषित श्रीजी पीठाधीश्वर
सर्वतन्त्र स्वतंत्र १००८ कैं० श्री करुणाशंकर जी महाराज

सर्वतन्त्र स्वतंत्र श्रीजी पीठाधीश्वर १००८ श्री ठाकुरजी बाबा महाराज

पूज्य गुरुवर श्रीश्री १००८ श्री ब्रह्माजी महाराज तांत्रिक

श्रीजी पीठाचार्य आचार्य मनीषशंकर शास्त्री

पाठकों की विशेष माँग पर दसों महाविद्याओं की तन्त्र सिद्धि को टीका सहित श्रृंखला में शुद्ध व सरल क्रमविधि से लिपिबद्ध प्रथम पुष्पोपहार ''श्रीपीताम्बरा बगला मुखी नित्यान्हिकम्'' आपके समक्ष प्रस्तुत है। साधकों से निवेदन है कि बगलामुखि शब्द में 'ब' शब्द ही प्रयोग में आयेगा। किसी कारणवश इस संस्करण में कही-कही 'व' शब्द छप गया है अतः साधकगण 'ब' शब्द ही प्रयोग में लाये। पाठकगण किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा करते हुए हमें अवगत कराने का प्रयास करेंगे।

प्रार्थये सुजातास्तद्वैक्षमध्वमेऽपराधकम्।

इन्ही शब्दों के साथ जय श्री जी की।

॥इति शुभं भूयात्॥

--प्रकाशक

अथ श्री पीताम्बरा वगलामुखीदेवी महाविद्या तन्त्र सिद्धि

॥ प्रारम्भः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री वगलामुखी देव्यैनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्तम्भिनी बगलामुखी ॥

प्रथम भगवान श्री गणेश जी व श्री गुरुचरण कमलों को नमस्कार करके शत्रुओं का स्तम्भन करने वाली पीत वस्त्रधारिणी श्री वगलामुखीदेवी की तन्त्र सिद्धि का प्रारम्भ करते हुए वर्णन करते हैं।

अथ श्री बगलामुखी उपासकानां प्रातः कृत्यम् ॥ तद्यथा-

बगलामुखी के उपासकों को प्रातःकाल नीचे लिखे अनुसार कृत्य करना चाहिये।

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय रात्रि वाससीत्यक्त्वा स्वगुरुं यथोक्त रूपं ध्यायेत् ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ सानन्द मानन्द कर प्रसन्नं ज्ञान स्वरूपं निज बोध युक्तं। योगीन्द्र मीड्यं भवरोग वैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्य महं नमामि॥

इत्यनेन स्वगुरुं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य गुरुमंत्रं यथा शक्ति जपेत ॥

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर रात्रि के दूषित वस्त्रों को उतारकर स्नानादि करके शुद्ध वस्त्र धारण करे पश्चात् अपने गुरु का ध्यान करे। यथा--

आनन्दित आनन्द करने वाले प्रसन्न ज्ञान रूप अपने बोध एवं निर्मल बुद्धि से युक्त योगीराज स्तुति एवं पूजा से प्रसन्न हो संसार रूपी रोग से वैद्य की भांति मुक्ति दिलाने वाले अपने गुरु को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ॥

इस प्रकार ध्यान करके मन में गंधोपचार द्वारा पूजन करे तथा गुरुमंत्र का यथा सामर्थ्य जप करे ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह्सौः स्हौः गुं गुरुपादुकाभ्यो नमः ॥ गुं गुरुभ्यो नमः ॥

ह्रीं श्रीं लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः ॥ कनिष्ठांगुष्ठाभ्यांमिति गन्धं समर्पयेत् ॥१॥

ह्रीं श्रीं हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः ॥ तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां इति पुष्पं समर्पयेत् ॥२॥

ह्रीं श्रीं यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः ॥

अंगुष्ठ तर्जनीभ्यां इति धूपं समर्पयेत् ॥३॥

ह्रीं श्रीं रं वन्हयात्मकं दीपं समर्पयामि नमः ॥ मध्यमाभ्यां इति दीपं समर्पयेत् ॥४॥

ह्रीं श्रीं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि

नमः॥ अनामिकाभ्यां इति नैवेद्यं निवेदयेत्॥५॥

ह्रीं श्रीं ऐं सर्वात्मके ताम्बूलं समर्पयामि नमः ॥ अंजलिना ताम्बूलं समर्पयेदिति पंचभूतात्मकैर्गुरु पादुकां यजेत्॥ ६॥

गुरु पादुका के मानसिक पूजन में गंध चढ़ाते समय मन में गंध चढ़ाने का भाव रखता हुआ कनिष्ठिका अँगुली और अँगूठा मिलाकर गन्ध मुद्रा दरसावे।

मानसिक भावना से-तर्जनी अंगुष्ठा मिलाकर पुष्प मुद्रा द्वारा पुष्प चढ़ावे।

अंगूठा तर्जनी के योग से धूप और मध्यमा अंगुली दरसाकर दीप दरसावे। अनामिका अँगुली दिखाकर नैवेद्य अर्पित करे। अन्जली बांधकर ध्यान पूर्वक पान समर्पण करे इस प्रकार पंचभूतात्मक पूजन से गुरू चरणों की मन में पूजा करे। मानसिक पूजा के बाद ऊपर लिखा गुरुमंत्र का जाप करे। तत्पश्चात नीचे लिखे अनुसार गुरु की स्तुति करे।

अथ श्री गुरु प्रार्थना

ततो योन्यंजलि मुद्रां प्रदर्श्य नमस्कृत्य स्तुतिं च कुर्यात्॥

ॐ अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं। तत्पदं दर्शितं येन तस्मैश्रीगुरुवे नमः॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥ नमोगुरुभ्यो गुरु पादुकाभ्यो नमःपरेभ्यः पर पादुकाभ्यः। आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यः नमोऽस्तु देवी पद पंकजेभ्यः॥ अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानां-जन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥ इति गुरु प्रार्थनां कृत्वा इष्ट देवतां श्री पीताम्बरां वगलामुखीं देवीं ध्यान पूर्वकं मन्त्र जपं कुर्यात् ॥

गुरु प्रार्थना करके अपनी इष्ट देवी श्री पीताम्बरा बगला-मुखी का ध्यान पूर्वक मन्त्र जपे॥

॥ अथ प्रातःकाले श्री पीताम्बरा वगलामुखी मन्त्र जप विधिः॥

प्रातः कृत्यादि प्राणायामान्तं विधाय ऋष्यादिकं कुर्यात् ॥ अस्य श्री पीताम्बरा वगलामुखी देवी महामन्त्रस्य नारद ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः श्री पीताम्बरा वगलामुखी महाविद्या देवता ह्लीं बीजम् स्वाहा शक्तिः श्री पीताम्बरा वगलामुखी महाविद्या प्रसाद सिद्धर्थे जपे विनियोगः॥

हाथ में जल लेकर ऊपर लिखा विनियोग पढ़कर जल छोड़े।

अथ ऋष्यादिक न्यासः।। ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि ।। ॐ त्रिष्टुप छन्दसे नमः मुखे ।। ॐ वगलामुखी देवतायै नमो हृदि ।। ॐ ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ।। ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।। विनियोगाय नमः सर्वांगे।।

अथ करन्यासः।।ॐ ह्लीं अगुष्ठाभ्यां नमः।।ॐ वगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः।। ॐ सर्व दुष्टानां (शत्रूणां) मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ बाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ जिह्वांकीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।ॐ बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

अथ हृदयन्यासः।। ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।। ॐ वगलामुखीं शिरसे स्वाहा।। ॐसर्व दुष्टानां शिखायै वषट् ।। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट।। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।।

एवमेव हृदयादि षडंग न्यासं कृत्वा पीताम्बरा वगलामुखी देवीं ध्यायेत्।।

इस प्रकार ऊपर लिखे अनुसार न्यास करके श्री वगलामुखी देवी का ध्यान करें अंजली बाँधकर नीचे लिखे स्वरूप को अपने हृदय कमल में विराजमान करे।।

।। अथ श्री पीताम्बरा बगलामुखीध्यानम्।।

ॐ मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्नवेदी सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम् । पीताम्बराभरण माल्य विभूषितांगीं, देवीं स्मरामिधृतमुद्गर वैरि जिह्वाम्।।

जिह्वाग्र मादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीड-यन्तीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन् पीताम्बराढ्यांद्विभुजां नमामि॥ एवंध्यात्वा मानसैरूपचारैः संपूजयेत्॥

अमृत रूपी समुद्र के मध्य में मणियों के मण्डल में रत्नों की वेदी के सिंहासन पर पीले रंग के वर्ण वाली और पीले ही वस्त्राभरण तथा मालाओं से विभूषित अंग वाली पीताम्बरा वगलामुखी देवी जो मुद्गर लिये है और शत्रु की जिव्हा को पकड़े हुए है उसका स्मरण करता हूँ।

जिह्वा का अग्रभाग अपने हाथ में पकड़े अर्थात बाँए हाथ से शत्रु की जीभ खींचकर पीड़ा पहुँचाने वाली देवी वगलामुखी जो दाहिने हाथ में ली हुई गदा से चोट मारती हुई है उस पीताम्बर ओढ़ने वाली दो भुजा वाली वगलामुखी को मैं नमस्कार करता हूँ॥

इस प्रकार ध्यान करके हृदय कमल पर वगलामुखी देवी को स्थापित करके नीचे लिखे मन्त्र से पूजा करे॥

श्री वगलामुखी मानस पूजा

मूलान्ते श्री आत्मतत्व व्यापिनी वगलामुखी पीताम्बरा महाविद्या श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥१॥

मूलान्ते श्री विद्या तत्व व्यापिनी वगलामुखी पीताम्बरा महाविद्या श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥२॥

मूल मन्त्रान्ते श्री शिव तत्व व्यापिनी वगलामुखी पीताम्बरा महाविद्या श्री पादुकां पूजयामि नमः॥३॥

इति तत्व त्रयेण पीताम्बरा वगलामुखी महाविद्यां पूजयेत्॥

उपरियुक्त तीनों तत्वों से मन में तीन बार पादुका पूजन करे।

॥ मन्त्र ॥

ॐ ह्लीं वगलामुखीं सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥

इस मन्त्र का यथाशक्ति जप करे तत्पश्चात् बाँए हाथ की ओर जल

छोड़कर नीचे लिखें मन्त्र से जप समर्पण करे ।

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत् कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् महेश्वरि॥

॥ इति जपं निवेदयेत् ॥

आसन से उठते समय पृथ्वी का स्पर्श कर मस्तक से लगावें फिर दाहिना पैर रखे।

॥अथ भूप्रार्थनादि मुख प्रक्षालनार्न्थं विधिः ॥

॥ मन्त्र ॥

ॐ समुद्र वसने देवि पर्वतस्तन मण्डिते । विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पाद स्पर्शं क्षमस्व मे ॥१॥ प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः। यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम् ॥२॥ इति भूमिं प्रार्थ्य धरणीतल न्यस्त वहन्नाडी पार्श्व पादमुत्थाय ग्रामात् बहिः स्मार्तेन विधिना निर्वर्तित शौच क्रियाः ॥

भूप्रार्थना से लगाकर मुँह धोने की विधि तक इस प्रकार करे अर्थात् प्रथम मन्त्र का जाप कर पृथ्वी पर प्रथम दाहिना पैर रखे । दूसरे मन्त्र से इष्ट देवता की प्रार्थना करे कि प्रात:काल से सांयकाल पर्यन्त और सायंकाल से प्रात:काल तक जो कुछ भी करता हूँ हे जगदम्बे ? वह तेरा ही पूजन है।

भूमि की प्रार्थना कर जब धरती पर पैर रखे तब नाक का जो स्वर चल रहा हो उसी करवट से सोकर उठे और उसी तरफ के पैर को जमीन पर पहिले रखे पश्चात् अपने निवास स्थान से बाहर जाकर स्मार्त विधि से शौच कार्य से निवृत्त होवे उसके बाद नीचे लिखे मन्त्र से दन्तधावन करे।

॥अथ दन्तधावन काष्ठअभिमन्त्रण मन्त्रः ॥

ॐ आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजाः पशू वसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥
इति मन्त्रेण दन्तधावन काष्ठं अमिन्त्र्य॥

इस मन्त्र से दांतुन का अभिमंत्रण करे ।

।। अथ दंतधावन मन्त्रः ।।

ऐं ह्रीं श्री क्लीं कामदेवाय सर्वजन प्रियाय नमः।

।। इति मन्त्रेण दन्त धावनम् ।।

इस मन्त्र से दाँतों पर मंजन व दातुन करे और मुख धोवे।

अथ जिह्वा शोधन, कफ विमोचन, नासा शोधन, दूषिका, निरसन, पूर्वकं विहित विंशति गण्डूषः-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्ल्लेखया ह्रीं जिर्ह्वाल्लेखन शोधनं च।

उक्त मन्त्र से जीभी, नाम साफ, मुख दुर्गन्धि नाशक बीस बार कुल्ला करें ।।

अथ मुख प्रक्षालन मन्त्रः-ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ।।१।।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।२।।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ।।३।।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं सहकल ह्रीं श्रीं।।४।।

इति मन्त्र चतुष्टयेन मुखं प्रक्षाल्य यथा स्मृत्या चार्च्येत्।।

।। इति भूमि प्रार्थनादि मुख प्रक्षालनान्त विधिः ।।

अथ प्रातः कालीन तांत्रिक स्नान विधिः

ततो नद्यादौ कूप तड़ागादौ गच्छेत्ततोवैदिक स्नानोतरं संकल्पं कुर्यात्।।

।। अथ संकल्पः ।।

अद्येत्यादि भगवति श्री पीताम्बरा वगलामुखी महाविद्या देवी प्रीत्यर्थं प्रातःकाले तान्त्रिक स्नान महं करिष्ये ।। इति संकल्पंत्यक्त्वा जले पुरतो हस्तमात्रं

चतुरस्त्र मण्डलं परिगृह्य तत्र--सूर्यं प्रार्थयेत्॥

प्रातःकृत्य के बाद प्रातःकालीन तान्त्रिक स्नान विधि बतलाते हैं। नदी-तालाब या कुआ पर वैदिक स्नान के बाद तान्त्रिक स्नान करना चाहिये तथा स्नान के पहिले संकल्प करे फिर जल पर अपने आगे एक हाथ लम्बा चौड़ा चतुरस्त्र चौकोर मण्डल बनावे और उस पर सूर्य की प्रार्थना करे॥

॥ अथ तीर्थ प्रार्थना॥

ॐ ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टान्विते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥
इति सूर्यमभ्यर्थ्य-गंगादिकं च संप्रार्थ्य-

ॐ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि। एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्व तीर्थ समन्विते॥ इति गंगा-मभ्यर्थयित्वा॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्रौं इत्यंकुश मुद्रया सूर्य मण्डलंभित्वा ततो गंगादि सर्व तीर्थावाहनोत्तरं व इति सलिल बीजेन सप्तवार मभिमन्त्र्य मुहूर्मूल मावर्तयन् मूर्द्धनि त्रीनुदकान्‌जलीन दत्वात्रिरपश्च पीत्वा तर्पयेत्॥ मूलं श्री पीताम्बरा वगलामुखीं तर्पयामीतित्रितर्पणं मूलेन त्रिः प्रोक्षणं च आत्मनो योनि मुद्रया विदध्यात्॥ गृहेतु विना तर्पणम्। अशक्तौ च स्मार्तेन यथा मन्त्र भस्म स्नानयो-रन्यतरं निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमनं प्रोक्षणे केवलं कुर्यात्॥

सूर्य प्रार्थना के बाद गंगा प्रार्थना करके अंकुशमुद्रा से सूर्य मण्डल भेद कर गंगादिक समस्त तीर्थों का आवाहन करके वं इस अमृत बीज से जल को ७ बार अभिमन्त्रित कर मूल मन्त्र से तीन बार जल की अंजली भरके अपने शिर पर डाले पुनः तीन बार जल पीवे फिर तीन बार तर्पण करे, तीन बार प्रोक्षण करे और हृदय पर योनि मुद्रा से प्रणाम करे। यदि घर में स्नान करे तो तर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है। अशक्त होने पर मन्त्र स्नान भस्मस्नान या तीन आचमन तीन बार प्रोक्षण केवल करे।

॥ इति स्नानविधिः॥

।। अथ प्रातः तांत्रिकी सन्ध्या विधिः ।।

अथ धौते वाससी परिधाय विधृत त्रिपुण्ड्र ।
वैदिकीं संध्यामभिन्द्य तान्त्रिकी सन्ध्यामाचरेत् ।।

शुद्ध धुले हुए वस्त्र पहन कर तिलक चन्दन धारण करे फिर वैदिक सन्ध्या के बाद प्रातःकालीन सुवह की बेला में की जाने वाली तांत्रिक संध्या करे ।।

मूलेन त्रिराचम्य ।।द्विऽपरिमृज्य ।।सकृदुपस्पृश्य ।। चक्षुषीनासिके श्रोत्रे अंसे नाभिं हृदयं शिरश्चाभि स्पृशेत् ।।

एवं त्रिराचम्य पूर्ववत् प्राणानायम्य त्रिरात्मानं प्रोक्ष्य मार्तण्ड भैरवं त्रिरर्घ्यं दत्वा तन्मण्डले वगलामुखी देवी यन्त्रमनुचिन्त्य तत्र पीताम्बरां वगलामुखीं देवीं ध्यायेत ।।

मूल मंत्र से तीन आचमन करे । दो बार मार्जन करे । एक बार हाथ धोवे । नेत्र, नाक, कान, मुख, नाभि, हृदय, शिर का स्पर्श करे। फिर तीन बार आचमन करे और प्राणायाम करे फिर तीन बार हृदय पर छींटा लगाबे पश्चात् मार्तण्ड भैरव को तीन बार अर्घ्य देके उसके मण्डल में वगलामुखी देवी का ध्यान करे।

।। अर्घ्यदानम् ।।

अंजलिना सलिलमादाय----

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्ड भैरवाय प्रकाश शक्ति सहिताय स्वाहा ।।इति मंत्रेण उदयते विवस्वते त्रिरर्घ्यं दत्वा तन्मण्डले वगलामुखी देवी चक्रस्थ पीताम्बरां महाविद्यां ध्यायेत ।।

।। श्री वगलामुखी यन्त्रोद्धार ।।

त्र्यस्रं षडस्रं वृत्तमष्टदलं पद्म भूपुरान्वितम् ।

त्रिकोण षट्दलाष्टास्र षोडशारधरा पुरम् ॥
मध्ये संपूजये देवी कोणे सत्वादिकान् गुणान्॥

ॐ सौवर्णासन संस्थितान् त्रिनयना पीतांशु-कोल्लासिनीं हेमाभांगरुचिं शशांक मुकुटां सच्चंपक स्त्रग्युताम्। हस्तैर्मुग्दर वज्रपाश रसनाः सबिभ्रतीं भूषणै, व्याप्तांगीं वगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥

सुवर्णस्य आसने सम्यक् प्रकारेण स्थिताम् उपविष्टाम् तथा नेत्रत्रययुतां पीतानिच तान्यंशुकानि पीतांशुकानि पीतांशुकैः उल्लसते इति ॥ पीतांशुकोल्लासिनीताम्, पीतवस्त्रविभूषिताम् । सुवर्ण शोभावत् अंग दीप्तियुताम् स्वर्ण चर्चिका चन्द्रयुक्तमुकुटां सुन्दर चम्पक मालाभिः सहिताम्। चतुर्भिर्हस्तैः मुग्दर वज्र पाश रसनाऽसंविभ्रतीं मुग्दर वज्रौ दक्षहस्तयोः पाश रिपु जिह्वे वाम हस्तयोः अलंकारयुक्त शरीरां त्रिजगतां भूर्भुवः स्वर्लोकानां स्तम्भन कारिणीं वागर्गला रूपां वगलामुखी अहं चिन्तये ध्यायामि॥

एवं भूता भगवतीं ध्यायेत्। मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्नवेदी, सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम्। पीताम्बरा भरण माल्य विभूषितांगी, देवीं स्मरामि धृत मुग्दर वैरी जिह्वाम् ॥ १॥

जिह्वाग्रमादाय करेणदेवीं वामेन शत्रून् परिपी-डयन्तीम् । गदाभिघातेन च दक्षिणेन,पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥२॥

चलत्कनक कुण्डलोल्लसित चारु गण्डस्थलां, लसत्कनक चम्पक द्युतिमदिन्दु बिंबाननाम्। गदा हत

विपक्षकां कलित लोल जिह्वांचलां, स्मरामि वगला-
मुखीं विमुखवाङ् मुखस्तम्भिनीम् ॥१॥

मूल मन्त्रेण श्री पीताम्बरायै वगलामुखी देव्यै त्रिरर्घ्यं दत्वा मूलेन त्रिः संतर्प्य, मूलेन पूर्ववदाचम्य ऋष्यादीन् पूर्ववत् विधाय मूलमंत्रं अष्टोत्तर शतवारं आवर्तयेत् ॥

पुनः करादि अंगन्यासं कृत्वा जपं वगला देव्यै समर्प्य आचम्य मण्डलस्थ तीर्थ विसर्जन मुद्रया सूर्ये विसृजेत्। उपस्थानं कुर्यादिति तान्त्रिक सन्ध्या विधिः॥

॥ अथासन शुद्धिः भू शुद्धिः भूतोत्सारण विधि ॥

आसनमध्ये त्रिकोणं विधाय मध्ये ह्रीं आधार शक्ति कमला सनाय नमः। इति सम्पूज्य आसनमास्तीर्य --

पृथ्वीतिमंत्रस्य सुतलं छन्दः श्री कूर्मो देवता आसन शुद्धि करणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वित्वयाधृता लोका देवित्वं विष्णुनाधृतम्।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्॥
इति मन्त्रं पठित्वोपविश्य भूतोत्सारणं कुर्यात्
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा प्रेत गुह्यकाः।
ये चात्र निवसन्तु चान्ये देवताभुवि संस्थिता॥
ये भूताविघ्न कर्तारः, ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
ॐ सर्व विघ्नानुत्सारयोत्सारय हुं फट् स्वाहा॥
इति तालुत्रय दिग्बंधनेन दिव्य दृष्ट्या विलोचनेन विघ्नानुत्सारये दितिभूतोत्सारण विधिः ॥

आसन शुद्धि भूशुद्धि : तथा भूतोत्सारण विधि कहते हैं।

आसन के नीचे मध्य में जल से त्रिकोण बनाकर उसके बीच में आधार शक्ति की पूजा करे, गन्धाक्षत पुष्प देकर आसन बिछावे फिर हाथ में जल

लेकर आसन मंत्र का विनियोग छोड़े और आसन मंत्र से आसन बिछावे, चुटकी बजाकर भूतोत्सारण करे फिर चारों ओर चुटकी बजाकर तीन ताली से फटकार दे, कड़क दृष्टि से ऊपर की ओर देखकर विघ्नों को भगावे। इसे भूतोत्सारण विघ्नोत्सारण विधि कहते है ।।

अथ श्री अमृतेश्वरी चैतन्य शक्ति

स्मरण विधि

चिद्विमर्शः ।। तत्रादौ चिद्विमर्शः तेन च नियमित। पवनमनः स्पन्दः आमूलाधारं आ च ब्रह्मरंध्रमुद्गदतां तटिल्लता सहजाकृतिं तरुणारुण पिंजर तेजसं ज्वलंती सर्वकारणभूतां परांसंविदं विचिन्त्य मेधांमूलेनाष्टाधाभिमन्त्र्य अमृतेश्वरीं विचिन्तयेत्॥ ये चिन्तयन्त्यमृत वाहिभि रंशु जालैराप्लाव्यमान भुवनाममृतेश्वरीं त्वाम्। ते लंघयन्ति ननुमातर लंघनीयां ब्रह्मादिभिः सुर वरै रपि काल कक्षां॥

एतदमृतेश्वरीध्यानं न केवलं विष ज्वर हरम्। अपितु ब्रह्मादीनामपि आयुः कक्षा मुल्लंघ्य वर्तमानस्य परमायुषः कालस्य भोक्तारं बहुकाल जीवित धातम् करोति।। ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृत वर्षीणि अमृतमाकर्षय त्रैलोक्यं मे वशं मानय स्वाहा।। स्वगुरुं ब्रह्मरन्ध्रेध्यात्वा ऐं वद वद वाग्वादिनी ममजिह्वाग्रे स्थिरीभव सर्व सत्व वशंकरिस्वाहेति कुण्डलिनी मुखे जुहूयादिति अमृतेश्वरी स्मरण विधिः॥

अमृतेश्वरी चैतन्य शक्ति स्मरण विधि बतलाते हैं।

चिद् विमर्श के द्वारा मन को आनन्दित करने वाली स्वांस के साथ मूलाधार चक्र से लगाकर ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त जाती हुई ऊर्ध्वगामिनी शक्ति बिजली की लता के समान आकार वाली सिन्दूरिया वर्ण से अन्दर शरीर को प्रकाशित

करती हुई प्रज्वलित सर्वकारणभूत पराशक्ति ज्ञान रूपा का चिन्तवन करे। जो इस अमृत वाहिनी शक्ति का चिन्तवन करते हैं वे मृत्यु को भी जीत लेते हैं।

इस प्रकार अमृतेश्वरी चैतन्य शक्ति परा संविद्रूपाचिदग्नी के प्रकाश का चिन्तवन करके वाग्वादिनी मंत्र से संविद पान कराये, ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करके कुण्डलिनी को समर्पण कर दे ।

।। इति अमृतेश्वरी स्मरण विधि पूर्णम् ।।

अथ उपस्थान विधि

ॐ उत्तमेशिखरे जातेभूम्यां पर्वतमूर्द्धनि। ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनु ज्ञाता गच्छ देवियथा सुखम्। वामे गुंगुरुभ्यो नमः। दक्षे गंगणपतये नमः। मध्ये इष्टदेवतायै नमः। दुं दुर्गायै नमः। क्षं क्षेत्रपालाय नमः। सं सरस्वत्यै नमः। पं परमात्मने नमः इतिप्रणम्य। इत्युपस्थानम्॥

उपरोक्त मंत्र से इष्ट देवता का उपस्थान करे फिर बाँई ओर गुरु को और दाहिनी ओर गणेशजी को नमस्कार करे तथा मध्य में इष्ट देवता को, दुर्गा को, क्षेत्रपाल को, भैरवनाथ को, सरस्वती को, परमात्मा को प्रणाम करके उपस्थान को पूर्ण करे।

अथभूत शुद्धिः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन श्वास समीरं पिंगलया नाड्या अंतराकृष्य ३ मूल शृंगारकात् सुषुम्णा पथेज्ञ जीव शिवं परमशिव पदे योजयामि स्वाहा इति मन्त्रेण मूलाधार स्थितं जीवात्मानं सुषुम्णा वर्त्मना ब्रह्मरंध्रं नीत्वा परमशिवेनैकीभूतं भावयित्वा इडया वायुं रेचयेत्॥

एवमेवोत्तरत्र शोषणादिस्वपि प्रातिस्विकं पूरक रेचने । ३ यं संकोच शरीरं शोषय शोषय स्वाहेति निजशरीरं शोषितं विभाव्य ३ रं संकोच शरीरं दह दह पच पच स्वाहेति प्लुष्टं भस्मी कृतं च विभाव्य, ३ वं परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहेति तद्भस्म सहस्रारेन्दु मण्डल विगलदमृतरसेन सिक्तं च विभाव्य, ३ लंशाम्भव शरीरं उत्पादयोत्पादय स्वाहेति तद्भस्मनो दिव्यशरीरं मुत्पन्नं च विभाव्य, ३ हंसः सोऽहं अवतरावतर शिव पदान् जीवं सुषुम्णा पथेन प्रविशं मूलश्रृंगाटकं मुल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहेति परमशिवे नैकी कृतं जीवं पुनः सुषुम्णा वर्त्मना मूलाधरे स्थापितं विचिन्तयेत॥ इतिभूतशुद्धिः॥

उपरोक्त अक्षरों से मंत्र व मूलमंत्र से श्वॉस बांऐ नथुने से प्राणायाम की तरह भीतर की ओर खींचे फिर मूल मंत्र से सुषुम्णा मार्ग द्वारा जीव रूप शिव को परम शिव के स्थान पर ले जाये और उक्त मंत्र से नियोजित करे। मूलाधार स्थित जीवात्मा सुषुम्णा के गर्त से ब्रह्मरन्ध्र में जाकर परमशिव में एकीभाव का ध्यान करे।

इडा नाड़ी के द्वार से वायु रेचन करके पूरक रेचन करे "यं" इस मंत्र से संकोच शरीर को शोषित मानकर "रं" इस मंत्र से सूक्ष्म शरीर को दहन करके भस्मी भूत की भावना करे। "वं" इस मंत्र से सहस्रार चक्र ब्रह्मरन्ध्र में चन्द्रमण्डल से गिरते हुए अमृत से भीगा हुआ माने। "लं" इस मंत्र से उस भस्म से दिव्य शरीर उत्पन्न करे, "हंसः" इस मंत्र से परम शिव के साथ सामरस्य भाव में पढ़े हुए जीवात्मा को पुनः सुषुम्णा के मार्ग में मूलाधार में चिन्तवन करके स्थापित कर दे।

॥ इतिभूत शुद्धिः विधिः ॥

अथ आत्म प्राण प्रतिष्ठिा विधि

अथ आत्म प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठेया॥ हृदये दक्ष

करतलं निधाय॥ ३ आं सोहम् इतित्रिः पठेत्॥ इति प्राण प्रतिष्ठा॥

आत्मा के स्थान पर प्राण प्रतिष्ठा करे हृदय पर अपना दाहिना हाथ रखकर ३ बार "आं सोहम्" इस मंत्र को पढ़े इससे प्राण प्रतिष्ठा होती है।

अथ प्रत्यूहोत्सारणम्

ततः विंशतिधा षोडशधा, दशधा सप्तधा, त्रिधा वा प्राणानायम्य, ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूताभुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्न कर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ इति मंत्रं सकृदुच्चार्य॥

युगद्वामपार्ष्णि भूतलाघातत्रय करास्फोटत्रय क्रूरदृष्ट्यावलोकनपूर्वतालत्रयेणभौमनन्तरिक्ष दिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्॥ तालत्रयं नाम दक्ष तर्जनी मध्यमाभ्यां अधोमुखाभ्यां वामकर तले सशब्दं उपर्युपरित्रिरभिघातयेत्॥

२० बार १६ बार १० बार, और ७ बार ३ बार प्राणायम करे फिर "अपसर्पन्तु ये भूता" मन्त्र से एक बार उच्चारण करके बाँया पैर भूमि पर तीन बार पटके, बाँयी हथेली पर दाहिने हाथ की अँगुलियों से तीन बार ताली बजावे, और क्रूर दृष्टि से देखे, तीन बार ताली बजाकर भूमि आकाश और स्वर्ग के विघ्नों को दूर करे। "तालत्रय" नाम दाहिनी तर्जनी मध्यमा अँगुलियों को बाँये हाथ की हथेली पर मारने से जो शब्द निकले उसे कहते हैं।

इति प्रत्यूहोत्सारण विधि सम्पूर्णम्

अथ न्यास जाल विधिः

अथ ॐ नमः इत्यंगुष्ठमन्त्रमुच्चारयन् अंकुशेन शिखांबध्द्वाश्रीपीताम्बरा वगलामुखी देवीरूपं भावयन्॥ आत्मानं स्वदेहे न्यास जालात्मकं वज्र कवचं विदधीत॥

"नमः" इस अंगुष्ठ मन्त्र से अंकुश मुद्रा द्वारा शिखा में ग्रन्थि लगावे और पीताम्बरा श्री वगलामुखी देवी की भावना करे तथा अपनी आत्मा में देवी रूप का भाव लावे और अपने शरीर पर न्यास जालात्मक वज्र कवच धारण करे।

अथ मातृका न्यास

तत्रदौमातृकान्यास ॥ तद्यथा॥

अस्य श्री मातृका न्यास महामन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषि॥ गायत्री छन्दः॥ श्रीमातृका सरस्वती देवता॥ हल्भ्यो बीजं॥ स्वराः शक्तिः॥ विन्दवः कीलकं॥ मम श्री पीताम्बरा वगलामुखी महाविद्यांगत्वेन न्यासे विनियोगः। ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्री मातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदये। हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः। विन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः नाभौ मम श्री पीताम्बरा वगलामुखी महाविद्यांगत्वेन सर्वांगे।

न्यासे विनियोगाय नमः कर सम्पुटे॥ सर्व मातृकया त्रिर्व्यापकं कृत्वा सर्वांगे अंजलिना व्यापयेत्॥

इति ऋष्यादिकम्

अथ षडंग न्यासः

ॐ ह्लीं अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां शिरसे स्वाहा॥ ॐ ह्लीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां शिखायै वषट्॥ ॐ ह्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां कवचाय हुम्। ॐ ह्लीं पं फं बं भं मं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नेत्र त्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्लीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः॥

अथ पंचाशन्मातृकाध्यानम्

यथा-

ॐ पंचाशद्वर्ण भेदैर्विहित वदन दोँ पादहृत्कुंक्षि वक्षो देशाँ भास्वत्कपर्दां कलित शशिकला मिन्दु कुन्दाव दाताम्। अक्षस्रक् कुम्भचिन्तालिखित वर करां त्रीक्षणां अब्जसंस्थां अच्छा कल्पयाम उच्च स्तन जघन भरां भारतीं तां नमामि। दक्षोर्ध्व करमारभ्य दक्षात्तः कर प्रर्यन्तं प्रादक्षिण्येन आयुधस्थितिः। चिन्ता लिखितं नाम पुस्तकम्। इति ध्यात्वा मनसा पुष्पांजलिं दत्वा वगलामुखी बीजेन मातृकां न्यसेत्॥

हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़े फिर ब्रह्मादि ऋषि न्यास करे। पश्चात् अं क्षं पर्यंत मातृका अक्षरों को बोलकर अंजलि बाँधकर अपने शरीर पर व्यापक न्यास करे। इसके बाद करादि हृदयादि षडंग न्यास करे। तत्पश्चात् मातृका सरस्वती का ध्यान करे अंजली पूर्वक आँख बन्द करके ध्यान करना चाहिये। मानसिक पुष्पांजलि देकर वगलामुखी के बीज मन्त्र से मातृका अक्षरों की अपने शरीर पर यथास्थान स्थापना करे। जो इस प्रकार है।

ॐ ह्लीं अं नमः शिरसि। ॐ ह्लीं आं नमः मुख वृत्ते। ॐ ह्लीं इं नमः दक्षनेत्रे। ॐ ह्लीं ईं नमः वामनेत्रे। ॐ ह्लीं उं नमः दक्षकर्णे। ॐ ह्लीं ऊं नमः वामकर्णे। ॐ ह्लीं ऋं नमः दक्षनासापुटे। ॐ ह्लीं ॠं नमः वामनासापुटे। ॐ ह्लीं लृं नमः दक्षगण्डे। ॐ ह्लीं लॄं नमः वामगण्डे। ॐ ह्लीं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्लीं ऐं नमः अधरोष्ठे। ॐ ह्लीं ॐ नमः ऊर्ध्व दंतपंक्तौ। ॐ ह्लीं ॐ नमः अधोदंतपंक्तौ। ॐ ह्लीं अं नमः शिरसि। मुखानतः जिह्वाग्रे। ॐ ह्लीं अः नमः मुखान्ते कण्ठे। ॐ

ह्लीं कं नः दक्षबाहुमूले। ॐ ह्लीं खं नमः तन्मध्यसंधौ। दक्षकूर्परे।। ॐ ह्लीं गं नमः तन्मणिवंधे। ॐ ह्लीं घं नमः तदंगुलीमूले। ॐ ह्लीं ङं नमः तदंगुल्यग्रे। ॐ ह्लीं चं नमः वामबाहुमूले। ॐ ह्लीं छं नमः तन्मध्य संधौ। ॐ ह्लीं जं नमः तन्मणि बंधे। ॐ ह्लीं झं तदंगुलीमूले। ॐ ह्ली ञं नमः तदंगुल्यग्रे। ॐ ह्लीं टं नमः दक्षोरुमूले। ॐ ह्लीं ठं नमः तज्जानुनि। ॐ ह्लीं डं नमः तज्जंघापादसंधौ तद्गुल्फे। ॐ ह्लीं ढं नमः तदंगुलीमूले। ॐ ह्लीं णं नमः तदंगुल्यग्रे। ॐ ह्लीं तं नमः वामोरुमूले। ॐ ह्लीं थं नमः तज्जानुनि। ॐ ह्लीं दं नमः तज्जंघापादसंधौ तद्गुल्फे। ॐह्लीं धं नमः तदगुलिमूले। ॐ ह्लीं नं नमः तदंगुल्यग्रे। ॐ ह्लीं पं नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ह्लीं फं नमः वाम पार्श्वे। ॐ ह्लीं बं नमः पृष्ठे। ॐ ह्लीं भं नमः नामौ। ॐ ह्लीं मं नमः जठरे। ॐ ह्लीं यं नमः हृदि। ॐ ह्लीं रं नमः दक्षकक्षे दसस्कंधे। ॐ ह्लीं नमः गलपृष्ठे ककुदि।ॐ ह्लीं वं नमःवाम कक्षेवामस्कंधे। ॐ ह्लीं शं नमः हृदयादि दक्षकरांगुल्यांन्तं। ॐ ह्लीं षं नमः हृदयादि वाम करांगुल्यांतं। ॐ ह्लीं सं नमः हृदयादिदक्षपादांगुल्यंतं। ॐ ह्ली हं नमः हृदयादिवामपादांगुल्यंतं । ॐ ह्लीं कं नमः हृदयादिगुह्यान्ते। ॐ ह्लीं क्षं नमः हृदयादिमूर्धान्तं। इति मातृका न्यासः।।

इस प्रकार अपने शरीर पर बताये गए नाम वाले स्थानों पर अंगूठा अनामिका अंगुली के योग से स्पर्श करे।

अथ करशुद्धि न्यासः

ॐ ह्लीं अं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं आं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं आं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्लीं सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति॥

अथ आत्मरक्षा न्यासः

ॐ ह्लीं वगलामुखी आत्मानं रक्षरक्ष हृदये अंजलिं दद्यात् ॥ इति॥

अथ तत्व न्यासः

मूलान्ते आत्म तत्व व्यापिनी श्री वगलामुखी मूलाधारे। मूलान्ते विद्या तत्व व्यापिनी श्री वगलामुखी शिरसि ॥ मूलमंत्रांते शिव तत्व व्यापिनी वगलामुखी सर्वांगे॥

अथ वर्ण न्यासः

ॐ ह्लीं नमः मूर्ध्नि। वं नमः भाले। गं नमः दक्षनेत्रे। लां नमः वामनेत्रे। मुं नमः दक्षगण्डे। खीं नमः वामगण्डे। सं नमः दक्षनासायां। वं नमः वामनासायाम्। दुं नमः ऊर्ध्वोष्ठे । ष्टां नमः अधरोष्ठे। नां नमः मुखवृत्ते। बां नमः दक्षांसे। च नमः वामांसे। मुं नमः दक्ष कूर्परे। खं नमः दामकूर्परे। स्तं नमः दक्षमणिबंधे। भं नमः वाममणिबंधे। यं नमः दक्षांगुलिर्मूले। जिं नमः वामागुलिमूले । ह्वां नमः दक्षोरु। कीं नमः वामोरु। लं नमः दक्षजान्वो। यं नमः वामजान्वो। बुं नमः दक्ष गुल्फे। द्विं नमः

वामगुल्फे। नां नमः दक्ष पादांगुलिमूले। शं नमः वामपादांगुलिमूले। यं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। ह्लीं नमः वामपादांगुल्यग्रे। ओं नमः दक्षपार्श्वे। स्वां नमः वामपार्श्वे। हां नमः हृदये। क्रमेश मन्त्रवर्णस्तु न्यस्यध्याय येद्यथाविधि॥ ततोध्यानम॥ तद्यथा॥

मध्येप्रलयाब्धि मणिमण्डप रत्नवेदी सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम्। पीताम्बराभूषण माल्य विभूषितांगी देवीं स्म्रामिधृत मुग्दर वैरि जिह्वाम्। जिह्वाग्र मादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।

एवं ध्यात्वा मानसैरुपचारैःसम्पूज्य बहिः पूजा मारभेत्।

इस प्रकार ध्यान करके मानसिक उपचारों से पूजकर ब्राह्म पूजन आरम्भ करे।

एवंध्यात्वा जपेल्लक्ष मयुतं चम्पकोद्भवैः कुसुमै र्जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम्॥ चन्दनागुरु चन्द्राद्यैः पूजार्थ यन्त्रमालिखेत् ॥ त्रिकोण षट् दलाष्टास्त्र षोडशारधरा पुरम्॥ मध्ये सम्पूजये देवीकोणे-सत्वादिकान् गुणान्॥ षट्कोणेषु षडंगानिमातृ भैरव संयुताः॥ सम्पूज्याष्ट दले पद्मे षोडशारे यजेदिमाः॥ मंगला स्तम्भिनी चैव जम्भिणी मोहिनी तथा। वश्या चला वलाका च भूधरा कल्मषा भिधा। धात्री च कलना काल कर्षिणी भ्रामिकापि च ॥ मन्दगमना च भोगस्था भाविका षोडशीस्मृता॥ भू गृहस्य चतुर्दिक्षु पूर्वादिषुयजेत्क्रमात्। गणेशं बटुकं चापि योगिनीं क्षेत्रपालकम्। इन्द्रादींश्च ततो बाह्ये निजायुध समन्वितान्॥

अथ श्री पीताम्बरा वगलामुखी महाविद्या यन्त्र पूजा प्रारम्भः

अथ यन्त्रोद्धार ॥ त्र्यस्रं षडस्त्रं वृत्तमष्टदलं पद्मं भू पुरान्वितम् ॥ १॥

अथ मन्त्रोद्धारः॥ प्रणवंस्थिर मायां च ततश्च वगलामुखि तदन्ते सर्व दुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम्॥ स्तम्भयेति ततोजिह्वां कीलयेतिपदद्वयम् ॥ बुद्धिं नाशय पश्चात् स्थिरमायां समालिखेत्। लिखेच्च पुनरोंकारं स्वाहेति पदभन्ततः॥ षट् त्रिंशदक्षरी विद्या सर्व सम्पत्करीमता॥ ॐ ह्लीं वगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥ अथ पूजा विधिः
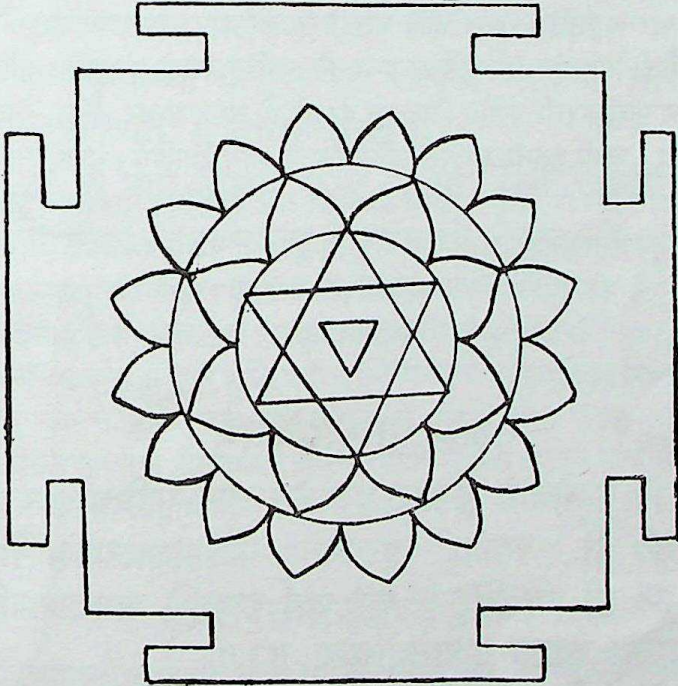
श्री वगलामुखी पूजा यन्त्रम्

चम्पकोद्भवैः चम्पकपुष्पैः अयुत संख्या परिमितं होमं लक्षसंख्याकं मन्त्रजपः पूर्वोक्तैपीठे मूर्तौं यन्त्रे वा इमां श्री पीताम्बरां वगलामुखीं महाविद्यां देवीं प्रतिमां यन्त्र वा साँगावरणपूर्वकं यजेत् ॥ चन्दनं अगुरुः चन्द्रं कर्पूर केशरं हरिद्रांएभिः वस्तुभिश्च पूजनार्थे यन्त्रं लिखेत् । आदौत्रिकोणं ततः षट्दलानि। ततो अष्टौ कौणानि। ततः षौडशदलानि ततो भूपुरम॥ मध्ये त्रिकोणं त्रिकोणमध्ये ह्लीं अथवा मन्त्रं लिखित्वा भगवतीं पीताम्बरां वगलामुखीं पूजयेत्॥अथवा प्रतिमां धृत्वा पूजयेत्॥

वगलामुखी की पूजा में चम्पा के पुष्पों की दस हजार आहूतियों से हवन करना चाहिये। एक लाख बार मन्त्र का जाप करना चाहिए और पीठ चौकी सिंहासन पर मूर्ति या यन्त्र को स्थापित करके अंगशक्ति सहित आवरण पूजा करनी चाहिए। यन्त्र के बनाने को अगर चन्दर, कपूर, केशर हल्दी व लेखनी इतनी वस्तुओं को प्रयोग में लाना चाहिये। यन्त्र लिखते समय पहले त्रिकोण फिर षट्कोण और फिर अष्टकोण फिर षोडशदल इसके बाद भूपुर बनावे त्रिकोण के मध्य में ह्लीं बीज या पूरा मन्त्र लिखें। अथवा वगलामुखी की मूर्ति या चित्र की स्थापना करे और उसी की पूजा करनी चाहिए। पूजा के लिए पात्रों की स्थापना करनी चाहिए इसलिये सर्व प्रथम पात्रासादन लिखते हैं।

अथ पात्रसादनम्

ॐ वज्रोदके हूँ फट् इत्यनेन जलं गृहीत्वा ॥१॥

ॐ ह्रीं स्वाहा इत्यनेन पादौप्रक्षाल्य ॥२॥

ॐ ह्रीं स्व विशुद्ध धर्म सर्व पापानि शमयाशेषविकल्पानय स्वाहा इत्यनेनाचम्य ॥३॥

ॐ मणिधरि वज्रिणि शिखरिणिसर्व वंशकरि हूँ

फट् इति शिखा बंधन कृत्वा ॥४॥

ॐ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा इति भूमिं संशोध्य॥५॥

ॐ पवित्र वज्रं मे हूँ स्वाहा इतिभूमीं अभिमन्त्र्य ॥६॥

ॐ आसुरेश्वरि वज्ररेखे हूँ स्वाहा इत्येन भूमिं स्पृष्ट्वा ॥७॥

ॐ आधारशक्ति कमलासनाय नमः इति संपूज्य॥ ८॥

ततः सर्व विघ्नानुत्सार्य ॐ अपसंर्पतु तेभूता ये भूता भूमि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ ६॥

इत्यनेनाक्षत प्रक्षेपेण सर्व विघ्नानुत्सारयेत् ॥

गन्धपुष्पाभ्यां करौसम्मर्द्य तत्पुष्प मैशान्यां नाराच मुद्रया प्रक्षियेत् ॥ तत्रमन्त्रास्तु ॥

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्तिहिंसकाः। मृत्युरोगभया क्रोधा पतन्तु रिपुमस्तके हूँ फट्॥१०॥

प्रथम मन्त्र से जल ग्रहण करे। द्वितीय मन्त्र से पैर प्रक्षालन करे। तीसरे मन्त्र से आचमन करे। चतुर्थ मन्त्र से शिखा बन्धन या शिखा पूजन करे। पंचम मन्त्र से भूमि शुद्धि करे । छटे मन्त्र से भूमि अभिमन्त्रण करे। सप्तम् मन्त्र से भूमि स्पर्श, अष्टम मन्त्र से आसन पूजे। नवम् मन्त्र से विघ्नोत्सारण करके पीले चावल चारों दिशाओं में फेंके। दसम् मन्त्र से गंध पुष्प, चन्दन दोनों हाथों में रगड़ कर उस पुष्प को नाराच मुद्रा से ईशान दिशा में शत्रु नाश के लिए फेंक दे।

अथ सामान्यार्घ्य विधि

आधार शक्तये नमः॥ इत्यनेनाधार शक्तिमभिमन्त्र्य तत्र चतुरस्त्रंलिखित्वा तदुपरि ॐ ह्ली सामान्यार्घ्य-

स्थापयामि नमः इति सामान्यार्घ्यस्थापनं कृत्वा तस्मिन् प्रणवेन वगला बीजेन वा जलमापूर्य॥

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति॥
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इति सूर्य मण्डलादंकुश मुद्रया तीर्थानि तत्राव ह्य पुष्पाक्षतैः।

ॐ गंगादि सकल तीर्थेभ्यो नमः॥ इतितत्र सम्पूज्य॥

ॐ हृदयादि षडंग देवताभ्यो नमः॥ इति गंध पुष्पाक्षते पुष्पैः सूर्य मंडलं सम्पूज्य॥

ॐ आं अर्क मण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः॥ इति गंध पुष्पैः सम्पूज्य॥

ॐ वह्नि मण्डलाय दश कलात्मने नमः इति गंध पुष्पै सम्पूज्य॥

ॐ उं सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः। इति चन्द्रमण्डलं सम्पूज्य॥

वं इति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य हूँ इति कवचेनाव गुण्ठ्य फट् इत्यस्त्रेण संरक्ष्य तत्र प्रणवं वगलाबीजं वा दशवारं जपेत् ॥ इति सामान्यार्घ्य स्थापनम॥

भूमि का पूजन करके अपने आगे व देवता के आगे अपने बाँये चतुरक्ष मण्डल बनावे उसके ऊपर सामान्य अर्घ्य की स्थापना करे। प्रणव या बगला बीज ह्लीं को बोलकर उसमें जल करे सूर्य मण्डल से अंकुश मुद्रा दिखाकर भावना से तीर्थो का आवाहन उस जल में कर दे। गंधपुष्प, अक्षत से तीर्थ पूजन करदे। पीले पुष्प,अक्षत,हल्दी से सूर्य,अग्नि,चन्द्र तीनों मण्डलों की आधार पात्र व द्रव्य पर पूजा करदे धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करदे, कवचबीज

से अवगुण्ठन करदे। अस्त्रमन्त्र से संरक्षण करदे और उस पात्र के ऊपर हाथ ढक करके दस बार वगला बीज का या प्रणव का जाप करे। यह सामान्य अर्घ्यपात्र स्थापन विधि पूर्ण हुई।।

अथ विशेषार्घ्य स्थापन विधिः

सामान्यार्घ्यस्थ जलेनात्मानं पूजोपकरणानि चाभिषिंच्य ततो विशेषार्घ्य स्थापनं कुर्यात्।। तद्यथा

अष्टांगुलं चतुरस्रं विधाय--

ॐ आसु रेखे वज्ररेखे हूँ स्वाहा इतिमण्डलं विरच्य।। लं वं इति भुवं संमृज्य तत्र त्रिकोण वृत्त चतुरस्रात्मकं मण्डलं विधाय तत्र आधार शक्तये नमः कूर्माय नमः सम्पूज्य तत्राधारम् ''ह्रीं फट्'' इति मंत्रेण संस्थाप्य।

ॐ दश कलात्मने वन्हि मण्डलाय नमः तन्मण्डलमभ्यर्च्य तत्र विशेषार्घ्य पात्रं हूँ फट् इत्यनेन प्रक्षालितं संस्थाप्य ॐ द्वादश कलात्मने आ अर्क मंडलाय नमः इति पात्रं सम्पूज्य तस्मिन् पात्रे जलं दुग्धं द्रव्यमापूय।।

ॐ षोडउ कलात्मने उं सोम मण्डलाय नमः।। इत्यनेन द्रव्यं सम्पूज्य 'वं' इत्यनेन धेनु मुद्रया अमृती कृत्य 'हूँ' इत्यवगुण्ठय फट् इति संरक्ष्य दशधा प्रणवं वगलाबीजं जप्त्वा धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च दर्शयित्वा मत्स्य मुद्रया ऽऽच्छाद्य दश वारं मूल विद्या वगलामुखी मन्त्रं जपेत्।।

मूलान्ते आत्म तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री

पादुकां पूजयामि इति मूलाधारे॥

मूलान्ते विद्या तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री पादुकां पूजयामि इति शिरसि॥

मूलान्ते शिव तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्रीपादुकां पूजयामिति शिरसि॥

मूलान्ते सर्व तत्व व्यापिनी वगला मुखी श्रीपादुका पूजयामि इति सर्वांगे॥

इत्यनेन विन्दुत्रय मुखे क्षिप्त्वा पूजनमारभेत् ॥ इति विशेषार्घ्य स्थापनम्॥

॥अथ पूजा प्रारम्भ॥

ॐ महापद्म वनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे। सर्वभूत हिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥ मूलं श्री पीताम्बरा वगलामुखी देवि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण इह सन्निधेहि इह सन्निरुध्यस्व इह संमुखी भव इति आवाहनी संनिरोधिनी सम्मुखी मुद्रां च प्रदर्शय मूल मन्त्रेण पुष्पांजलिं समर्पयामि॥ पुष्पा-क्षतैः इदमासनं इदं पाद्यजलं समर्पयामि॥

श्री पीताम्बरायै वगलामुखी देव्यै नमः इदमाचम-नीयं समर्पयामि। मूलं श्री पीताम्बरायै वगलामुखी देव्यै नमः एषमधुपर्कं समर्पयामि॥ मूलं श्री पीताम्बरायै वगलामुखी देव्यै नमः इदं स्नानीयं समर्पयामि॥इति पीताम्बरां वगलामुखीं देवीं स्नापयेत् ॥ एवं वसनभूषणे दद्यात्॥

मूलं श्री पीताम्बरायै वगलामुखी देव्यै नमः॥ इमानि पुष्पाणि समर्पयामि॥

॥अथावरण पूजा॥

पूर्वे गणेशं पूजयेत् ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छ इहतिष्ठ गं गणेश वज्र पुष्पं प्रतीक्ष्य फट् स्वाहा॥ इत्यनेन पुष्पं दद्यात्॥

एवं वटुकं दक्षिणे पूजयेत्, एवं क्षेत्रपालं पश्चिमे पूजयेत्। उत्तरे योगिनीं पूजयेत्॥ ततोधूपम्॥

मूलं सांगायै सायुधायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री पीताम्बरायै वगलामुखी दैव्यै नमः धूपमाघ्रापयामि॥ इतिधूपं दत्वा। दीपं प्रज्वालयेत् संपूजयेत॥ श्री महाविद्या पीताम्बरा वगलामुखी देव्यै नमः दीपं दर्शयामि॥

ततो नैवेद्यम् स्वर्णादिधातु पात्रे नैवेद्यं परिवेष्य वायुवीजं यं इति द्वादश वारं जपन् तज्जात मरुतेन नैवेद्यं संशोध्य दक्षिण करतले वाम करतलं सन्न्यस्य तदुत्थेनाग्निना अग्नि बीजं रं द्वादश वारं जपन् अखिलं नैवेद्यदोषं सन्दह्य वामकर पृष्ठे दक्षिण हस्तं धृत्वा तत्र प्रदर्श्य । वं बीजं द्वादशवारं जपन् तदुत्थायामृत धारया नैवेद्यमभिषिंच्य पुनः मूलेनाभिषिंच्य तत्स्पृष्ट्वा अष्टवारं मूल मंत्रं जपेत॥

धेनुमुद्रां प्रदर्श्य गंध पुष्पैस्तदर्चयेत्॥ततो नैवेद्य भाजनं वामांगुष्ठेन संस्पृश्य दक्षिण हस्तेन जलं धृत्वा

मूलं पठन्। इदं नैवेद्यं सांगायै सपरिवारायै सायुधायै स वाहनायै सावरणायै श्री पीताम्बरायै वगलामुखी देव्यै नमः। इति नैवेद्यमृत्सृज्य अंगुष्ठानामिकाभ्यां नैवेद्य मुद्रां प्रदर्श्य सपुष्प कराभ्यां त्रि प्रोद्धरन् ग्रास मुद्रां वाम हस्तेन प्रदर्शयेत्॥

ततो प्राणादि मुद्रान् प्रदर्शयेत् ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा॥ इति पठन् कनिष्ठानामिकांगुष्ठै प्राण मुद्रां प्रदर्शयेत॥

ॐ अपानाय स्वाहा। इति पठन् तर्जनी मध्यमां गुष्ठैः अपान मुद्रां प्रदर्शयेत॥

ॐ उदानाय स्वाहा ॥ इति पठन् अनामामध्यमां-गुष्ठैरुदान मुद्रान्दर्शयेत् ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा॥ इति पठन् तर्जन्यनामा मध्यमांगुष्ठै र्व्यान मुद्रां प्रदर्शयेत॥

ॐ समानाय स्वाहा। इतिपठन् सर्वांगुलिभिः समान मुद्रां प्रदर्शयेत॥ततो देवीं वगलामुखी सन्तुष्टां विभाव्य पानीयं दद्यात्॥

मूल मंत्रं पठित्वा श्री पीताम्बरा वगलामुखी देव्यै नमः आचमनार्थे पानीयं समर्पयामि। इदमाचमनीयं पीताम्बरायै नमः इदं ताम्बूलं च एष पुष्पांजलिः॥

॥ इति विशेषार्घ्यविधि पूजाः॥

विशेषार्घ्य स्थापन विधि बतलाते हैं सामान्य अर्घ्य जो स्थापित किया है इसके दाहिने तरफ विशेषार्घ्य की स्थापना करनी चाहिये। सामान्य अर्घ्य के जल से सभी पूजा सामग्री व अपनी आत्मा का प्रोक्षण कर लेना चाहिये।

आठ अंगुल की परिधि में नीचे लिखे मन्त्र से मण्डल बनाना चाहिये यह मंडल चतुरस्र याने चौकोर होगा। भूमिमार्जन करना चाहिये। उस पर त्रिकोण वृत्त चौकोर मण्डल बनाकर आधार शक्ति कूर्म की पूजा करे गंधाक्षतपुष्प चढ़ावे आधार पात्र की स्थापना कर दे उस पर गंधपुष्प अक्षत से अग्नि मंडल व उसकी दश कलाओं की पूजा करे । आधार पात्र पर विशेषार्घ्य पात्र की स्थापना इस मन्त्र से प्रक्षालन कर के करे स्थापित विशेषार्घ्य पात्र पर सूर्य मण्डल व उसकी १२ द्वादश कलाओं की पूर्व गंध पुष्प अक्षत चढ़ाये विशेषार्घ्य पात्र में जल या दूध व मीठाद्रव्य शर्बत आदि भर दे अमृत बीज से धेनुमुद्राप्रदर्शित करके अमृतीकरण करदे अवगुण्ठन करे संरक्षण करे। दशवार प्रणव व वगलामुखी का मंत्र बीज जपकर धेनु योनि मुद्रा प्रदर्शित करे। मत्स्यमुद्रा से पात्र को ढके दस बार मूल विद्या वगलामुखी का मन्त्र जपे तीन बार ३ पीताम्बरा वगलामुखी का पूजन करें। यह विशेषार्घ स्थापना पूर्ण हुई।

अथ श्री वगलामुखी पीताम्बरा देवी की पूजा प्रारम्भ करते हैं। आवाहन मंत्र से आवाहन करे संनिरोधनी से संनिरोधन सम्मुखीकरण मुद्रा से सम्मुखीकरण करे मूल मंत्र से पुष्पांजलि प्रदान करे। पुष्प, अक्षत हाथ में लेकर आसन का भाव ध्यान में करके चढ़ावे। पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभूषण, पुष्पादि चढ़ाकर पूरब में गणेशजी का नाम लेकर दक्षिण में बटुकभैरव और पश्चिम में क्षेत्रपाल शिव का उत्तर में ६४ योग्नियों का नाम मात्र से गंधाक्षत पुष्प चढ़ाकर पूजे। धूप दीप प्रदान करे। दाहिनी हथेली बाई हस्त पृष्ठ पर रखकर रं बीज १२ द्वादश बार जपकर नैवेद्य के दोषों का दहन कर दे वं बीज १२ बारह बार पढ़कर अमृत धार से नैवेद्य को अभिषिक्त करे। फिर मूलमन्त्र से अभिषिक्त करे नैवेद्य को स्पर्श कर आठ बार मूल मन्त्र जपे धेनुमुद्रा प्रदर्शित करे। गंध पुष्प से पूजन करे। नैवेद्य पात्र वाम अंगूठे से स्पर्श करे। दाहिने हाथ से जल लेकर मूल पढ़कर नैवेद्य समर्पण करे नैवेद्य मुद्रा प्राणादि प्राण अपान उदान ध्यान समान प्रदर्शन करे। तत्पश्चात् वगलामुखी देवी को सन्तुष्ट करके पानी प्रदान करे आचमन कराये। पान सुपाड़ी चढ़ाये पुष्पांजलि प्रदान करे। यह पूजा व विशेषार्घ्य विधि पूर्ण हुई।

॥अथ आवरण पूजा प्रारम्भ॥

तर्जन्यंगुष्ठ योगेन सांगावरणां वगलामुखीं देवीं पीताक्षतैः पुष्पैश्च पूजयेत्।अनामिकांगुष्ठयोगेन तर्पयेत्॥

त्रिकोणपूजनम् ॥ त्रिकोणे, सत्वाय नमः ॥ रजसे नमः। तमसे नमः॥ १॥

षट्कोण पूजा। हृदयाय नमः। शिरसे नमः। शिखायै नमः। कवचाय नमः। नेत्र त्रयाय नमः। अस्त्राय नमः। पूर्वे ॐ सुभगायै नमः। अग्नि कोणे ॐ भगसर्पिण्यै नमः। ईशाने ॐ भगवाहायै नमः। पश्चिमे ॐ भगसिद्धायै नमः। निर्ऋतिकोणे ॐ भगपातिन्यै नमः। वायुकोणे ॐ भगमालिन्यै नमः॥ २॥

ततोऽष्टदल पत्रेषु--अष्टदलेऽष्ट भैरव सहिताः मातृः पूजयेत्॥ ॐ असितांग भैरव सहितायै ब्राह्म्यै नमः॥१॥ रुरुभैरव सहितायै माहेश्वर्यै नमः॥२॥ ॐ चण्डभैरव सहितायै कौमार्यै नमः॥३॥ ॐ क्रोध भैरव सहितायै वैष्णव्यै नमः॥ ४॥ उन्मत्त भैरव सहितायै वाराह्यै नमः॥५॥ कपाल भैरव सहितायै इन्द्राण्यै नमः॥६॥ भीषण भैरव सहितायै चामुण्डायै नमः॥७॥ संहार भैरव सहितायै महालक्ष्म्यै नमः॥ ८॥

अष्टदल पद्मे सभैरव मातृः पूजयित्वा षोडशदले पूर्वतः प्रदक्षिणा क्रमेण मंगलादि षोडशमातृः पूजयेत्॥

ॐ मंगलायै नमः॥१॥ॐ स्तम्भिन्यै नमः॥२॥ ॐ जृम्भिण्यै नमः॥३॥ ॐ मोहिन्यै नमः॥४॥

ॐ वेश्यायै नमः॥ ५॥ॐ चलायै नमः॥ ६॥ ॐ वलाकायै नमः ॥ ७॥ ॐ भू धरायै नमः॥८॥ ॐ कल्मषायै नमः॥६॥ ॐ धात्र्यै नमः ॥ १०॥ ॐ कलनायै नमः॥ ११॥ ॐ कालसंकर्षिण्यै नमः॥१२॥ ॐ भ्रामिकायै नमः॥१३॥ ॐ मन्दगमनायै नमः ॥ १४॥ ॐ भोगस्थायै नमः ॥१५॥ ॐ भाविकायै नमः ॥१६॥

पत्राग्रेषु-ॐ जयायै नमः । विजयायै नमः। अजितायै नमः। अपराजितायै नमः। स्तम्भिन्यै नमः। जम्भिन्यै नमः। मोहिन्यै नमः । आकर्षिण्यै नमः।

ततो द्वारेषु-पूर्वे गणेशाय नमः। दक्षिणे वटुकाय नमः। पश्चिमे योगिन्यै नमः। उत्तरक्षेत्र पालाय नमः॥

ततो बाह्ये-सायुधानिन्द्रादिदश दिक्पालान् पूजयेत्॥

पूर्वे--ॐ इन्द्राय नमः। ॐ वज्राय नमः ।

अग्निकोणे--ॐ अग्नये नमः। ॐ शक्तये नमः।

दक्षिणे--ॐ यमाय नमः । ॐ दण्डाय नमः।

निर्ऋतिकोणे--ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ खड्गाय नमः।

पश्चिमे--ॐ वरुणाय नमः। ॐ पाशाय नमः।

वायव्ये--ॐ वायवे नमः। ॐ अंकुशाय नमः।

उत्तरे--ॐ कुबेराय नमः। ॐ गदायै नमः।

ईशानकोणे-ॐ ईशानाय नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः॥

पूर्वेशानयो मध्ये--ॐ अनंताय नमः। ॐ चक्राय नमः॥

निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ पद्माय नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले भक्त्या समर्पयेत्तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्॥ इत्येनेन पुष्पांजलिं समर्प्याऽऽवरण पूजांसमापयेत्। ततो मूलमन्त्रेण धूपादिकंदत्वा यथाशक्ति जपं कुर्यात्।

अथ श्री पीताम्बरा वगलामुखी जपविधिः

पीताम्बर धरोभूत्वा पूर्वाशाभिमुख स्थितः ।
लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्रा ग्रन्थिमालया ।
ब्रह्मचर्यरतो नित्य प्रयतोध्यान तत्परः ।
प्रियंगु कुसुमेनापि पीतपुष्पैश्चज होमयेत् ॥
इत्थं सिद्ध मनुमंत्री स्तम्भये देदी्वतादिकान् ।
पीत वस्त्र स्तदासीनः पीतमाल्यानुलेपनः ॥
पीत पुष्पैर्यजेदेद्देवीं हरिद्रोत्थ स्रजां जपेत् ।
त्रिमध्वक्त तिलै र्होमौ नृणां वश्य करोमतः॥
मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणै ध्रुवम् ।
तैलाभ्यक्तैः निंबपत्रै र्होमोविद्वेष कारकः॥
ताल लोण हरिद्राभिर्द्विषां सं स्तम्भनं भवेत्॥

इत्थं एवं सिद्धमन्त्रः अनुष्ठाता देवतायक्ष रक्ष पिशाच भूतप्रेत डाकिनी शाकिनी मनुष्य पशु पक्षि स्थावर जंगम स्वेदज अण्डज उद्भिज्जादीन् स्तम्भयेत्॥

अनुष्ठाता साधक पीत वस्त्राणि धारयित्वा पीतासनोपविष्टः पीतमाला पीतचंदन हरिद्राचूर्णेन शरीरे

ललाटे वाधृत्वा पीतपुष्पैः वगलामुखी देवीं पूजयेत्। हरिद्राग्रन्थि गुटिका मालया मंत्रं जपेत् ।। पीतवर्णा पीताम्बरां वगलामुखीं ध्यायेत्॥

पुरश्चरणानंतरं लक्षात्मकं जपान्ते अयुत मंत्रांते शर्कराज्यमधुयुक्तै तर्योहोमः करोति स नृणां वश्यं करोति।। शर्करा आज्य मधु युक्तै र्लवणै र्होमे क्रियमाणे सति आकर्षणं भवति ध्रुवम्। तैलार्दे नर्विपत्रै होमे विद्वेषणं कलहं भवति।। हरताल लवण हरिद्रा दिभि शत्रुणां स्तम्भनं इति काम्य प्रयोगः।।

आवरण पूजा करके धूप देकर यथाशक्ति वगलामुखी मन्त्र का जाप करे। वगलामुखी का मंत्र जब सिद्ध हो जाये तो काम्य प्रयोग करे वे इस प्रकार हैं पीला वस्त्र धारण करके ही पूरव दिशा को मुख करके आसन पर बैठे और एक लाख संख्या का मंत्र जाप करे ये मन्त्र हल्दी की माला पर जपा जाता है इस मन्त्र के जपने में नित्य ब्रह्मचर्य व्रत शुद्धि एवं देवी का ध्यान परायण होना आवश्यक है। कांगुनी के पुष्प व कांगुनी व पीले फूलों से इस देवी का हवन होता है। इस प्रकार से मन्त्र को सिद्ध करने वाला साधक एवं उपासक देवता, यक्ष, राक्षस, पिशाच, भूत, प्रेत, डाकिनी शाकिनी, मनुष्य, पशु, पक्षी, स्थावर जंगम, स्वदेज, अण्डज, उदिज, आदि सभी स्तम्भन करने में समर्थ हो जाता है।

अनुष्ठान करने वाले को चाहिये कि वह इसके अनुष्ठांन करने में पीले वस्त्रों को धारण करे पीला ही आसन बैठने को लेय पीली माला ही चंदन हल्दी की व केशर को शरीर पर व मस्तक पर धारण करे पीले पुष्पों से ही वगला मुखी देवी का पूजन करे। पीले चावल, पीले रंग का ही भोग प्रसाद रखे और हल्दी की माला पर पीले वस्त्र वाली पीताम्बरा देवी वगलामुखी का ध्यान पूर्वक मन्त्र जाप करे। एक लाख का पुरश्चरण हो जाने पर या दस हजार मंत्र जप लेने पर ही हवन करे जिसमें शक्कर घी शहद मिलाकर जो हवन करता है वह मनुष्यों को वश में कर लेता

है। शक्कर, घी, शहद व नमक से हवन करने पर निसंदेह आकर्षण होता है। तेल में नींबू की पत्तियां भिगोकर हवन करने से कलह होती है। हरताल नमक हल्दी से हवन करने पर शत्रु का स्तम्भन हो जाता है।

काम्य प्रयोगः

अंगारधूमं राजींश्च माहिषं गुग्गुलं निशि ।
श्मशान पावके हुत्वा नाश्येदचिरादरीन ॥
गरुतो गृध्रकंकानां कटुतैलं विभीतके।
गृहधूमं चिता वन्ही हुत्वा प्रोच्चाटयेद्रिपून्॥
दूर्वा गुडूची लाजान्या मधुर मितयान्वितान्।
जुहोति सोखिलात्रोगाञ्छमयेददृर्शना दपि ॥
पर्वताग्रे महारण्ये नदी संगे शिवालये ।
ब्रह्मचर्य रतो लक्षं जपेदखिल सिद्धये॥

अंगार धूमः राजिः महिषी घृतम् गुग्गुलः धूपः एतान् पदार्थान् श्मशानाग्नौ यो जुहोतिः सः शीघ्रतया रिपून्नाशयति॥

गृध्र कंकानां पक्षान् सार्षप तैलं विभीतकं गृह धूमं च चिताग्नौ यो जुहोति सः शत्रुन् प्राच्चाटयति॥ दूर्वा गडूची लाजान् मधुर त्रितय युतान् यो जुहोति सः सर्वान् रोगान् स्वदर्शने नैव शमयति॥

पर्वतस्य श्रेष्ठभागे शिक्षरे अथवा वृहद्वने नदी संगमे शिव मन्दिरे वा ब्रह्मचारी सः सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्तये लक्षमेकं मंत्रं जपेत् ॥ ब्रह्मचर्य लक्षणं तु मैथुनाद्विपरीतं यत्रतः॥

अंगार का धूँआ, राई, भैंसा, गुग्गुल, रात्री में श्मशान की अग्नि में

हवन करने पर शीघ्र ही शत्रु का नाश हो जाता है। तोता, मोर, गिद्ध, कऊआ का पंख कडुए तेल में भिगोकर घर के अन्दर धूँआ करने से, चितां अग्नि में हवन करने से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। घास हरी गुडूची धान त्रिमधुयुक्त जो हवन करता है वह अपने दर्शन मात्र से सभी रोगों को शान्त कर देता है।

यह वगलामुखी देवी का मंत्र व अनुष्ठान पर्वत की शिखर पर या टीले पर या सघनवन में, नदी के संगम पर, शंकर के मंदिर में, ब्रह्मचर्य व्रत-पूर्वक लक्ष जाप करे तो समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती है।

एक वर्ण गवां दुग्धं शर्करा मधु संयुतम् ।
त्रिशतं मन्त्रितं पीतं हन्याद्विष पराभवम्॥ १॥
श्वेत पालाश काष्ठेन रचिते रम्य पादुके।
अलक्त रंजिते लक्षं मन्ययेन्मनुनाऽमुना ॥२॥
तदारूढ़ पुमान् गच्छेन क्षणेन् शतयोजनम्।
पारदं च शिलातालं पिष्टं मधु समन्वितम्॥ ३॥
मनुना मन्त्रयेल्लक्षं लिपेत्तेनाखिलां तनुम् ।
अदृश्य स्यान्नृणां एष आश्चर्य दृश्यतां इदम्॥ ४ ॥
षट् कोणे विलिखेद्बीजं साध्य नामान्वितंमनोः।
हरिताल निशाचूर्ण उन्मत्तपस संयुतैः॥५॥
शेषाक्षरैः समावीतं धरागेह विराजितम्।
तथैव स्थापित प्राणं पीत सूत्रेण वेष्टयेत्॥६॥
भ्राम्यत्कुलाल चक्रस्थां गृहीत्वा मृत्तिकांतया।
रचयेद् वृषभं रम्यंयन्त्रं तन्मध्यतः क्षिपेत्॥७॥
हरितालेन सलिख्य वृष प्रर्थयेह मर्चयेत्।
स्तम्भयेद्विद्विषां वाचं गतिं कार्य परम्पराम्॥८॥
आदाय वाम हस्तेन प्रेतभूमिस्थ खर्परम्।

अंगारेण चितास्थेन तत्र यंत्रं समालिखेत् ॥९॥
मंत्रित निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद् गतिम्।
प्रेत वस्त्रे लिखेद्यन्त्रमंगारेणैव तत्पुनः ॥१०॥
मण्डूक वदनेन्यस्य पीत वस्त्रेण वेष्टितम्।
पूजितं पीत पुष्पैस्तद्वाचं संस्तम्भये द्विषाम् ॥११॥
यद्भूमौ भविता दिव्यं तत्र यत्रं समालिखेत्।
मार्जितं तद् वृषा पत्रै र्दिव्य स्तम्भन कृद् भवेत् ॥१२॥
इन्द्र वारुणिका मूलं सप्तशोमनु मन्त्रितम्।
क्षिप्त्वा जले दिव्य कृताजल स्तम्भन कारकम् ॥१३॥
किं भूरिणा साधिकेन मन्त्रःसम्यगुपासितः।
शत्रूणां गति बुद्धयाद स्तम्भनं नात्र संशयः ॥१४॥

एक वर्णायाः गोः दुग्धं मधु शर्करा सहितं अग्रेनाधाय तत्स्पर्शं कृत्वा त्रिंशत ३०० वारं मन्त्रं जप्त्वा तत्पयः पानेन शत्रु कृत पराभव नाशः॥

श्वेत पलाश काष्ठेन सुन्दरौ पादुकां रचयित्वा अलक्तेन यां रंजयित्वा अनेनैव मंत्रेण लक्षाभ मंत्रणं कृत्वा तदुपरि स्थितः पुरुष एकेन क्षणेन शत योजन परिमितं मार्गं गमिष्यति॥

एक रंग की गाय का दूध शहद शक्कर सहित आगे रखकर उसके ऊपर हाथ ढककर तीन सौ ३०० वार या तीन माला वगलामुखी मन्त्र का जाप करें फिर उस दूध को पी जावे तो शत्रु कृत पराभव नष्ट हो जाता है।

सफेद ढाक की लकड़ी से सुन्दर खडाऊँ बनवावे फिर अलता से लाल रंग कर अर्थात् वगलामुखी मंत्र से रंग चढ़ाकर १ लाख मंत्र का जाप करे इस प्रकार सिद्ध करने पर उन खडावों को जो भी मनुष्य के पैर में डालेगा

तो वह एक क्षण में सौ योजन की लम्बाई वाले, मार्ग को पार कर लेगा। पारा, शिलाजीत, हरताल और शहद के साथ इन्हें पीसकर १ लाख मंत्र जप कर अभिमन्त्रित कर दे फिर उस पिसे हुए द्रव्य से अपने सम्पूर्ण शरीर पर लेप करले तो वह मनुष्यों के बीच अदृश्य हो जावेगा। इस आश्चर्य को सभी देखेंगे। षटकोण में शत्रु का नाम युक्त मन्त्रस्थ बीज को लिखे फिर धतूरे के रस से हरताल हल्दी पीसकर मंत्र के शेष अक्षरों से भूपुर को सुशोभित कर दे। इस प्रकार के बनाये गये यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा करके पीले रंग के सूत के डोरा से लपेट देवे।

पारदं शैलेयं हरिताल च मधुनासहपिष्ट्वा लक्ष मंत्रै-रभिमन्त्र्य तेनपिष्ट द्रव्येण स्वकीय सम्पूर्ण शरीर लेपनेन नृणां मनुष्याणां मध्ये अदृश्यो मनुष्यो भविष्यति इदमाश्चर्ये सर्वे पश्यन्तु॥ षट्कोण मध्ये शत्रुनाम युतं मन्त्रस्थं बीजं लिखेत् धत्तूर रसेन हरिताल हरिद्राश्च पिष्ट्वा मन्त्रशेषाक्षरः भुपुरं शोभितं कुर्यात्॥ एवं भूतस्य यन्त्रस्य प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा पीतरंजितेन सूत्रेण वेष्टनं कुर्यात्॥

पारदं च शिलां ताल पिष्टं मधु समन्वितम्। मनुना मन्त्रयेल्लक्षं लिपेत्तैनाखिलां तनुम्॥ अदृश्यः स्यान्नृणा मेषा आश्चर्य दृश्यतामिदम्। षट्कोणे विलिखे द्वींजं साध्य नामान्वितम्। मनोःहरिताल निशाचूर्णरुन्मत्त रस संयुतैः॥ शेषाक्षरेः समावीतं धरागेह विराजितम्। तद्यंत्र स्थापित प्राणं पीतसूत्रेण वेष्टयेत्॥

भ्राम्यत्कुलाल चक्रस्थां गृहीत्वा मृत्तिकामया॥ रचयेद वृषभं रम्यं यन्त्र तन्मध्यतः क्षिपेत॥ हरितालेन संलिप्य वृषं प्रत्यह मर्चयेत्॥ स्तम्भयेद्विद्विषां वाचं

गति कार्य परस्परम्।। आदाय वाम हस्तेन प्रेतभूमिस्य खर्परम्।। अंगारेण चित्तास्थेन तद्यन्त्रं समालिखेत्।। मन्त्रितं निहितं भूमौरिपूणां स्तम्भयेद्गतिम ।। प्रेतवस्त्रेलिखेद्यन्त्र मंगारेणैव तत्पुनः।।

ततः कुलाल चक्रस्थां मृत्तिकां गृहीत्वा तयामृत्तिकया सुन्दरं वृषभं निर्माय पूर्वोक्त यन्त्रं वृषभोदरे निर्माय हरितालेन वृषभं संलिप्य प्रतिदिनं तं वृषभं यथोपचारैः पूजयेत् अनेन कर्मणा शत्रूणां गतिं वाणीं कर्मशैलीं च साधकः स्तस्भयेत्।। श्मशानस्थ खर्परं (भिन्नं मृत्पात्रखण्डं) वामेन हस्तेनादाय चितास्थेन अंगारेण तस्मिन् खर्परे यन्त्रं लिखेत।। यन्त्रस्य मन्त्रेण संस्कार कृत्वा भूमौनिधायधेनु शत्रूणां गती रुद्धा भविष्यति अन्यच्च प्रेतवस्त्रे पूर्वाक्तेनांगारेण यन्त्र लिखेत्।।

कुलाल चक्र स्थित मिट्टी ग्रहण करके उस मिट्टी से सुन्दर बैल की प्रतिमा बनावे पूर्वोक्त यन्त्र को उस बैल के पेट में दाब दे, हरताल से बैल पर लेप कर दे। नित्त उस बैल को पूजा सामग्री से पूजे। इस प्रकार के करने से शत्रु की चाल, बोली व हरकतें वह साधक स्तम्भित कर देता है।

श्मशान में पड़े मिट्टी के पात्र को बांए हाथ में लेकर चिता स्थित अंगार उस मिट्टी के पात्र वाले खर्पर पर यन्त्र को लिखे। यन्त्र का मन्त्र से संस्कार करके भूमी में रखदे इससे शत्रु की गति चाल बाजी रुक जाती है दूसरी विधि मुर्दे के कफन पर प्रेत वस्त्र पर पहले कहे गये अंगार से यन्त्र लिखे।

मण्डूक वदने न्यस्य पीतवस्त्रेण वेष्टितम्। पूजितम् पीत पुष्पं स्तद्वाचं संस्तम्भयेद्विषाम् ।।

यद्भूमौ भवितादिव्यं तत्र यत्रं समालिखेत्॥
मार्जितं तद्वृषा पत्रैर्द्दिव्य स्तम्भन कृद्भवेत्॥
इन्द्र वारुणिका मूलं सप्तशोमनु मन्त्रितम्॥
क्षिप्तं जले दिव्य कृतां जल स्तम्भन कारकम्॥
किं भूरिणा साधकेन मन्त्रः सम्यगुपासितः।
शत्रूणां गति बुद्धयादे स्तम्भनं नात्रसंशयः॥

तद्यन्त्रं वर्षा भूमुखे निधाय पीतवस्त्रेणो भयोर्वेष्टनम्। पीतपुष्पैः पीतोपहारैश्च पूजनम्॥ इदं कर्म शत्रूणां वाचं संस्तम्भयति ॥ यस्यां भूमौ शपथः संगातः तस्या भूमौयन्त्रं समालिख्य वृषा पत्रैः मार्जनं दिव्यं स्तम्भनं करोति॥ इन्दं वारुणिकायाः मूलं सप्तवाराभि मंत्रितं दिव्य कृतां जलेक्षिप्तंचेत्तीर्ह तज्जल स्तम्भनं भविष्यति। अधिकं कि वक्तव्यं सम्यक् प्रकारेणो पासितोऽयं मन्त्रः रिपूणां गति बुध्द्या दीनां स्तम्भनं करिष्यति ॥

उस यन्त्र को मैढ़क के मुख में रखकर पीले कपड़े से यन्त्र व मेंढ़क दोनों को लपेट देय, पीले रंग के फूल पीले रंग की पूजा सामग्री से उसे पूजे। यह कार्य शत्रु की वाणी एवं बोलने को स्तम्भन कर देता है। जिस जगह गेंदा के पुष्प पैदा होते है। उस जगह पर इस यन्त्र को लिखकर अडूसा के पत्रों से मार्जन करे तो देवता का स्तम्भन होता है। इन्दुवारुणि का से मूल मंत्र से सात बार अभिमन्त्रित करे अंजलि में लेकर फेंके तो उससे जल का स्तम्भन होगा। विशेष क्या कहें भली भाँति विधि पूर्वक उपासित यह मन्त्र शत्रुओं को गति बुद्धि सभी का स्तम्भन करेगा। यह मन्त्र महोदधि के अनुसार प्रयोग वर्णन किये है जिससे साधक का भला और शत्रु का स्तम्भन हो जाता है।

कालो तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
वगला सिद्धिविद्या च मातंगी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः॥
नात्र सिद्धाद्यपेक्षास्ति न नक्षत्र विचारणा ।
कालादि शोधनं नास्ति न च मित्रादि शोधनम॥

कालिका पुराण में लिखा है काली, महाकाली, कालिका, आद्यशक्ति, तारा, महातारा, उग्रतारा, नीलतारा, तारिणी, महाविद्या, षोडशी पंचदशी बाला त्रिपुर सुन्दरी, भुवनेश्वरी, भैरवी, महाभैरवी, त्रिपुर भैरवी आदि सभी भैरवी, छिन्नमस्ता-उग्रचण्डा, प्रचण्डा, प्रचण्डचण्डिका, चण्डिका आदि विद्या, धूमावती वगलामुखी पीताम्बरा सिद्ध विद्या, मातंगी, राज मातंगी, शुक श्यामलादि, कमला, महालक्ष्मी आदि यह सभी दसौ महाविद्या हैं और ये सिद्धि विद्या एवं प्रसिद्ध विद्या हैं। इनकी सिद्धि के लिये न तो नक्षत्र का विचार होता है और न ही कालादिक शुद्धि करनी पड़ती है और नहीं मंत्रादि शोधन की आवश्यकता है।

॥अथ वगलामुखी॥

अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्ताम्भिनी वगलामुखी।
प्रणवीं गगनं पृथ्वी शांति विन्दुयुतं वग-॥
ला मु साक्षी गदी सर्व दुष्टानां वा हलीन्दुयुकू।
मुखं पदं स्तम्भयान्ते जिह्वां कीलय वर्णकाः॥
बुद्धि विनाशयान्ते तु बीजं तारान्गि सुन्दरी।
षट् त्रिंशदक्षरी मन्त्रे नारदो मुनिरस्यतु॥
छन्दोपि बृहती ज्ञेयं देवता वगुलामुखी।
नेत्राक्ष सायक नव पंच काष्ठाग्नि रंगकम॥
प्रणवः ॐ गगनं हः पृथ्वी लः शांतिः ई विन्दुः

तैर्युतं ह्लीं वगला मु इति स्वरुपाण्येव गदी खः इकारेण युतः खि सर्व दुष्टानां वा इत्यपि स्वरुपाण्येव इन्दुः अनुस्वारः तेन युक् हल् चं मुखं पदं स्तम्भय एतान्य क्षराणि अन्ते जिह्वां कीलय इमान्यक्षराणि ततः बुद्धिं विनाशय एतान्यक्षराणि बीजं ह्रीं तारः ॐ अग्नि सुन्दरी स्वाहा षट् त्रिंशदक्षरात्मको यंमंत्रः।

अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषिः वृहती छन्दः वगला मुखी देवता नेत्र २ अक्ष ५ सायक ५ नव ६ पंच ५ काष्ठा १० एतेरक्षरै रंग न्यासं कुर्यात् अंगपदेन करयोरपि ग्रहणम॥

अनेनैव क्रमेण करन्यासं कुर्यात॥

॥ अथ वगलामुखी मन्त्र जाप प्रयोग माह॥

ॐ अस्य श्री वगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिः वृहतीछन्दः श्रीं वगलामुखीं देवता सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः॥

॥अथ ऋष्यादि न्यासः॥

नारद ऋषये नमः शिरसि। वृहतीं छन्दसे नमो मुखे। श्री वगलामुखी देवतायै नमः हृदये। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥

अथ अंग न्यासः-

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां हृदयाय नमः ॥ ॐ वगला मुखि तर्जनीभ्यां शिरसे स्वाहा॥ ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां शिखायै वषट्॥ ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय

अनामिकाभ्यां कवचाय हुँ। ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नेत्रत्रयाय वौषट।। ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट।। इति करादि हृदयादि षडँगन्यासः।।

उपरोक्त प्रकार से ऋष्यादिक न्यास करते समय शिर पर, मुख पर हृदय पर और सर्वांग का स्पर्श करें। करादि हृदयादि न्यास करते समय अंगूठा,तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका करतल और कर पृष्ठ का स्पर्श करे। फिर हृदय पर, शिर पर, शिखा पर, दोनों नेत्रों पर हाथ रखे और बांऐ हाथ की हथेली पर मध्यमा तर्जनी से ताली देकर फट्कार दे। इसके बाद अंजली बांधकर श्री वगलामुखी देवी का ध्यान करें।

ॐ सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांग रूचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्त्रग्युताम्। हस्तैर्मुग्दर वज्र पाश रसनाः संविभ्रतीं भूषणै र्व्याप्तांगी वगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये।।१।। मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेदी, सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम्। पीताम्बराभरण माल्य विभूषितांगी, देवीं स्मरामि धृतमुग्दर वैरि जिह्वाम्॥२॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन् शत्रून् परि पीडयन्तीं। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।३।।

एवं ध्यात्वा मानसैरूपचारै सम्पूज्य जपमाचरेत।। ॐ लं पृथ्व्यात्मकं गंधं समर्पयामि।। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि॥ ॐ यं वाय्वात्मक धूपं समर्पयामि।। ॐ रं तेजात्मकं दीप समर्पयामि।। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि ।। ॐ

सं चन्द्रात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि॥ इति मानसोपचारैः सम्पूज्य वगलामुखीं मन्त्रं जपेत्॥

उपरोक्त क्रम से वगलामुखी देवी का ध्यान करके पृथ्वी रूप गन्ध समर्पण करे आकाश रूप पुष्प, वायु रूप धूप, सूर्य तेजस्वरूप दीपक प्रदान करे और अमृत रूप नैवेद्य, चन्द्रमा रूप पान अर्पण करे। इस तरह से मन में भावना के द्वारा पंचोपचार समर्पित करके श्री वगलामुखी देवी के मंत्र का जाप करे।

अथ श्री वगलामुखी मंत्र

ॐ ह्लीं वगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥ षट् त्रिंशदक्षरात्मकोयं मंत्रः॥ यथा शक्ति र्जपेत॥ पुरश्चरणे एक लक्ष जपः वा अयुतं जपः॥

॥माला मन्त्र॥

ॐ ह्रीं माले महामाये सर्व तत्व स्वरूपिणि। चतुर्वर्ग स्त्वयिन्यस्त स्तस्मान्मे सिद्धिदाभव॥

इति पठन् मूल मंत्रेण मालां सम्पूज्य यथा शक्ति जपं कुर्यात्। जपान्ते पुनः प्राणायामादिकं विधाय देवीं ध्यात्वा ऋष्यादिकं कृत्वा विसर्जयेदिति॥

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्रीत्वं गृहाणा स्मत् कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि॥

इति पठन् तेजोमयं जलं ध्यायन् देव्या वाम हस्ते जपं समर्पयेत् पुष्पां जल्यष्टकं दत्वा स्तोत्र कवचादिकं पठेत॥

ततः प्रदक्षिणी कृत्य दण्डवत् प्रणिपत्य-

ॐ इतः पूर्व प्राण वृद्धि देह धर्माधिकार तो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पदाभ्यांमुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तंयत्कृतं तत्सर्व ब्रह्मार्पण भवतु स्वाहा मदीयं च सकलं देव्यै ते समर्पयेत्॥

माला की शुद्धि चन्दन पुष्प चढ़ाकर जल का मार्जन करके श्रीवगलामुखी माला मन्त्र जपे फिर प्राणायाम पूर्वक ऋष्यादि न्यास करे और देवी का ध्यान कर विसर्जन करे। उक्त मन्त्र से तेजोमय जल हाथ में लेकर देवी के बायें तरफ छोड़े । फिर आठ बार पुष्पों की अंजली देवी पर चढ़ावे। स्तोत्र कवच हृदय आदि का ध्यान पाठ करे पश्चात् परिक्रमा करके दण्ड के समान लेट कर प्रणाम करे और मन्त्र से निवेदन समर्पण कर देवे।

ततः पुष्पांजल्यष्टकं गृहीत्वा

ॐ मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वरि ।
यदर्च्चितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तुमे ॥
आवाहनं च पूजां च तन्माहात्म्यं जपं तथा ।
विसर्जनं न जानामि श्री देवित्वं क्षमस्वमे ॥
अज्ञानाद्विस्मृते भ्रान्त्या यन्न्यून मधिकं कृतम्।
विपरीतं च तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि ॥

एष पुष्पांजलिः श्री पीताम्बरा वगलामुखी देव्यै नमः इति क्षमा प्रार्थना समर्पयामि नमः॥

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
पूजाराधन काले च पुनरागमनाय च॥

इति संहार मुद्रया पुष्पमेकं गृहीत्वा देवीं विसृज्य तत्पुष्पान् ऐशान्यां पात्रान्तरे निःक्षिपेत्॥

तत्र पात्रे चण्डेश्वरीं समभ्यर्च्य

ॐ चण्डेश्वरि महादेवि निर्माल्यै श्चन्दनादिभिः।
लेह्य चोष्यान्न पानादि निर्माल्यं स्त्रग् विलेपनम्॥
निर्माल्य भोजनं तुभ्यं ददामि श्री शिवाज्ञया।
इदं निर्माल्यं श्री चण्डेश्वर्यै नमः इति पठन्निर्माल्यं क्षिपेत् ततः किंचिद्देवी नैवेद्यम्। ॐ उच्छिष्ट चाण्डाल्यै नमः इति पठंस्तस्यै दद्यात् ॥ ततोनैवेद्यं स्वयं भुंजीत प्रणमेत्। इति वगलामुखी पीताम्बरा महाविद्या देवी पूजा पद्धति सम्पूर्णम्।

आवाहनादि पूजा जप विसर्जन मंत्र पढ़कर क्षमा प्रार्थना पूर्वक पुष्पांजलि देवे। संहार मुद्रा से १ पुष्प लेकर देवी का विसर्जन करे फिर उस फूल को ईशान दिशा में अन्य पात्र में त्याग देते। फिर उस पात्र में चण्डी देवी की पूजा करे और देवी या यंत्र पर चढ़े हुए माला चन्दनादिक निर्माल्य को चण्डेश्वरी के अर्पण कर दे फिर दूसरे माला चन्दन गंधाक्षत देवी पर चढ़ा दें, थोड़ा नैवेद्य चण्डेश्वरि को चढ़ावे। उच्छिष्ट चाण्डालिनी देवी की पूजा कर दे पश्चात् देवी को प्रणाम कर स्वयं प्रसाद पावे ।

इति श्री पीताम्बरा वगलामुखी देवी आराधना पूजा पद्धति समाप्तम्।।

अथ श्री वगलामुखी कवचम्

कैलासाचल मध्यगं पुरवहं शान्तं त्रिनेत्रं शिवम्। वामस्था कवचं प्रणम्य गिरिजा भूति प्रदं पृच्छति ॥१॥ देवी श्री वगलामुखी रिपुकुलारण्याग्नि रूपा च या। तस्या शाप विमुक्त मंत्र सहितं प्रीत्याऽधुना ब्रूहिमाम॥२॥

श्री शंकर उवाच

देवी श्री भव वल्लभे शृणु महामंत्रं विभूति प्रदम्। देव्यावर्मयुतंसमस्त सुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम॥३॥

तारं रुद्र वधूं विरंचि महिला विष्णु प्रिया कामयुक्। कान्ते श्री वगलानने मम रिपुन्नाशय युग्मान्विति ।।४।। ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवांछितम्। कार्ये साधय युग्म युक्छिव वधू वन्हि प्रियान्तो मनुः ।।५।। कंसारे स्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणी तथा। कालं श्रीमति भैरवर्षि सहितं छन्दो विराट् संयुतम् ।।६।। स्वेष्टार्त्थस्य परस्य वेत्ति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये। नाना साध्य महा गदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तय ।।७।। ध्यात्वा श्री वगलाननां मनु वरं जप्त्वा सहस्राख्यकं। दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्र महिला बीजै र्विनश्यांग के ।।८।। सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्। हेमाभांग रुचि शशांक मुकुटां स्रक्चम्पक स्रग्युताम् ।।६।। हस्तैर्मुग्दर पाश बद्ध रसनां स विभ्रतीं भूषणैः। व्याप्तांगी वगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ।।१०।।

ॐ अस्य श्री वगलामुखी ब्रह्मास्त्र मन्त्र कवचस्य भैरव ऋषिः विराट छन्दः श्री वगलामुखी ब्रह्मास्त्र मन्त्र कवच देवता क्लीं बीजम् ऐं शक्तिः श्रीं कीलकं मम परस्य च मनोभिलषितेष्ट कार्य सिद्धये विनियोगः ।।भैरव ऋषये नमः शिरसि।। विराट् छन्दसे नमः मुखे।। वगलामुखी देवतायै नमः हृदये ।। क्लीं बीजाय नमः गुह्ये ।।

ऐं शक्ते नमः पादयोः ।। श्रीं कीलकाय नमः

सर्वांगे॥ ॐ ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः॥

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट्॥ ॐ ह्रैं कवचाय हुम्॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट॥

अथ मंत्र स्वरूपम् :- यथा

ॐ ह्रां ऐं श्रीं क्लीं श्री वगलानने मम रिपुन्नाशय नाशय ममै श्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछित कार्यं साधय साधय ह्रीं ॐ स्वाहा॥

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्। सम्बोधन पदं पातु नेत्रे श्री वगलानने॥१॥ श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकान्नाशय द्वयम्। पातु गण्डौ सदामामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम्॥२॥ देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचोमम। कण्ठ देशं सनः पातु वांछितं वाहु मूलकम्॥३॥ कार्य साधयद्वन्द्वन्तु करौ पातु सदामम। माया युक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥४॥ अष्टाधिक चत्वारिंश दण्डाढ्या वगलामुखी। रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदामत॥५॥ ब्रह्मास्याख्यो मनुः पातु सर्वांगे सर्व संधिषु। मंत्र राजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा॥६॥ ॐ ह्रीं पातु नाभि देशं में कटिं मे वगलावतु॥ मुखी वर्णद्वयं पातु लिंग मे मुष्क युग्मकम॥७॥ जानुनी

सर्व दुष्टानां पातु मे वर्ण पंचकम्। वाचं मुखं तथा पादं षड् वर्णा परमेश्वरी ॥८॥ जंघा युग्मे सदा पातु वगला रिपु मोहिनी। स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम॥६॥ जिह्वां वर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च।पादोर्द्ध सर्वदा पातु बुद्धिं पाद तले मम॥१०॥विनाशय पदं पातु पादाँगुल्योर्न्नखानि मे। ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धिन्द्रिय वचांसि मे॥११॥ सर्वांगं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु। ब्राह्मी पूर्व दले पातु चाग्नेय्यां विष्णु वल्लभा॥१२॥ माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु। कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चा पराजिता॥१३॥ वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु। ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु॥ ४॥ यष्टौ शक्तः पान्तु सायुधाश्च स वाहनाः। राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गण नायकः ॥१५॥ श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदावतु। द्विभुजा रक्त वसनाः सर्वाभरण भूषिताः॥१६॥योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम। इति ते कथित देवि कवचं परमाद्भुतम्॥१७॥ श्री विश्व विजयं नाम कीर्ति श्री विजय प्रदम्। अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ॥१८॥ निर्धनो धनमाप्नोति कवच स्यास्य पाठतः। जपत्वा मंत्र राजं तु ध्यात्वा श्री वगलामुखीम्॥१६॥ पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात्तु यः। यद्यत् कामयके कामं साध्या साध्ये महीतल॥२०॥ तत्तत् काममवाप्नोति सप्त रात्रेण

शंकरी। गुरूं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रै शक्ति समन्वितः॥२१॥ कवचं यः पठेद्देवी तस्याऽसायन्न किंचन। यं ध्यात्वा प्रजपेन्मन्त्र सहस्त्रं कवचं पठेत् ॥२२॥ त्रिरात्रेण वशंय्याति मत्युं तन्नात्र संशयः । लिखित्वा प्रतिमां शत्रोस्सतालेन हरिद्रया॥२३॥ लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन्मनुं । एक विंशद्दिनं यावत्प्रत्यहं च सहस्रकम॥२४॥ जप्त्वा पठेत्तु कवचं चतुर्विंशति वारकम् । संस्तम्भं जायते शत्रोर्न्नात्र कार्या विचारणा॥२५॥ विवादे विजयं तस्य संग्रामे जय माप्नुयात् । श्मशाने च भयंनास्ति कवचस्य प्रभावतः॥२६॥ नवनीतं चाभि मन्त्र्य स्त्रीणां दद्या न्महेश्वरि। वंध्यायां जायते पुत्रो विद्याबल समन्वितः॥२७॥ श्मशानांगार मादाय भौमे रात्रौशनावथ। पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेल्लोह शलाकया॥२८॥ भूमौ शत्रौ स्वरूपं च हृदिनाम समा लिखेत्। हस्तं तध्दृदयेदत्त्वा कवचं तिथि वारकम्॥२६॥ ध्यात्वा राजन्मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः।म्रियते ज्वर दाहेन दशमेन्हि न संशयः॥३०॥ भूर्ज पत्रेष्विदं स्तोत्रं अष्टगन्धेन संल्लिखेत्। धारये द्दक्षिणे वाहौ नारी वाम भुजे तथा॥३१॥ संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत्। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तंति तं जनम्॥३२॥ सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् । वृहस्पति सोमवापि विभवे

धनदोपम् ।।३३।। काम तुल्यश्य नारीणां शत्रूणां च यमोपमः । कविता लहरी तस्य भवेद् गंगा प्रवाहवत् ।।३४।। गद्य पद्यमयी वाणी भवेद्देवी प्रसादतः। एकादश शतं यावत् पुरश्चरण मुच्यत ।।३५।। पुरश्चर्या विहीनं तु न चेदं फलदायकम्। न देयं पर शिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ।।३६।। देयं शिष्याय भक्ताय पंचत्वंश्चान्यथाप्नुयात्। इदं कवच मज्ञात्वा भजेद्यो वगलामुखीम् ।।३७।। शतकोटि जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न्नजायते। दाराढ्यो मनुजोस्य लक्ष जपतः ।।३८।। प्राप्नोति सिद्धिं परां विद्यां श्री विजयं तथा। सुनियतं धीरश्च वीरं वरम् ब्रह्मास्त्राख्य मनु विलिख्य नितरां भूर्जेष्ट गंधेनवै ।।

धृत्वा राज पुरं व्रजन्ति खलु ये दासोस्ति तेषां नृपः ।।

इति श्री विश्व सारोद्धार तन्त्रे पार्वतीश्वर संवादे वगलामुखी कवचं सम्पूर्णम् ।।

अथ श्रीवगलामुखी ब्रह्मास्त्र मन्त्र कवच भाषा

कैलास पर्वत पर विराजमान शान्त स्वभाव वाले त्रिनेत्रधारी भगवान शिव के वामाँग विराजमान गिरिजा महारानी ने प्रणाम कर वैभव प्रदान करने वाले कवच को पूजा। श्री वगलामुखी देवी जो शत्रु कुल रूपी वन में अग्नि रूपा है उसके शाप विमोचन मंत्र सहित प्रसन्न करने वाले मुझे अभी बताइये। भगवान शंकरजी बोलें कि हे देवी श्री शिव प्रिये ! महामंत्र देवी कवच युक्त विभूति प्रदान करने वाला सभी प्रकार के सुख देने वाला साम्राज्य प्रदत्त मुक्ति दायक मन्त्र कवच को सुनो। इसमें तप ॐ है रूद्र बधू ह्रां है, विरंचि महिलाऐं विष्णु प्रिया श्रीं है, काम युक्त क्लीं हैं,

कान्ते ! श्री है वगलाननने मम रिपुन्नाशय दो वार ऐश्वर्याणि पद और देहि दो वार शीघ्र मनोवाँछित कार्य साधय २ बार युक्त शिववधू ह्रीं वन्हि प्रिय स्वाहा अन्त में है ऐसा यह मंत्र है। कंसारे स्तनयंत्र क्लीं बीज अपराशक्ति और वाणी ऐं शक्ति श्री कीलकं भैरव ऋषि विराट छन्द युक्त है। स्वेष्टार्थ परास्यवेन्ति निसराँ कार्यों की प्राप्ति के लिये नाना साध्य महागद की नियति का नाश करने और बल वीर्य की प्राप्ति में इसका नियोजन है। श्री वगलाननना देवी का ध्यान करे श्रेष्ठ मंत्र को जपकर एक हजार वार ह्रीं वीज को दीर्घाकार ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः से अंग न्यास करे।

इस प्रकार ध्यान करे कि स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान तीन नेत्र वाली, पीले पुष्पों से सुशोभित, स्वर्ण की कांति वाली, चन्द्र मुकुट सिर पर धरे हुए चम्पा के पुष्पों की माला धारे, हाथ में मुग्दर, पाश अर्थात् रस्सी से जिह्वा को बाँधे हुए मुग्दर घुमाती हुई आभूषणों से सुसज्जित, दिव्य शरीर वाली, तीनों लोकों में व्याप्त, तीनों लोकों का स्तम्भन करने वाली वगलामुखी देवी का चिन्तवन करें।

"अथ श्री वगलामुखी'' यह ब्रह्मास्त्र मंत्र कवच का विनियोग जल लेकर छोड़े। "भैरव ऋषवे नमः'' से अंग न्यासादि करे। ह्रां ह्रां ह्रूं ह्रैं ह्रों ह्रः'' से करादि हृदयादि षडंग न्यास करे। मंत्रोद्धार से मंत्र का स्वरूप इस प्रकार जाने।

ॐ ह्रां ऐं श्रीं क्लीं श्री वगलाननने मम रिपुन्नाशय २ ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछित कार्य साधय साधय ह्रीं स्वाहा।

मेरे शिर की रक्षा करें। ॐ ह्रीं ऐं श्री क्लीं ललाट की रक्षा करे। श्री वगलाननने सम्बोधन पद की रक्षा करे। श्री वगलाननना नेत्र की रक्षा करे। कानों की ममरिपं रक्षा करे, नासिक की नाशय नाशय रक्षा करे। कपोलों की सदैव ममैश्वर्याणि रक्षा करे मस्तक की रक्षा करे। देहि देहि जिह्वा की रक्षा करे, शीघ्रं वाणी की रक्षा करे। मनः कण्ठ की रक्षा करे। वांछित वाहु मूल की रक्षा करे। कार्य साधय साधय दोनों हाथों की सदा मेरी रक्षा करे। माया ह्रीं युक्त तथा स्वाहा सर्वदा हृदय की रक्षा करे। अड़तालीस दण्ड आच्छादित वगलामुखी घर में वन में सर्वत्र सदैव मेरी रक्षा

करे। ब्रह्मास्त्र नाम मन्त्र सर्वांग संधियों में रक्षा करे। मन्त्रराज मेरी सदा सर्वदा रक्षा करे।। ॐ ह्रीं नाभि की रक्षा करे वगला कम्मर की रक्षा करे। मुखी लिंग मुष्क अंडकोष की रक्षा करे। सर्वदुष्टानां ये पांच अक्षर घुटनों की रक्षा करे। वाचं मुखं तथा पाद ये छै अक्षर वाली परमेश्वरी दोनों जंघाओं की रक्षा करे। बगला रिपुमोहिनी सदा रक्षा करे। स्तम्भयेति पद तीन अक्षर मेरी पीठ की रक्षा करे। जिह्वां ये दो अक्षर टखुनों की रक्षा करे। कीलयेतित्व पैरों के ऊपर सदा रक्षा करे। बुद्धि पैर के तलुए की रक्षा करे। विनाशय पद पैरों की अंगुली और मेरे नाखूनों की रक्षा करे। ह्रीं बीज सदैव बुद्धि इन्द्रिय वाणी की रक्षा करे। प्रणव ॐ सभी अंग अवयवों की रक्षा करे। स्वाहा मेरे शरीर की रोमावलियों की रक्षा करे। पूर्व दिशा में ब्राह्मी देवी रक्षा करे। अग्नि कोण में विष्णु वल्लभा लक्ष्मीजी रक्षा करे। दक्षिण में माहेशीदुर्गा रक्षा करे। नैर्ऋत्य कोण से चामुण्डादेवी रक्षा करे। पश्चिम दिशा में कौमारी देवी रक्षा करे। वायव्य कोण में अपराजिता शक्ति रक्षा करे।उत्तर में वाराहीदेवी रक्षा करे। ईशानकोण में नारसिंही रक्षा करे। ऊपर आकाश में महालक्ष्मी रक्षा करे नीचे पाताल में शारदा देवी रक्षा करे। इस प्रकार से आठौ शक्तियाँ आयुध सहित अपने वाहनों युक्त रक्षा करें। राजद्वार कचहरी में महादुर्गे, जेलखाने में गणनायक मेरी रक्षा करे। शमशान भूमि में जल के बीच दरिया में भैरव मेरी रक्षा करे। दो भुजी लाल वस्त्र धारिणी सभी आभूषणों से सुसज्जित योगिनियां वृहद्वन में सदैव रक्षा करें। इस प्रकार तुम से परम अद्भुत देवी कवच कहा यह कवच श्री विश्वविजय नाम कीर्ति यश श्री विजय का प्रदान करने वाला है। पुत्रहीन को पुत्र प्रदान करता है और वह पुत्र धीर-वीर सौ वर्ष तक जीवित रहने वाला होता है। निर्धन व्यक्ति इस कवच से धन प्राप्त कर सकता है। इस कवच के पाठ से व इसके मन्त्र जाप से तथा श्रीवगलामुखी के ध्यान को करके जो इस कवच को रात्रि में नियम से पाठ करता है वह जिस जिस काम को विचारता है वह काम उसका पूरा हो जाता है। सात रात पाठ करने पर वे सभी विचारे हुए कार्य पूरे हो जाते हैं। गुरू का ध्यान करके सुरापान करके रात्रि में अपनी स्त्री सहित बैठकर जो इस कवच का पाठ करता है वह हे देवी क्या नहीं कर सकता अर्थात् सभी कुछ कर सकता है। जो ध्यान पूर्वक एक हजार वार मन्त्र कवच का पाठ करे वह तीन

रात के द्वारा मृत्यु को भी वश में कर लेता है इसमें संशय नहीं है।

शत्रु की प्रतिमा लिखकर हरताल हरदी से उसके हृदय पर उसका नाम लिखकर ध्यान पूर्वक मन्त्र को जपे इक्कीस दिन तक एक हजार बार जपकर २४ चौबीस बार कवच का पाठ करे तो शत्रु का स्तम्भन हो जाता है इसका कोई विचार नहीं करना चाहिए। विवाद में विजय होती है संग्राम लड़ाई झगड़े में जय मिलती है। श्मशान पर डर नहीं लगता इस कवच के प्रभाव से सब कुछ ठीक हो जाता है। मक्खन या दही को मन्त्र से अभिमंत्रित करके हे महेश्वरि ! स्त्री को देय तो वंध्या स्त्री के पुत्र उत्पन्न हो जाता है और वह पुत्र विद्या व बल से युक्त होता है। श्मशान मुर्दघटा से अंगारा लेकर मंगलवार व शनीवार की रात में पैर से जल डाल कर पीसे फिर लोहे की सलाई या कलम से लिखे भूमि में शत्रु का स्वरूप और हृदय पर उसका नाम लिखे उसके हृदय पर हाथ रखकर कवच को तिथि बार को ध्यान करके मन्त्ररात नौरात प्रयत्न पूर्वक जप करे तो शत्रु दशवें दिन ज्वर के ताप से मर जाता है। इसमें सन्देह नहीं । भोजपत्र पर इस स्तोत्र को अष्ट गंध से लिखे और पुरुष दाहिनी भुजा में व स्त्री बांई भुजा में बांधे तो संग्राम में जीत होती है नारी पुत्रवती हो जाती है ब्रह्मास्त्रादिक शस्त्र उस पर असर नहीं डाल सकते जो इस कवच की पोथी का पूजन करते हैं वे पूजा के फल को पाते हैं।

इस कवच के प्रभाव से साधक वृहस्पति के समान हो जाता है, कुबेर के समान वैभवशाली बन जाता है। कामदेव के समान नारियों का प्रिय बन जाता है। शत्रुओं के लिये यमराज के समान हो जाता है। उसकी वाणी से कविता लहरी गंगाजी के प्रवाह की तरह निकलने लगती है। वगलामुखी देवी के प्रभाव से गद्य पद्यमयी वाणी हो जाती है। भाषण देने की शक्ति व कविता करने की शक्ति मिलती है। इस देवी मन्त्र कवच की पुरश्चरण संख्या ग्यारह सौ की है। पुरश्चरण विधि से यह कवच सिद्ध हो जाता है बिना पुरश्चरण के यह फल नहीं देता हैं। इस कवच को पराये शिष्य को व दुष्टों को विशेषकर नहीं बताना चाहिये। इस कवच का ज्ञान केवल गुरू भक्त शिष्यों को भक्तों को देना चाहिये। इस कवच को बिना जानकारी के जो वगलामुखी का भजन करता है वह सौ करोड़ जपने पर भी सफलता की सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। स्त्री सहित मनुष्य इसका एक लाख जप

करने से परम श्रेष्ठ सिद्धि विद्या श्री विजय को प्राप्त कर लेता है और सुनियोजन से धारण करने पर वीरता को प्राप्त करता है। भोजपत्र पर ब्रह्मास्त्र मन्त्र को लिखकर अष्ट गंध से जो धरे तो राजधानी देवराज इन्द्र की प्राप्त होती है कितने ही नौकरों का स्वामी एवं राजा बनता है। यह विश्वसारोद्धार तन्त्र में लिखा ईश्वर पार्वती के संवाद युक्त वगलामुखी कवच भाषा में पूरा हुआ।

॥अथ श्री वगलामुखी हृदयमाला मन्त्रम्॥

ॐ अस्य श्री वगलामुखी हृदयमाला मन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्छदः श्री वगलामुखी देवता ह्लीं बीजं क्लीं शक्तिः ऐं कीलकम् श्री वगलामुखी प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः॥

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे । श्री वगलामुख्यै देवतायै नमो हृदये। ॐ ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वांगे॥ अथ करांग न्यासौ॥ ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः॥

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः॥ ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ ह्लीं कवचाय हुँ। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्रायफट॥ ॐ ह्रीं क्लीं ऐं इतिदिग्बन्धः ॥ अथ ध्यानम्॥ पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरणभूषितां पीत कंज द्वन्द्वां बगलां चिन्तयेऽनिशम्॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य

प्रार्थयेत्॥ पीत शंख गदा हस्ते पीत चन्दन चर्चिते। वगले मे वरं देहि शत्रु संघ विदारिणी॥ इति संप्रार्थ्य मूल मन्त्रं जपेद्यथा॥ ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वगला मुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासना ध्यासिन्यै स्वाहा॥ इति मन्त्रं जप्पित्वा पुनः पूर्व वद्धृदयादि षडंग न्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्॥ तद्यथा॥

ॐ वन्देहं वगलां देवीं प्रीतभूषण भूषिताम्। तेजोरूपमयीं देवीं पीत तेजः स्वरूपिणीम॥१॥ गदा भ्रमणाभिन्नाभ्रां भृकुटी भींषणाननाम्। भीषयन्तीं भीम शत्रून् भजे भक्तस्य भव्यदां ॥२॥ पूर्णचन्द्र समानास्यां पीतगंधानुलेपनाम् । पीताम्बर परीधानां पवित्रा माश्रयाम्यहम्॥३॥ पालयन्ती मनुपलं प्रसमीक्ष्यावनीतले। पीताचार रतां भक्तां स्तां भवानी भजाम्यहम॥ ४॥ पीतापद्म पद द्वन्द्वां चम्पकारण्य रोपिणीम् । पीतावतंसांपरमां वन्दे पद्मज वन्दिताम्॥५॥

लसच्च्चक्रर्सिजत्सु मंजीर पादां चलत्स्वर्ण कणवि- तंसांश्चितास्याम्। तलत्पीत चन्द्राननां श्चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीड्चसत्पाद पद्माम्॥६॥

सुपीताभया मालया पूत मन्त्रं परंते जपन्तो जयं संलभन्ते रणे राग रोषा प्लुतानांरिपूणां विवादे बला द्वैर कृद्धात मातः॥७॥

भरत्पीतभास्वत् प्रभा हस्करा भां गदा गंजिता मित्रगर्वां गरिष्ठाम्। गरीयो गुणागार गात्रं गुणाढ्या गणेशादि गम्यां श्रये निगुणाढ्याम॥८॥

जनाये जपन्त्युग्र बीजं जगत्सुपरं प्रत्यहं ते स्मरन्ता: स्वरूपम्। भवेद्वादिनां वाङ्मुख स्तम्भ आद्येजयो जायते जल्पता माशुतेषां ॥६॥

तवध्यान निष्ठा प्रतिष्ठात्मप्रज्ञावतां पाद पद्यार्चने प्रेम युक्ताः। प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिगादास तुल्या भवन्ति ॥१०॥

नतामस्तेमात: कनक कमनीयांघ्रि जलजं चलद्विद्युद्वर्णां घनतिमिर विध्वंस करण। भवाब्धो मग्नात्मोत्तरण करणं सर्वशरणं प्रपन्नानां मात र्जगति वगले दुःख दमनम् ॥११॥

ज्वलत ज्योत्सना रत्नाकर मणि विषक्तांघ्यभवनं स्मरामस्ते धाम स्मर हर हरीन्द्रेन्दु प्रमुखैः॥ अहोरात्रं प्रातः प्रणय नवीनयं सुविशदं। परं पीताकारं परिचित मणिद्वीप वसनम् ॥१२॥

वदामस्त्रीं मातश श्रुति सुखकरं नाम ललितंल्लसन्मात्रा वर्ण्णा जगति वगलेति प्रचरितम॥ चलन्त स्तिष्ठन्तो वय भुपविशन्तोपिशयने न भेमो यच्छ्रेयोदिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम् ॥१३॥

पदार्च्चायां प्रीतिः प्रतिदिनम् पूर्वाप्रभवतु यथाते प्रासन्यं प्रतिपल मपेक्ष्यं प्रणमताम्। अनल्पं तंन्मात र्भवति भृतभक्तया भवतुनो दिशा तः सद्भक्ति भुवि भगवतां भूरि भवदाम् ॥१४॥

मम सकल रिपूणां वाङ् मुखे स्तम्भया शुभगवति रिपु जिह्वां कीलय प्रस्थ तुल्याम्। व्यवसित खलबुद्धिं

नाशयाशु प्रगल्भां मम कुरु वहु कार्य सत्कृपेऽम्ब प्रसीद ॥१५॥

ब्रजतु ममरिपूणांसद्मनि प्रेतसंस्था करघृत गदया तान् घातमित्वाशुरोषात्। सघन वसन धान्यं सद्मतेषां प्रदह्य पुनरपि वगला स्वस्थान मायातुशीघ्रम ॥१६॥

करघृत रिपुजिह्वा पीडन व्यग्र हस्तांपुनरपि गदया तां स्ताडयंती सुतन्त्राम्। प्रणतसुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रं बहुबल वगलां तां पीतवस्त्रं नमामः ॥१७॥

हृदयवचन कायैः कुर्वतां भक्तपुंजं प्रकटति कुरुणार्द्रां प्रीणतिजल्पतीति। धनमथ बहुधान्य पुत्र पौत्रादिवृद्धिः सकलमपि किमेभ्योदेय मेवं त्ववश्यम् ॥१८॥

तव चरण सरोजं सर्वदासेव्यमान। द्रुहिण हरि हराद्यै दैब वृन्दैश्शरण्यम्। मृदु मपिशरणं ते शर्मदं सूरि सेव्यं व्यय मिह करवामो मातरेत द्विधेयम् ॥१६॥

वगला हृदयस्तोत्रमिदं भक्ति समन्वितः। पठेद्यो वगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत् ॥२०॥

पीतध्यान परोभक्तो यश्शृणोत्य विकल्पतः निष्कल्मषो भवेन्मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥२१॥

आश्विनस्य सितेपक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम्। यस्त्विदं पठते प्रेम्णा वगला प्रीत मेतिसः ॥२२॥

देव्यालयेपठेन्मर्त्योवगलांध्यायतीश्वरीम् । पीतवस्त्रा वृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः ॥२३॥

पीताचार रतोनित्यं पीतभूषां विचिन्तयन्। वगलां यः पठेन्नित्यं हृदय स्तोत्रं मुत्तमम् ॥२४॥

न किं चिदुर्लभं तस्य दृश्यते जगतीतले। शत्रवो ग्लानि मायान्ति तस्य दर्शन मात्रतः ॥२५॥

इति श्री सिद्धेश्वर तन्त्रे उत्तरखण्डे वगला पटले श्री बगला हृदय स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अथ भी वगलामुखी हृदय माला मन्त्र भाषानुवाद

इस वगलामुखी हृदय माला मन्त्र का नारद ऋषि है-अनुष्टुप्छंद है, श्री वगलामुखी देवता है, ह्लीं बीज है, क्लीं शक्ति है, ऐं कीलक है, श्री वगलामुखी की कृपा प्राप्ति में जप के लिए विनियोग है। नारद ऋषयेनमः कहकर शिर पर हाथ रखे। अनुष्टुप्छंद से कहकर मुखपर हाथ रखे। 'श्री वगलामुखी देवतायै नमो' कहकर हृदय पर हाथ रखे 'ह्लीं बीजाय नमो' कहकर गुप्तेन्द्रिय पर हाथ रखे। 'क्लीं शक्तयेनमः' कहकर दोनों पैरों पर हाथ रखे।'ऐं कीलकाय नमः' कहकर सर्वांग पर स्पर्श करे। 'ओं ह्लीं' इससे दोनों अंगुठाओं पर तर्जनी अंगुली फेरे। 'क्लीं तर्जनीभ्यां नमः' ऐसा बोलकर दोनों अंगूठे दोनों तर्जनी अंगुलियों पर फेरे।'ऐं मध्यमाम्यां नमः' ऐसा बोलकर अंगूठे दोनों मध्यमाओं पर फेरे।'ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः' कहकर अंगूठे अनामिका उँगलियों पर फेरे। 'क्लीं कनिष्ठिकाभ्याँ नमः' कहकर अंगूठे दोनों कनिष्ठिका अंगुलियों पर फेरे। 'ऐं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः' दोनों हाथ की हथेली व उनके पृष्ठ भाग को मिला देवे। 'ह्लीं हृदयाय नमः' हृदय पर हाथ रखे। 'क्लीं शिरसे स्वाहा' शिर पर हाथ रखे ऐं शिखायै वषट्' चोटी का स्पर्श करे। 'ह्लीं कवचाय हुँ' दोनों भुजाओं का स्पर्श करे। 'क्लीं नेत्र त्रयाय वौषट्' अनामिका का तर्जनी व मध्यमा अंगूली से तीन नेत्र स्थान का स्पर्श करे। 'ऐं अस्त्राय फट्' बाँए हाथ की हथेली पर दाहिनी हाथ की तर्जनी अंगुष्ठ के योग से ताली बजावे। 'ॐ ह्लीं क्लीं ऐं' यह पढ़कर चुटकी बजाकर दिग बंधन करे। इसके बाद अंजली बाँधकर ध्यान करे। पीले वस्त्र, पीली माला, पीले आभूषण से सुशोभित पीले कमल पर दोनों चरण रखे निरन्तर वगलामुखी का चिन्तवन करे। इस प्रकार ध्यान करके पूजा कर प्रार्थना करे। पीला शंख गदा हाथ में पीले चन्दन से शोभायमान शत्रु संघ विदारिणी वगले मेरे लिये वर दीजिय। इस

प्रकार प्रार्थना करके मन्त्र जाप करे। जो इस प्रकार है। 'ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वगला मुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा'। यह मन्त्र जपकर पुनः पूर्ववत् हृदयादिक षडंग न्यास करके स्तोत्र का पाठ करे। जो इस प्रकार है।

मैं वन्दना करता हूँ वगलादेवी की जो पीले वस्त्र आभूषणों से सुशोभित है। प्रकाशमयी देवी को पीले प्रकाश स्वरूपिणी को जो गदा घुमाती हुई, भ्रकुटी को ताने हुए, भयंकर भय शत्रु को देने वाली और भक्तों को वैभव प्रदान करने वाली को भजता हूँ। पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुखारविन्द है, पीली गन्ध का विलेपन हुई पीताम्बर धारणी पवित्रा विशुद्ध देवी के मैं आश्रित हूँ। पृथ्वी पर क्षण क्षण में पालन व देख रेख करने वाली पीताचार से प्रसन्न होने वाली, भक्तों पर उस भवानी की उपासना करता हूँ। पीले कमल पर दोनों चरण रखे, चम्पक वन में विराजमान पीले कमल पर श्रेष्ठ देवी ब्रह्मा से वन्द्यमान की वन्दना करता हूँ। मनोहर पायजेव पैर में शोभित, सोने के कर्ण फूलों से अर्चित मुख वाली पीले चन्द्रमा के समान मुख वाली, चन्द्रमा से वन्दित, ब्रह्मादिकों से पूज्यमान चरण वाली देवी को भजता हूँ। सुन्दर पीले रंग की माला से पवित्र तेरे मन्त्र को जो जपते हैं वे जय प्राप्त करते हैं। युद्ध में राग द्वेषियों में शत्रु से विवाद में बलवान बैर करने वाले से माता पीले प्रकाश की प्रभा से प्रभावित अंग कुमित्रों के गर्व को खण्डन करने वाली, गुणों का भण्डार गणेशादिक गम्या निर्गुण से आच्छादित देवी के आश्रित हूँ। जो मनुष्य उग्र बीज का जप करते हैं इस जगत में परमश्रेष्ठ तेरे स्वरूप का स्मरण करते हैं उनके सामने बोलने वालों के मुख वाणी स्तम्भित हो जाते हैं और शीघ्र ही वे जय को प्राप्त करते हैं। तेरे ध्यान में मग्न प्रतिष्ठित, आत्मज्ञानी अपने ज्ञान के द्वारा प्रेम सहित तेरे चरण कमलों की पूजा में प्रसन्न रहने वाला राजा वैदिक विद्वान पुराण आदि स्तुति से दास हो जाते है। जैसे बिजली के द्वारा घनघोर बादलों के बीच का अन्धेरा नष्ट हो जाता है संसार सागर में मग्न आत्मा को तारने वाली सब प्रकार की रक्षा करने वाली कृपालु माता वगले जगत के दुःखों का दमन करने वाली हो।। समुद्र की मणियों से प्रज्वलित, प्रकाश से प्रकाशित भवन में शिव विष्णु इन्द्रादिक प्रमुख देवता तेरे ही तेज का सुमिरन करते हैं। दिन रात और प्रातःकाल विस्मृत भूमि पर परमश्रेष्ठ

पीताकृति विरचित मणिद्वीप में निवास को और हे माता तेरे वेदों में प्रसन्न करने वाले ललित नाममात्रा वर्ण उच्चारण करता हूँ। जगत में वगला इस नाम की प्रसिद्धि है चलते समय रुकते समय बैठते समय सोते समय आकाश स्वर्ग में दुर्लभ तेरा नाम है तेरे ही चरण कमलों की पूजा में हमेशा प्रेम है प्रतिदिन तुम्हारी प्रसन्नता के लिए प्रतिक्षण आपको प्रणाम है। थोड़ा सा भी स्मरण हे माता तेरा सुख शान्ति प्रदान करने वाला है।

मेरे सभी शत्रुओं की वाणी,मुखों को शीघ्र स्तम्भन कर दे। हे भगवति? शत्रूओं की जिव्हा कील दे दुष्ट बुद्धि वाले दुष्टों का नाशकर शीघ्र ही मेरे किये हुए बहुत से कार्य को दया करके पूरा करो और प्रसन्न हो। मेरे शत्रुओं के निवास में प्रेत पर स्थिर होकर जाओ और अपने हाथ में गदा लेकर क्रोध पूर्वक उसे मार दो। धन वस्त्र धान्य सहित उसके घर को जला दो फिर हे वगले! अपने स्थान पर शीर्घ आ जाओ। हाथ से शत्रु की जिह्वां को पीड़ा पहुँचाने वाली उग्र हाथों से गदा द्वारा मारने वाली देव गणों का पालन करने वाली, महाबला पीतवसन धारिणी वगला देवी प्रणाम है उसके पीले वस्त्रों को नमस्कार है। हृदय से, वचन से, शरीर से भक्ति करने वाला करुणा से भीगा प्रसन्न करने वाले भक्त को धन धान्य पुत्र पौत्रादिकों की बृद्धि एवं समस्त मंगल अवश्य होते है। तेरे चरण कमल हमेशा सेवा करने योग्य हैं ब्रह्माविष्णु महादेवादि समस्त देवता गण तेरी रक्षा में ही शरण लेते हैं वीर पुरुष तेरी सेवा में ही समय व्यतीत करते हैं हे माता! ऐसा तेरा विधान हैं। यह वगला हृदय स्तोत्र भक्ति पूर्वक जो पढ़ता है उसे पढ़ने पर वगलादेवी प्रसन्न होती है। पीताम्बरा के ध्यान में परायण जो भक्त मन से सुनता है। वह सभी दुखों से छुटकारा पाकर मरने पर मोक्ष की प्राप्ति करता है। क्वार के महिने की शुक्ल पक्ष सुदी में महाअष्टमी के दिन या रात में जो इस पाठ को प्रेम पूर्वक पढ़ते हैं उनसे वगलामुखी प्रसन्न हो जाती है देवी के मन्दिर में वगलामुखी देवी का ध्यान करके परमेश्वरी पीताम्बरा के इस पाठ की जो मनुष्य पीले वस्त्र पहनकर, जो करता है उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं। पीताचार में संलग्न नित्य पीले रंग की वेषभूषा का ही चिन्तवन करे।

जो वगलामुखी देवी के इस उत्तम हृदय स्तोत्र को पढ़ता है याने पाठ करता है उसको इस धरती पर सब कुछ दिखाई दे सकता है कोई वस्तु उसे दुर्लभ नहीं है। उसके दर्शन मात्र से शत्रु ग्लानि उत्पन्न हो जाती है।

ऐसा सिद्धेश्वर तन्त्र के उत्तर खण्ड में वगला पटल के अन्तर्गत श्री वगलामुखी हृदय स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।

इति भाषानुवाद श्री वगलामुखी पीताम्बरा हृदय माला स्तोत्रम्

अथ श्री वगलामुखी पीताम्बरा अष्टोत्तर शत्तनाम स्तोत्र प्रारम्भः

नारद उवाच

भगवन् देव देवेश सृष्टि स्थिति लयात्मकः ।
शतमष्टोत्तरं नाम्ना वगलायावदाधुन ॥१॥

श्री भगवानुवाच॥

शृणुवत्स प्रवक्ष्यामि नाम्ना मष्टोत्तरं शतम् ।
पीताम्बर्या महादेव्या स्तोत्रं पाप प्रणाशनम्॥२॥
यस्य प्रपठनात्सद्यो वादी मूकोभवेत्क्षणात् ।
रिपूणां स्तभ्भनं यातिसत्यंर वदाम्यहम्॥३॥

ॐ अस्य श्री पीताम्बर्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रस्य सदा शिवऋषिः अनुष्टुपु छंदः श्रीपीताम्बरी देवता श्री पीताम्बरी देवी प्रीतये जपे विनियोगः॥

ॐ वगला विष्णु वनिता विष्णु शंकरभामिनी।
बहुला वेद माता च महाविष्णु प्रसूरपि॥१॥
महामत्स्या महाकूर्मा महावाराह रूपिणी ।
नरसिंह प्रियारम्या वामना बहुरूपिणी॥२॥
जामदम्न्य स्वरूपा च रामा-राम प्रपूजिता ।
कृष्णा कपर्द्दिनी कृत्या कलहाकल विकारिणी॥३॥
बुद्धिरूपा बुद्धभार्या बौद्ध पाखण्ड खण्डिनी।
कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गति नाशिनी ॥४॥

कोटि सूर्य प्रतीकाशा कोटिकन्दर्प मोहिनी।
केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी ॥५॥
केशवी केशवाराध्या किशोरी केशव स्तुता।
रुद्ररूपा रुद्रमूर्ति रुद्राणी रुद्रदेवता ॥६॥
नक्षत्र रूपा नक्षत्रा नक्षत्रेश प्रपूजिता।
नक्षत्रेश प्रिया नित्या नक्षत्र पति वन्दिता ॥७॥
नागिनी नाग जननी नागराज प्रवन्दिता।
नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ॥८॥
नगाधिराज तनया नगराज प्रपूजिता।
नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्य कारिणी ॥६॥
रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्य दायिनी।
सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्ण्णाभा स्वर्गतिप्रदा ॥१०॥
रिपुत्रासकरी रेखा शत्रु संहार कारिणि।
भामिनी च तथा माया स्तंभिनी मोहिनी शुभा ॥११॥
रागद्वेश करी रात्री रौरवध्वंस कारिणी।
यक्षिणी सिद्ध निवहासिद्धेशा सिद्धि रूपिणी ॥१२॥
लंकापतिध्वंसकरी लंकेशरिपु वन्दिता।
लंकापत्युः कुलहरा महारावण हारिणी ॥१३॥
देवदानव सिद्धौघ पूजितापरमेश्वरी।
पराणुरूपा परमा परतंत्र विनाशिनी ॥१४॥
वरदा वरदाराध्या वरदान परायणा।
वरदेश प्रिया वीराभूषण भूषित ॥१५॥
वसुदीबहुदावाणी ब्रह्मरूपा वरानना।
बलदा पीतवसना पीतभूषण भूषिता ॥१६॥

पीतपुष्प प्रियापीत हारा पीत स्वरूपिणी।
इतिते कथितं विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१७॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणुयाद्वा समाहितः।
तस्यशत्रुः क्षयं सद्यो यातिनैवात्र संशयः ॥१८॥
प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत्सुभक्तया परिचिन्तय पीताम्। द्रुतं भवेतस्यसमस्त बुद्धि विनाशमायाँति च तस्य शत्रुः ॥१६॥

इति विष्णुयामले नारद विष्णु संवादे श्री वगलाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्री वगलामुखी पीताम्बरा अष्टोत्तर

शतनाम स्तोत्र भाषा-

श्री वगलामुखी पीताम्बरा देवी के एक सौ आठ नामों वाला स्तोत्र हिन्दी भाषा में वर्णन करते हैं। यह स्तोत्र भगवान विष्णु और देवर्षि नारदजी के संवाद में प्रकट हुआ था नारद बोले कि हे भगवान देव-देवेश्वर सृष्टि स्थिति लयात्मक रूप वगलामुखी के एक सौ आठ नाम कहिये। श्रीभगवान बोले कि हे वत्स ! सुनो अष्टोत्तरशतनाम कहता हूँ। पीताम्बरा महादेवी का स्तोत्र पापनाशक है। जिसके पढ़ने से शीघ्र ही बाचालमूक हो जाता है। शत्रुओं का स्तंभन हो जाता है यह सत्य है मैंने सत्यता पूर्वक कहा है । इस पीताम्बरी देवी के अष्टोत्तर शतनाम स्त्रोत्र का सदा शिव ऋषि है अनुष्टुप छन्द है, श्री पीताम्बरी देवी देवता है और श्रीपीताम्बरी देवी की प्रसन्नता में इसका विनियोग किया है। १ वगला, २ विष्णु बनिता, ३ विष्णु शंकर भामिनी, ४ बहुला, ५ वेदमाता, ६ महाविष्णु प्रसूः, ७ महामत्स्या, ८ महाकूर्मा, ९ महावाराह रूपिणी, १० नरसिंहप्रिया, ११ वामना वट रूपिणी, १२ जामदग्न्य स्वरूपा, १३ रामाराम प्रपूजिता, १४ कृष्णा, १५ कपर्दिंदनी, १६ कृत्या, १७ कलहा, १८ कलिनाशिनी, १९ बुद्धिरूपा, २० बुद्धभार्या, २१ बौद्ध पाखण्डखण्डिनी, २२ कल्किरूपा, २३ कलिहरा, २४ कलिदुर्गति नाशिनी, २५ कोटि सूर्य प्रतीकाश, २६ कोटि कन्दर्प मोहिनी, २७ केवला,

२८ कठिना, २९ काली, ३० कला कैवल्यदायिनी, ३१ केशवी, ३२ केशवाराध्या, ३३ किशोरी, ३४ केशव स्तुता, ३५ रुद्ररूपा, ३६ रुद्रमूर्ती, ३७ रुद्राणी, ३८ रुद्र देवता, ३९ नक्षत्र रूपा, ४० नक्षत्रा, ४१ नक्षत्रेश प्रपूजिता, ४२ नक्षत्रेश प्रिया, ४३ नित्या, ४४ नक्षत्रपति वेदिता, ४५ नागिनी, ४६ नागजननी, ४७ नागराज प्रवन्दिता, ४८ नागेश्वरी, ४९ नागकन्या, ५० नागरी, ५१ नगात्मजा, ५२ नगाधिराज तनया, ५३ नागराज प्रपूजिता, ५४ नवीना , ५५ नीरदा, ५६ पीता, ५७ श्यामा, ५८ सौन्दर्य कारिणी, ५९ रक्ता, ६० नीला, ६१ घना, ६२ शुभ्रा, ६३ श्वेता, ६४ सौभाग्य दायिनी, ६५ सुन्दरी, ६६ सुभगा, ६७ सौम्या, ६८ स्वर्णाभा, ६९ स्वर्गतिप्रदा, ७० रिपुत्रास करी, ७१ रेखा, ७२ शत्रु संहार कारिणी, ७३ भामिनी, ७४ माया, ७५ स्तम्भिनी, ७६ मोहिनी शुभा, ७७ रागद्वेषकरी, ७८ रात्री, ७९ रौरवध्वंस कारिणी, ८० यक्षिणी, ८१ सिख नियहा, ८२ सिद्धेशा, ८३ सिद्धिरूपिणी, ८४ लंकापति ध्वंसकरी, ८५ लंकेशरिपुवन्दिना, ८६ लंकानाथ कुलहरा, ८७ महारावण हारिणी, ८८ देवदानव सिद्धोघपूजिता, ८९ परमेश्वरी, ९०पराणुरूपा, ९१ परमा, ९२ परतंत्र विनाशिनी, ९३ वरदा वरदाराध्या, ९४ वरदानपरायणा, ९५ वरदेशप्रियावीरा, ९६ वीरा भूषण भूषिता, ९७ वसुदा, ९८ बहुदा, ९९ वाणी, १०० ब्रह्मारूपा, १०१ वरानना, १०२ बलदा, १०३ पीतवसना, १०४ पीतभूषण भूषिता, १०५ पीतपुष्पप्रिया, १०६ पीतहारा, १०७ पीतहारा, १०८ पीतस्वरूपिणी। ये एक सौ आठ नाम विप्र नारद तुमसे कहे हैं जो पढ़े या किसी से पढ़वावे या इसका श्रवण करे मन लगाकर तो उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं इसमें संशय नहीं करना।

सुबह के समय शुद्ध होकर स्नान करके जो मनुष्य भक्ति से पीताम्बरा देवी का ध्यान करके पाठ करता है तो शीघ्र ही उसके यहाँ समस्त बढ़ोत्तरी होती है और शत्रु उसके नष्ट हो जाते हैं यह विष्णुयामल तंत्र में नारद विष्णु के संवाद में बगलामुखी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र पूरा हुआ।

अथ श्री वगलामुखी पीताम्बरा देवी स्तोत्रम

ॐ अस्य श्री वगलामुखी स्तोत्रस्य नारद ऋषिः श्री वगलामुखी देवता मम सन्निहितानां सर्वेषां विरोधिनां

वाङ् मुख पद बुद्धीनां स्तम्भनार्थे जपे विनियोगः॥
अथ ध्यानं यथा-

ॐ मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्नवेदी सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम्। पीताम्बरा भरण माल्य विभूषितांगींदेवी भजामि घृत मुग्दर वैरिजिह्वाम्॥१॥

जिह्वाग्रमादाय करेणदेवीं व्वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्। गदामिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यांन्द्विभुजां भजामि॥२॥

चलत्कनककुण्डलोल्लसित चारु गण्ड स्थलांल्ल सत्कनक चम्पकद्युति मदिन्दु बिम्बाननाम्॥ गदाहत विपक्षकां कलंकित लोल जिह्वांचलां स्मरामि वगला मुखीं विमुखवाङ् मनस्तम्भिनीम्॥३॥

पीयूषोदधि मध्य चारु विलसद्रक्तोत्पले मण्डपे सत् सिंहासन मौलि पातित रिपुं प्रेता सनाध्यासिनीम्॥ स्वर्णाभां कर पीडितारि रसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रमांमित्यंध्यायतियान्ति तस्य विलयं सद्योऽय सर्वापदः॥४॥

देवित्वच्चरणाम्बुजार्जन कृते यः पीतपुष्पांजलीं भक्तया वाम करे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्॥ पीठध्यान परोऽथ कुम्भक वशाद्बीजं स्मरेत्पार्थिवस्तस्या मित्र मुखस्य वाचि हृदये जाड्यंभवेत्तत्क्षणात्॥५॥

वादीमूकति रंकति क्षितिपति वैश्वानरः शीतति क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।

गर्वी खर्वति सर्व विच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः
श्री नित्ये वगलामुखी प्रतिदिनं कल्याणितुभ्यंन्नमः ।।६।।

मन्त्रस्तावदल विपक्षदलनं स्तोत्रं पवित्रं च ते
यन्त्रं वादि नियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रंचते।
मातःश्रीबगलेति नाम ललितंयस्यास्ति जन्तोर्मुखेत्वन्नाम्
ग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भोभवेद्वादिनाम् ।।७।।

दुष्टस्तंम्भन मुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्य विद्रावणं-
भूभृद्भीशमनं चलामृगदृशांचेतः समाकर्षण्। सौभाग्यैक
निकेतनं समदृशः कारुण्य पूर्णामृतं मृत्यो मारण
माविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ।।८।।

मातर्भंजयमे विपक्ष वदनं जिह्वाँ च संकीलय
ब्राम्ही मुद्रय नाशया शुधिषणा मुग्रागतिं स्तम्भय।
शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्ण गदया गौरांगि पीताम्बरे
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्य पूर्णे क्षणे ।।६।।

मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये।
श्री विद्येसमये महेशि वगलेकामेशि रामेरमे।।
मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्ग प्रदेदासोऽहं
शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहिमाम् ।।१०।।

संरम्भे चौर संघे प्रहरणसमये बन्धनेवारि मध्ये
विद्या वादे विवादे प्रकुपित नृपतौदिव्य काले निशायाम्
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु वध समये निर्जनेवावने
वा गच्छंस्तिष्ठं स्त्रिकालं यदिपठति शिवं प्राप्नुया-
दाशुधीरः ।।११।।

नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्र मिहयों देव्याः पठत्यादरात्-
धृदृत्वा मन्त्रमिदं तथैव समरे वाहौ करे वा गले।
राजानौ प्यरथो मदान्ध करिण स्सर्पा मृगेन्द्रादिकास्ते
वै यांति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिराः
सिद्धयः ॥१२॥

त्वं विद्या परमात्रिलोक जननी विघ्नौघ संछेदिनी
योषा कर्षण कारिणीत्रिजगतां आनंद संवर्द्धिनी।
दुष्टोच्चाटन कारिणी जनमन स्सं मोह सन्दायिनी
जिह्वाकीलन भैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ॥१३॥

विद्या लक्ष्मी स्सर्व सौभाग्य मायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्व
साम्राज्य सिद्धिः। मानं भोगोवश्य मारोग्य सौख्यं
प्राप्तं तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण ॥१४॥

यत्कृतं जप सन्नाहं गदितं परमेश्वरि। दुष्टानां
निग्रहार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तुते॥१५॥

ब्रह्मास्त्रमित विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
गुरुभक्ताय दातव्यं नदेयं यस्य कस्यचित्॥१६॥

पीताम्बरां द्विभुजां च त्रिनेत्रांगात्र को ज्वलाम्।
शिलामुग्दर हस्तां च स्मरेत्तां बगलामुखीम् ॥१७॥

इतिरुद्रयामले तन्त्रे श्री वगलामुखी स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अथ श्री वगलामुखी पीताम्बरा स्तोत्र भाषा

इस वगलामुखी स्तोत्र के नारद ऋषि दृष्टा है और श्री वगलामुखी देवता है इसके विनियोग में कहा गया है कि मेरी सभी विरोधियों के वचन मुख पैर गति वृद्धि को स्तम्भन करने में जप किया जाता है। इस देवी का ध्यान इस प्रकार है वगलामुखी के ध्यान से यह स्तोत्र प्रारम्भ होता है।

सुधा के याने अमृत के समुद्र बीच मणियों के मण्डप में रत्न की वेदी पर रखे सिंहासन पर विराजमान पीले रंग वाली, पीले वस्त्राभूषण धारण किये, पीली मालाओं से सुशोभित अंग वाली देवी मुग्दर और वैरी की जिह्वा को ग्रहण किये हुए स्मरण करता हूँ ॥१॥

जिह्वा के अग्रभाग को हाथ से खींचे हुए बांए हाथ से शत्रु को पीड़ा पहुँचाती हुई और दाहिने हाथ से गदा के द्वारा चोट करती हुई दो भुजी पीताम्बरा देवी को नमस्कार करता हूँ॥२॥

स्वर्ण के कुण्डलों से सुशोभित चमकदार सुन्दर कपोल स्थल सुवर्ण चम्पा की कांति से युक्त सुशोभित चन्द्रमुखी, गदा से वैरी पर मार करने वाली, जिह्वा को खींचती हुई, वैरी की वाणी मुख को स्तम्भित करने वाली वगलामुखी का स्मरण करता हूँ ॥३॥

अमृत सागर के बीच सुन्दर रक्तकमल पर विलास युक्त मण्डप में सुन्दर सिंहासन शत्रु के शिर को नीचा करने वाली प्रेतासना भगवती जो स्वर्ण की प्रभा वाले हाथ से वैरी की जिह्वा को खींचकर पीड़ा पहुँचाने वाली गदा को घुमाती हुई चारों तरफ इस प्रकार जो ध्यान पूर्वक भजते हैं उनकी समस्त आपत्तियाँ शीघ्र ही नष्ट हो जाती हैं ॥४॥

हे देवि ! तेरे चरण कमलों की पूजा जो भक्त पीले पुष्पों की अंजलि भरकर करते हैं और भक्ति से बांए हाथ में पुष्प रखकर साधक मन्त्र को मनन पूर्वक अक्षर युक्त जपे तथा पीठ सिंहासन का ध्यान पूर्वक बीज मंत्र का स्मरण करे यदि मनुष्य तो उसके वैरियों के मुँह वचन हृदय में जड़ता तत्काल उत्पन्न हो जाती है ।।५।।

ज्यादा बोलने वाला वादी मूक एवं गूंगा याने बोलती बन्द हो जाती है राजा निर्धन हो सकता है, अग्नि शांत हो जाती है, सज्जन दुर्जन हो जाता है। घमण्डी का गर्व खण्डन हो जाता है, ज्ञानवान जड़ हो जाता है। तेरे मन्त्र से नियंत्रित होते हैं हे श्री अविनाशिनी कल्याण एवं मंगलकरने वाली वगलामुखी तुमको नमस्कार है ॥६॥

वैरियों को नष्ट करने के लिये तेरा मन्त्र स्तोत्र और पावन यन्त्र वाचालों को नियंत्रण में लाने के लिये तीन लोक को जीतने के लिये है। हे माता श्री वगला यह सुन्दर नाम जिस प्राणी के मुख में है और तेरा नाम लेने से शीघ्र ही वैरी का मुख बँध जाता है ॥७॥

दुष्ट का स्तम्भन होता है भयंकर विघ्नों की शान्ति होती है दरिद्रता का निवारण होता है, भूचाल की शांति होती है। स्त्रियों का आकर्षण होता है। भाग्योदय हो जाता है उसके समान करुणामृत से मृत्यु मारण हे माता! तुम्हारे द्वारा हट जाता है ॥८॥

हे माता! मेरे शत्रु के मुख जिह्वा को नष्ट करो और कीलदो ब्रह्मगदा से उग्रगति का स्तम्भन करो। शत्रु को पीस दो शीघ्र रगड़ दो गदा के द्वारा हे गौर वर्णा पीताम्बरधारिणी पाप और विघ्नों का हरण करने वाली करुणापूर्ण दृष्टि से निहारने वाली वगले तुमको प्रणाम है ॥९॥

हे माता भैरवी, भद्रकाली, विजये, वाराही, विश्वश्रये, श्री नित्ये, वगले, महेशि, कमले, कामेशि, वामा, रमा मातंगी, त्रिपुरा, परात्परतरा, स्वर्गापवर्ग प्रदा मैं तेरा दास हूँ, सेवक हूँ मुझ पर कृपा करके रक्षा का हाथ रखो हे विश्व की ईश्वरी मेरी रक्षा करो ॥१०॥

आरम्भ करने में चोरी के समुदाय में हरण करने वालों के बीच पहरा देते समय बन्धन में जल एवं दरिया के बीच, तर्क में, विवाद में, विद्या की बहस में, राजा या राज्य की नाराजगी में, दिन के समय, रात के समय, वशीकरण में, स्तम्भन में, अथवा शत्रु के मारने के समय या निर्जन स्थान में जंगल में जाते समय, रुकते समय, अथवा तीनों काल में सुबह दोपहर और या वन में शाम के समय, जो बुद्धिमान पुरुष इसका पाठ करता है उसका मंगल होता है, और सब प्रकार से कल्याण होता है ॥११॥

जो इस देवी के पावन स्तोत्र का आदर पूर्वक पाठ करता है और युद्ध लड़ाई झगड़े के दौरान इसके यन्त्र को धारण करता है भुजा में, हाथ में वा कण्ठ में तो शत्रु राजा भी, मदान्ध हाथी, सर्प, सिंह इत्यादि उससे मोहित हो जाते हैं समस्त शत्रुओं का भी संमोहन हो जाता है और लक्ष्मी एवं धन की सिद्धियां स्थिर हो जाती है ॥१२॥

तुम परमविद्या ही त्रैलोक्य माता हो, विघ्न और पापों का छेदन करने वाली हो, स्त्रियों का आकर्षण करने वाली हो, तीन लोक को आनन्द बढ़ाने वाली, दुष्टों का उच्चाटन करने वाली, जन-गण-मन सम्मोहन करने वाली, जिह्वा का कीलन करने वाली भैरवी विजय करे ब्रह्मादि मन्त्रों की तरह से ॥१३॥

विद्या, लक्ष्मी, भाग्योदय, आयु, पुत्र, नाती, साम्राज्य की सुख सिद्धि मान, सम्मान, आदर, भोग, विलास, वशीकरण शक्ति, आरोग्यता, सुख प्राप्ति, मनुष्य को इस धरातल पर मिलता है ॥१४ ॥

जो तप की संख्या गिनती पूर्वक करता है और परमेश्वरी वगलामुखी का चिन्तवन करता है वह दुष्टों का निग्रह करता है इसलिए हे परमेश्वरी मैंने जो कुछ भी संख्या में जाप किया है चिन्तन किया है उसे ग्रहण करो जो दुष्टों के निग्रहार्थ है तुम्हें नमस्कार है ।।१५ ॥

यह तीन लोक में सुना गया ब्रह्मास्त्र के नाम से विख्यात स्तोत्र है इसे गुरु भक्त को देना अनिवार्य है अन्य किसी को नहीं देना चाहिए ।।१६ ॥

दो भुजी पीताम्बर धारिणी तीन नेत्रों वाली उज्ज्वल दिव्य अंग शिला मुग्दर हाथ लिये वगलामुखी का स्मरण करता हूँ ।।१७ ॥

यह रुद्रयामल तन्त्र में लिखा हुआ श्री वगलामुखी देवी पीताम्बरा का ब्रह्मास्त्र नामक स्तोत्र पूरा हुआ ।

अथ श्री वगलामुखी देवी सहस्रनाम

ॐ सुरालय प्रधानेतु देवदेव महेश्वरम्। शैलाधिराज तनया संग्रहे तमुवाचह ॥१॥

श्री॰ देव्युवाच ॥ परमेष्ठिनं परंधाम प्रधान परमेश्वरं। नाम्नां सहस्रं वगला मुख्याद्या ब्रूहि वल्लभ ॥२॥ ईश्वर उवाच॥

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि नामधेय सहस्रकम्। परब्रह्मास्त्र विद्यायाश्चतुर्वर्ग फलप्रदम् ॥३॥

गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैक वन्दितम्। अतिगुप्ततरं विद्या सर्व तन्त्रेषु गोपिता ॥४॥

विशेषतः कलियुगे महासिद्धौघ दायिनी। गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥५॥

अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिवसुव्रते।

रोधिनी विघ्नसंघानां मोहिनी परयोषिताम् ॥६॥

स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी पर वादिनाम्।
पुरा चैकार्णवेघोरे काले परमभैरवः ॥७॥

सुन्दरी सहितो देवः केशवः क्लेश नाशनः।
उरगासनमासीनो योगनिद्रामुपागमत ॥८॥

निद्राकाले च ते काले मयाप्रोक्तः सनातनः।
महास्तम्भन करंदेवि स्तोत्रं वा शतनामकम् ॥६॥

सहस्रनाम परमं वददेवस्य कस्यचित्। श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु शंकरदेवेश परमाति रहस्यकम् ॥१०॥

अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः।
गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात्सिद्धि हानिकृत ॥११॥

ओमस्य श्री बगलाअम्बा पीताम्बरी देवीसहस्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः अनुष्टुप्छंदो श्री जगद्वश्यकरी पीताम्बरी वगलादेवी देवता सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः॥अथध्यानम्॥ ॐ पीताम्बर परीधानां पीनोन्मत पयोधराम्। जटामुकुट शोभाढ्यां पीतभूमि सुखासनाम् ॥१२॥

शत्रोर्जिह्वां मुग्दरं च बिभ्रतीं परमां कलाम्।
सर्वागम पुराणेषु विख्यातां भुवन त्रये ॥१३॥

सृष्टि स्थिति विनाशानां आदिभूतां महेश्वरीम्।
गोप्या सर्व प्रयत्नेन शृणुतां कथयामिते ॥१४॥

जगद् विध्वंसिनी देवीं अजरामर कारिणीम्।
तां नमामि महामायां महदैश्वर्य दायिनीम ॥१५॥

अथमन्त्रोद्धारः

प्रणवं पूर्वमुध्दृत्य स्थिर मायां ततोवदेत्। ‘वगलामुखी सर्वेति दुष्टाना वाच मेवच॥१६॥

मुखं पदंस्तंभयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत्। विनाशयेति तारंच स्थिर मायां ततो वदेत्॥१७॥

वन्हिप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्ग फलप्रदः। ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या ब्रह्म माता सनातनी॥१८॥

ब्रह्मेशी ब्रह्म कैवल्य वगला ब्रह्मचारिणी। नित्यानन्दा नित्य सिद्धा नित्यरूपा निरामया॥१६॥

संधारिणी महामाया कटाक्ष क्षेम कारिणी। कमला विमला नीला रत्न कान्तिगुणाश्रिता॥२०॥

कामप्रिया कामरता काम कामस्वरूपिणी। मंगला विजया जया सर्वमंगल कारिणी ॥२१॥

कामिनी कामिनी काम्या क़ामुका कामचारिणी। कामप्रिया कामरता कामाकाम स्वरूपिणी॥२२॥

कामाख्या कामवीजस्था कामपीठ निवासिनी। कामदा कामहा काली कपाली च करालिका॥२३॥

कंसारि कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा। कात्यायनी केशवा च करुणा काम केलिभुक् ॥२४॥

क्रियाकीर्तिः कृत्तिका च काशिका मथुराशिवा। कालाक्षी कालिका काली धवलानन सुन्दरी॥२५॥

खेचरी च खमूर्तीश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधावरा। खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्प्पर प्रिया॥२६॥

गंगा गौरी गामिनी च गीता गोत्र विवर्द्धिनी। गोधरा गोकरा गोधा गंधर्वपुर वासिनी॥२७॥

गंधार्वा गंधर्वकला गोपनी गरुडासना।
गोविन्द भावा गोविन्दा गांधारी गंधमादिनी ॥२८॥
गौरांगी गोपिकामूर्ति गोंपी गोष्ठ निवासिनी।
गंधा गजेन्द्र गामान्या गदाघर प्रिया ग्रहा ॥२६॥
घोर घोरा घोर रूपा घनश्रोणी घन प्रभा।
दैत्येन्द्र प्रबला घण्टावादिनी घोर निस्स्ववना ॥३०॥
डाकिन्युमा उपेन्द्राच उर्वशी उरगासना।
उत्तमाउन्नता उन्ना उत्तम स्थान वासिनी ॥३१॥
चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्प हरेति च।
उग्रचण्डा चंडचण्डा चण्डदैत्य विनाशिनी ॥३२॥
चण्ड रूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी।
चतुर्भुजा प्रचंडा च चराचर निवासिनी ॥३३॥
छत्राप्राय शिशरोवाहा जला छलतरा छली।
क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रिय क्षयकारिणी ॥३४॥
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदापरा।
जायिनी जयिनी ज्योत्स्ना जटाधर प्रियाजिता ॥३५॥
जितेन्द्रिया जित क्रोधा जयमाना जनेश्वरी।
जितमृत्यु र्जरातीता जान्हवी जनकात्मजा ॥३६॥
झंकारा झंझरी झण्टा झंकारी झक शोभिनी।
झंखा झमेशा झंकारी योनिकल्याण दायिनी ॥३७॥
झंझरा झमुरी झारा झरा झरतरा परा।
झंझा झमेता झंकारी झणा कल्याणदायिनी ॥३८॥
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शंकर प्रिया।
टंकारी टिटिका टीका टंकिनी च टवर्गगा ॥३६॥

टाटाटोपा टटपतिष्टमनी टमन प्रिया।
ठकार धारिणी ठीका ठंकरी ठिकर प्रिया ॥४०॥
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमन प्रिया।
डारहा डाकिनी डारा डामरा डामर प्रिया ॥४१॥
डंखिनी डड युक्ताच डमरु कर वल्लभा। ढक्का-
ढक्की ढक्क नादा ढोल शब्द प्रबोधिनी ॥४२॥
ढामिनी ढामन प्रीताढग तन्त्र प्रकाशिनी।
अनेक रूपिणी अम्बा अणिमा सिद्धि दायिनी॥४३॥
अमंत्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता।
तारा तंत्रावली तन्त्र तत्व रूपा तपस्विनी॥४४॥
तंरगिणी तत्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा॥ तपो-
रूपा तत्वदात्री तपप्रीति प्रघर्षिणी ॥४५॥
तन्त्रा यन्त्राऽर्चनपरा तलातल निवासिनी।
तल्पदा तल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः॥४६॥
स्थाणु प्रिया स्थपरा स्थिता स्थान प्रदायिनी।
दिगम्बरा दयारूपा दावाग्नि दमनीदमा॥४७॥
दुर्गादुर्ग परादेवी दुष्ट दैत्य विनाशिनी।
दमन प्रमदा दैत्य दयादान परायणा॥४८॥
दुर्गति नाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भ वर्जिता।
दिगम्बर प्रियादम्भा दैत्यदम्भ विदारिणी॥४६॥
दमना दशन सौन्दर्या दानवेन्द्र विनाशिनी।
दयाधरा च दमनी दर्भपत्र विलासिनी॥५०॥
धारिणी धरिणी धात्री धराधर प्रिया।
धराधर सुतादेवी सुधर्मा धर्म चारिणी॥५१॥

धर्मज्ञा धवलाधूला धनदाधन वर्द्धिनी।
धीराधीरा धीरतर धीर सिद्धि प्रदायिनी॥५२॥
धन्वन्तरि धराधीरा ध्येयाध्यान स्वरूपिणी।
नारायणी नारासिंही नित्यानन्द नरोत्तमा॥५३॥
नक्ता नक्तावती नीत्या नीलजीभूत सन्निभा।
नीलांगी नील वस्त्रा च नील पर्वत वासिनी॥५४॥
सुनील पुष्पखचिता च नील जम्बुसम प्रभा। नित्या-
ख्याषोडशी विद्या नित्या नित्य सुखावहा॥५५॥
नर्मदा नन्दना नन्दा नन्दानन्द विवर्द्धिनी।
यशोदानन्द तनया नन्दनोद्यान वासिनी॥५६॥
नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी।
नमिताशेष जनता नमस्कारवती नमः ॥५७॥
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरा विभूषिता।
पीतमाल्याम्बर धरापीताभापिंगमूर्द्धजा ॥५८॥
पीतपुष्पार्चन रतापीत पुष्प समर्चिता।
परप्रभा पितृपतिः परसैन्य विनाशिनी ॥५९॥
परमा परतन्त्रा च पर मन्त्रा परात्परा।
पराविद्या परासिद्धिः परास्थान प्रदायिनी ॥६०॥
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमाला विभूषिता।
पुरातना पूर्व परापर सिद्धि प्रदायिनी ॥६१॥
पीता नितम्बिनी पीता पीतोन्नतपयस्तनी।
प्रेमाप्रमध्यमा शेषा पद्मपत्र विलासिनी ॥६२॥
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा।
पद्मासना पद्मप्रिया पद्मराग स्वरूपिणी ॥६३॥

पावनी पालिका पात्री परमा वरदा शिवा।
प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्म स्वरूपिणी ॥६४॥
जिनेश्वर प्रियादेवी पशुरक्त रतप्रिया।
पशुमांसप्रिया पर्णा परामृत परायणा ॥६५॥
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी।
फुल्लारविंद वदनी फुल्लोत्पल शरीरिणी ॥६६॥
परानन्द प्रदावीणा पशुपाश विनाशिनी।
फूत्कारा फूत्परा फेणी फुल्लेन्दी वर लोचना॥६७॥
फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोट च फट् स्वरूपिणी। स्फटिका घुटिका घोरा स्फटिकाद्रि स्वरूपिनी॥६८॥
वरांगना वरधरा वाराही वासुकीवरा।
विन्दुस्था बिन्दुनी वाणी विन्दु चक्र निवासिनी॥६६॥
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासि जनप्रिया।
वेदविद्या विरूपाक्षी विश्व युग् बहुरूपिणी॥७०॥
ब्रह्मशक्ति विष्णुशक्तिः पंचवक्त्रा शिंवप्रिया।
वैकुण्ठ वासिनी देवी वैकुण्ठ पद् दायिनी ॥७१॥
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्म महेश्वरी।
भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा ॥७२॥
भवपाराभवधारा भाग्यवत् प्रिय कारिणी।
भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भ दैत्य विनाशिनी ॥७३॥
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रका।
भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ॥७४॥
भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा।

भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी ॥७५॥
भगलिंग प्रिया देवी भगलिंग परायणा।
भगलिंग स्वरूपा च भगलिंग विनोदिनी ॥७६॥
भगलिंग रतादेवी भगलिंग निवासिनी।
भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा ॥७७॥
भगवेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपणी।
भगलिंगांग संभोगा भग लिंगासवावहा ॥७८॥
भगलिंग समाधुर्य्या भगलिंग निवेशिता।
भगलिंग सुपूजा च भगलिंग समन्विता ॥७९॥
भगलिंग विरक्ता च भगलिंग समावृत्ता।
माधवी माधवी मान्या मधुरा मधुमानिनी ॥८०॥
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा।
महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः ॥८१॥
मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना।
मेनिका मानिनी मान्या मणिरत्न विभूषणा ॥८२॥
मल्लिका मौलिका माला मालाधर मदोत्तमा।
मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ॥८३॥
मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंह महासती।
महेन्द्र वल्लभा भीमा मौल्यं च मिथुलात्मजा॥८४॥
महाकाल्या महाकाली महाबुद्धि र्महोत्कटा।
माहेश्वरी महामाया महिषासुर घातिनी ॥८५॥
मधुरा कीर्ति मत्ता च मत्त मातंग गामिनी।
मद प्रिया मांसरता मत्त युक्काम कारिणी ॥८६॥
मैथुन्य वल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ।

मरीचिर्मा रतिर्माया मनोबुद्धि प्रदायिनी ॥८७॥
मोहा मोक्षा महालक्ष्मी र्महत्पद प्रदायिनी।
यम रूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ॥८८॥
याम्या यमवती युद्धा यदोः कुल विवर्द्धिनी।
रमा रामाराम पत्नी रत्न माला रति प्रिया॥८६॥
रत्नसिंहासन स्था च रत्नाभरण मण्डिता।
रमणी रमणीया च रत्या रस परायणा ॥६०॥
रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्द्धिनी।
रमणारि परिभ्राज्यारै धराधिक रत्नजा ॥६१॥
रावीरस स्वरूपा च रात्री राजसुखावहा।
ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ॥६२॥
रक्तप्रिया रक्तवती रंगिणी रक्तदंतिका।
लक्ष्मी र्लज्जा लतिकाच लीला लग्नानिताक्षिणी॥६३॥
लीला लीलावती लोमाहर्षाल्हादनपट्टिका।
ब्रह्म स्थित ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेद वन्दिता॥६४॥
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी।
वेदांगना वेदरुपा वनिता विनतावसा॥६५॥
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्म परायणा।
विंध्यस्था विन्ध्यवासी च विन्दुयुग् विन्दु भूषणा॥६६॥
विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कला।
वामा चार प्रिया वन्हि र्वामाचार परायणा॥६७॥
वामाचार रतादेवी वामदेव प्रियोत्तमा।

बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरण मालिनी ॥६८॥
बन्धमोचन कर्त्रीच वारुणा वरुणालया।
शिवा शिव प्रिया शुद्धा शुद्धांगी शुक्ल-वर्णिका॥६६॥
शुक्लपुष्प प्रिया शुक्ला शिव धर्म परायणा।
शुक्लस्था शुक्लिणी शुक्लरुपा शुक्ल पशुप्रिया॥१००॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रशुक्रा रुपाच शुक्रिका।
षण्मुखी च षडंगाच षट्चक्र निवासिनी॥१०१॥
षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका।
षडंगयुवती देवी षडंग प्रकृतिर्वशी॥१०२॥
षडानना षड्ंगसाच षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया।
षड्ंगवादा षोडशी च षोढान्यास स्वरूपिणी॥१०३॥
षट्चक्रभेदनकरी षट्चकस्थ स्वरूपिणी।
षोडश स्वरूपा च षण्मुखी षड्दान्विता॥१०४॥
सनकादि स्वरूपा च शिवधर्म परायणा।
सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा॥१०५॥
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धासिद्ध स्वरूपिणी।
हरा हरिप्रिया हारा हरिणी हार युक् तथा॥१०६॥
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया।
हेतुप्रिया हेतुरता हिताहित स्वरूपिणी॥१०७॥
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्र घण्टविभूषणा।
क्षयं करीक्षितींशा च क्षीणमध्य सुशोभना॥१०८॥
अजानन्ता अपर्ण्णा च अहल्या शेषशायिनीं।
स्वन्तर्ग्गता च साधूना मन्तरानन्त रूपिणीं॥१०६॥
अरूपा अमलांचार्द्धा अनंतगुण शालिनी।

स्वविद्या विद्यकाविद्या विद्या चाविन्द लोचना ॥११०॥
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती।
अल्पा स्वल्पा अनल्पाद्या अणिमा सिद्धिदायिनी ॥१११॥
अष्टसिद्धिप्रदा देवीरूप लक्षण संयुता।
अरविन्द मुखादेवी मांगल्य सौख्य प्रदायिनी ॥११२॥
आदिविद्या जाति भूता आदि सिद्धि प्रदायिनी।
सीत्कार रूपिणी देवी सर्वासन विभूषिता ॥११३॥
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थ निवासिनी।
इन्द्राक्षी इन्द्र वज्रा च इन्द्रमद्यो क्षणी तथा ॥११४॥
ईलाकाम निवासं च ईश्वरीश्वर वल्लभा।
जननी चेश्वरी दीना भेदाचेश्वर कर्मकृत् ॥११५॥
उमाकात्यायनी ऊर्द्धा मींनाचोत्तर वासिनी।
उमापति प्रियादेवीं शिवा चोंकार रूपिणी ॥११६॥
उरगेन्द्र शिरोरत्ना उरगोरन वल्लभा।
उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणि भूषणा ॥११७॥
उर्ध्वदन्तोत्तमांगीच उत्तमाचोर्ध्व केशिनीं।
उमासिद्धि प्रदाया च उरगासन संस्थिता ॥११८॥
ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धिसिद्धि प्रदायिनीं।
उत्सवोत्सवसींमान्ता कामिका च गुणान्विता ॥११६॥
एला एकार विद्या च एर्णी विद्याधरा तथा।
ॐकार वलयोपेता ओंकार परमाकला ॥१२०॥
ॐ वदवद वदवाणी च ओंकाराक्षर मण्डिता।
ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐ लोकपरवासिनी ॥१२१॥
ओंकार मध्याबीजा च ॐ नमो रूपधारिणी।

परब्रह्म स्वरूपाच अंशुकांशुक वल्लभा ॥१२२॥
ओंकार अः प्राङ् मन्त्रा च अक्षराक्षर विभूषिता।
अमन्त्रा मन्त्र रूपा च षट् शोभा समन्विता ॥१२३॥
प्रणवोंकार रूपा च प्रणवोच्चार भाक्पुनः।
ह्रींकार रूपा ह्रींकारी वाग् बीजाक्षर भूषणा ॥१२४॥
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासन संस्थिता।
बीजाख्या नेत्र हृदया ह्रीं बीजा भुवनेश्वरी ॥१२५॥
क्लीं कामराजा क्लिन्ना च चतुर्वर्ग फलप्रदा।
क्लीं क्लीं क्लीं रूपिका देवी क्रीं क्रीं क्रीं नाम धारिणी ॥१२६॥
कमलाशक्ति बीजा च पाशांकुश विभूषिता।
श्रीं श्रीं कारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा ॥१२७॥
ओं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमाकला।
ह्रीं ल्क्लीं श्रीं कार स्वरूपा सर्व कर्म फलप्रदा ॥१२८॥
सर्वाढ्या सर्व देवी च सर्व सिद्धि प्रदा तथा।
सर्वज्ञा सर्व शक्तिश्च वाग्विभूति प्रदा सदाः ॥१२९॥
सर्व मोक्षप्रदा देवी सर्व भोग प्रदायिनी।
गुणेन्द्र वल्लभा वामा सर्वशक्ति प्रदायिनी ॥१३०॥
सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धप्रदायिनी।
सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्व सिद्धेश्वरी तथा ॥१३१॥
सर्व प्रियंकरी चैव सौख्य प्रदायिनी। सर्वानन्द प्रदादेवी ब्रह्मानन्द प्रदायिनी ॥१३२॥
मनोवांछित दात्री च मनोवृद्धि समन्विता। अकारा-दिक्षकारान्तादुर्गा दुर्गार्ति नाशिनी ॥१३३॥

पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट् करी।
स्ववर्गा देव वर्ग्गा च तवर्गा च समन्विता।।१३४।।
अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा।
तत्व सिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी।।१३५।।
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च।
वंश करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीतिच।।१३६।।
मातंगी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा।
सिद्धमोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्द प्रदायिनी।।१३७।।
रक्तांगी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दन भूषिता।
स्वल्प सिद्धिस्सूकल्पा च दिव्याचारण शुक्रभा।।१३८।।
संक्रांतिः सर्वविद्या च सत्य वासरभुषिता।
प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका।।१३६।।
पंचमीं चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा।
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ।।१४०।।
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यच पूर्णिमा।
अमावश्या तथा पूर्वा उत्तरापरिपूर्णिमा ।।१४१।।
खङ्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा।
भुशुण्डिचापिनी बाणा सर्वायुध विभूषणा ।।१४२।।
कुलेश्वरी कुलवती कुलाचार परायणा ।
कुलकर्म सुरक्ता च कुलाचार प्रवर्द्धिनी ।।१४३।।
कीर्तिः श्रीश्चरमा रामा धर्मार्थ सततं नमः ।
क्षमा धृतिः स्मृति र्मेधा कल्पवृक्ष निवासिनी।।१४४।।
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्या विबोधिनी।
साध्यासिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च।।१४५।।

काली कराली काल्या च कालदैत्य विनाशिनी।
कौलिनी कालिकी चैव कचटतपवर्णिका ॥१४६॥
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भणी तथा।
स्राविणी द्राविणी देवी भेरुण्डा विन्ध्यवासिनी॥१४७॥
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वाला माला समाकुला।
भिन्न-भिन्न प्रकाशा च विभिन्न भिन्नरूपिणी ॥१४८॥
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्र सम्भावानिला।
कश्यपी विनता ख्याता दितिजादितिरेव च॥१४६॥
कीर्तिकाम प्रियादेवी कीर्त्यां कीर्ति विवर्द्धिनी।
सद्योमांस समालब्धा सद्यश्छिन्नासि शंकरा॥१५०॥
दक्षिणाचोत्तरा पूर्वा पश्चिमादिक् तथैव च।
अग्निनैर्ऋतिवायव्या ईशान्यादिक्तथा स्मृता॥१५१॥
ऊर्ध्वंगाधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका।
चतुर्वगा चतुर्वणा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा ॥१५२॥
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा।
चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्ग फलप्रदा ॥१५३॥
धात्री विधात्री मिथुना नारी नायक वासिनी।
सुरा मुदा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा॥१५४॥
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणा कालिकाशिवा।
नील्या सरस्वती सात्वंवयला छिन्नमस्तका॥१५५॥
सर्वेश्वरी सिद्ध विद्या परापरमदेवता ।
हिंगुला हिंगुलांगी च हिंगुलाधर वासिनी ॥ १५६॥
हिंगुलोत्तम वर्णाभा हिंगुलाभरणा च सा जाग्रती।
च जगन्माता जगदीश्वर वल्लभा॥१५७॥

जनार्दन प्रियादेवी जय युक्ता जयप्रदा।
जगदानन्दकारी च जगदाल्हाद कारिणी॥१५८॥
ज्ञानदान करा यज्ञा जानकी जनकप्रिया।
जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्नि समप्रभा॥१५६॥
विद्याधरा च बिम्बोष्ठी कैलासाचल वासिनी।
विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्र फलप्रदा॥१६०॥
मन्त्ररूपा परादेवी तथैव गुरू रूपिणी।
गया गंगा गोमती च प्रभाषा पुष्करापि च॥१६१॥
विंध्याचल रतादेवी विंध्याचल निवासिनी।
बहुरूपा बहुसुन्दरी च कंसासुर विनाशिनी॥१६२॥
शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्र हरापि च।
दुर्गा शिव शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया॥१६३॥
सर्वलोक प्रणेत्री च सर्वरोग हरापि च।
मंगलाशोभना शुद्धानिष्फला परमा कला॥१६४॥
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता वासितानना।
सदाशिवा उमाक्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा॥१६५॥
सर्वदेवमयी देवी सर्वागम भयापहा।
ब्रह्मेश विष्णु नमिता सर्वकल्याण कारिणी॥१६६॥
योगिनी योगमाता च योगीन्द्र हृदय स्थिता।
योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्द योगिनी॥१६७॥
इन्द्रादि नमितादेवी ईश्वरीचेश्वर प्रिया।
विशुद्धिदा भय हरा भक्तद्वेषिभयंकरी॥१६८॥
भववेषा कामिनी च भेरूण्डाभय कारिणी।
बलभद्रप्रिया कारा संसारार्णवतारिणी॥१६६॥

पंचभूता सर्वभूताविभूतिर्भूतिधारिणी। सिंहवाहा महामोहा मोह पाशविनाशिनी॥ १७०॥

मदुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुग्दर धारिणी। सावित्री च महादेवी पर प्रियविनायिका॥१७१॥

यमदूती च पिंगाक्षी वैष्णवी शंकरी तथा। चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी॥१७२॥

चन्दनेन्द्र समायुक्ता चण्डदैत्य विनाशिनी। सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा॥१७३॥

महाभोगवती देवी महामोक्ष प्रदायिनी। विश्वहंत्री विश्वरूपा विश्वसंहार कारिणी॥१७४॥

धात्री च सर्व लोकानां हित कारण कामिनी। कमला सूक्ष्मदा देवीं धात्री हर विनाशिनी॥१७५॥

सुरेन्द्र पूजिता सिद्धा महातेजोवतीतिच। परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षण कारिणी॥१७६॥

इतिते कथितं देवि पीतानाम सहस्रकम्। पठेद्वापाठयेद्वापि सर्व सिद्धि र्भवेत्प्रिये॥१७७॥

इतिमे विष्णुनाप्रोक्तंमहास्तम्भ करं परम्। प्रातः काले च मध्यान्हे संध्याकाले च पार्वती॥१७८॥

एकत्रितः पठेदेतत्सर्वसिद्धि र्भविष्यति। एक बारं पठेद्यस्तु सर्व पातक शमोभवेत्॥१७६॥

द्विवारं पठेद्यस्तु विघ्नेश्वर समोभवेत्। त्रिवारं पठनाद्देवि सर्वा सिद्धयति सर्वथा॥१८०॥

श्रवणस्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुब्रते। मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम्॥१८१॥

विद्यार्थी लभते विद्यातर्कव्याकरणान्विताम्।
महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिः प्रजायते॥१८२॥
क्षोणीपति र्वशस्तस्य स्मरणे सदृशोभवेत्।
यःपठेत् सर्वदा भक्तया श्रेयस्तुभवतिप्रिये॥१८३॥
गणाध्यक्ष प्रतिनिधिः कवि काव्य परोवरः।
गोपनीयं प्रयत्नेन जनने जारवत्सदा॥१८४॥
हेतु युक्तो भवेन्नित्यं शक्ति युक्तः सदाभवेत्।
य इदं पठतेनित्यं शिवेन संदृशोभवेत्॥१८५॥
जीवनं धर्मार्थ भोगीस्यामृतो मोक्षपतिर्भवेत्।
सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः॥१८६॥
स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदति।
सुचित्ता श्चसुराः सर्वे स्तवराजस्यकीर्तनात्॥१८७॥
पीताम्बरं परीधाना पीतगंधानुलेपना। परमोदये कीर्तिः
स्यात्परतः सुरसुन्दरी॥१८८॥

इति श्री उत्कंट शम्बरे नागेन्द्र प्रयाण तन्त्रेषोड्शसहस्रे विष्णुशंकर संवादे पीताम्बरी महाविद्या सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम्॥

अथ श्री वगलामुखी देवी पीताम्बरा

सहस्रनाम भाषा टीका

देवताओं के निवास में मुख्य देवों के देव महेश्वर को हिमालय पुत्री द्वारा संग्रहीत वस्तु के सम्बन्ध में बोली॥१॥

श्री देवी ने कहा कि हे परमेष्ठि पुरुष परम तेजस्वरूप प्रमुख परमेश्वर आद्या श्री वगलामुखी के सहस्रनाम प्रियतम बोलिये॥२॥

ईश्वर ने कहा कि हे देवी सहस्रनामों को सुनो कहता हूँ। यह परब्रह्मास्त्र विद्या चारों पदार्थ प्रदान करने वाली है॥३॥

अत्यन्त गुप्त समस्त सिद्धादिकों से स्तुतमान एवं वन्दनीय है देवि अति रहस्यतम विद्या जो कि सभी तन्त्रों में गुप्त है॥४॥

विशेष करके कलयुग में महासिद्धि की देने वाली है ॥ इसको प्रयत्न पूर्वक गुप्त रखना चाहिये छुपाकर रखना आवश्यक है यह गोपनीय है ॥५ ॥

यह अप्रकाशित है सत्य है अपनी गुप्तेन्द्रिय जिस तरह छिपाकर रखते हैं वैसे ही हे सुव्रते ! इसे रखना चाहिये। विघ्नों का विरोध करने वाली पराई स्त्रीयों का सम्मोहन करने वाली ॥६ ॥

राजा की सेना को स्तम्भन कर देने वाली शत्रुओं पर जबर्दस्त वाणी का प्रहार करने वाली।पहले समय में जब कि सातों समुन्दर एकार्णव के रूप में भयंकर समय में याने प्रलयकालीन रात्री में परम भैरव ॥७ ॥

सुन्दरी सहित क्लेश के नाश करने वाले केशवदेव भगवान शेषनाग की शैया के आसन पर योगनिद्रा में लीन थे ॥८ ॥

उस योगनिद्राकाल में उस समय मैंने यह सनातन पुरातन महा स्तम्भन कारक देवी का स्तोत्र अष्टोत्तर शतनाम कहा था ॥९ ॥

देवताओं का परमश्रेष्ठ सहस्रनाम कहियेगा। इस पर श्री भगवान बोले कि हे देवेश्वर शंकर परम प्रशस्त अति रहस्मय वस्तु को सुनो ॥१० ॥

मैं ब्रह्मा जिसके प्रसाद से विष्णु सर्वेश्वर हैं इसे प्रयत्न पूर्वक गुप्त रखना इसके जाहिर करने से सिद्ध की हानि होती है ॥११ ॥

इस पीताम्बरी श्री वगलामुखी देवी के सहस्रनाम स्तोत्र मन्त्र का भगवान सदाशिव ऋषि है। अनुष्टुप्छंद है श्री जगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवी देवता हैं समस्त अभीष्ट सिद्धि में इसका विनियोग है इसके बाद ध्यान करे।

पीताम्बरधारे पीला वस्त्र ओढ़े,ऊँचे उठे हुए स्तन वाली.जटाओं पर मुकुट जिसके सुशोभित है, पीली मिट्‌टी वाली भूमि पर सुन्दर स्वच्छ आसन है ॥१२ ॥

शत्रु की जिह्वा को पकड़े और मुग्दर को घुमाती हुई परमाकला समस्त आगम पुराणों में तीन लोक में विख्यात एवं प्रसिद्ध ॥१३ ॥

सृष्टि स्थिति विनाश में आदि महेश्वरी सब प्रकार से जो गुप्त रही है उसे सुनो तुमसे कहता हूँ ॥१४ ॥

जगत का विध्वंस करने वाली देवी अजर अमर करने वाली महामाया महा ऐश्वर्य प्रदान करने वाली को नमस्कार करता हूँ ॐ पहले फिर ह्लीं इसके बाद वगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय

बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा यह मन्त्र चतुर्वर्ग चारों पदार्थ.धर्म अर्थ काम मोक्ष प्रदान करने वाला है। ब्रह्मास्त्र, ब्रह्मविद्या, ब्रह्ममाता, सनातनी, ब्रह्ममेशी, ब्रह्मकैवल्या, वगला, ब्रह्मचारिणी, नित्यानन्द, नित्यं, सिद्धा, नित्यरूपा, निरामया, संधारिणी, महामाया, कटाक्षक्षेमकारिणी, कमला, विमला, नीला, रत्नकान्ति, गुणाश्रिखचिता, कामप्रिया, कामरता, काम, काम, स्वरूपिणी, मंगला, विजया, जया ,सर्व मंगल कारिणी, कामिनी, कामिनी काम्या, कामुका, कामचारिणी, कामप्रिया, कामरता, कामा काम स्वरूपिणी, कामाख्या, कामवीजस्था, कामपीठ निवासिनी, कामदा, महाकाली, कपाली, करालिका, कंसारि , कमला, कामा, कैलाशेश्वर वल्लभा, कात्यायनी, केशवा, करुणा, कामकेलिभुक् क्रिया कीर्ति, कृत्तिका, काशिका, मथुरा, शिवा, कालाक्षी, कालिका, काली धवला, नगसुन्दरी,खेचरी, खमूर्ती, क्षुद्रा, क्षुद्रक्षुधावरा, खंग हस्ता, खगरता, खगिनी, खर्पर प्रिया,गंगागौरी, गामिनी, गीता, गोत्र, विवर्द्धिनी, गोधरा, गोकरा, गोधा,गंधर्वपुर वासिनी,गंधर्वा, गंध-र्व, कलागोपनी, गरुडासना, गोविन्द भावा, गोविन्दा, गान्धारी, गंध मादिनी, गौरांगी, गोपिका मूर्ति, गोपी ,गोष्ठ, निवासिनी, गंन्धा, गजेन्द्र, गामान्या, गदाधर प्रिय, ग्रहा, घोर घोरा, घोररूपा, घनश्रोणी, घन प्रभा, दैत्येन्द्र प्रबला, घण्टा वादिनी, घोर निस्वना, डाकिनी, उमा, उपेन्द्र, उर्वशी ,उरगासना, उत्तमा, उन्नता, उन्ना, उत्तम स्थान वासिनी, चामुण्डा ,मुण्डिता, चण्डी; चण्डदर्पहरा, उग्रचण्डा, चण्ड चण्डा, चण्डदैत्य विनाशिनी, चण्डरूपा प्रचण्डा, चण्डा चण्डशरीरिणी, चतुर्भुजा प्रचण्डा, चराचर निवासिनी, क्षत्रप्रायः, शिरोवाहा छला, छलतरा ,छली, क्षत्ररूप ,क्षत्रधरा, क्षत्रियक्षय, कारिणी ,जया, जयदुर्गा, जयन्ती, जयदा, परा जायिनी, जयिनी ज्योत्स्ना, जटाधर, प्रियाजिता, जितेन्द्रिया, जित क्रोधा, जयमाना, जनेश्वरी, जितमृत्यु, जरातीता, जान्हवी, जनकात्मजा, झंझरा, झंझरी, झण्टा झंकारी, झक शोभिनी, झखा झमेशा, झंकारी, योनि ,कल्याण दायिनी, झंझरा, झमुरी, झाराझरा, झरतरा ,परा, झंझाझमेता, झंकारी ,झणा, कल्याण्दायिनी ,ईमना, मानसी, चिन्त्या, ईमुना, शंकर प्रिया, टंकारी, टिटिका, टीका टंकिनी, टवर्गगा, टापाटोपा, टटपतिष्टमनी, टमन प्रिया, ठकार धारिणी, ठीका ठंकरी ,ठिकरप्रिया, ठेकठासा, ठकरती, ठामिनी,ठमन प्रिया डारहा, डाकिनी डारा, डामरा डमर प्रिया,डखिनी, डडयुक्ता, घ डमरूकर, वल्लभा ,ढक्का,

ढक्की, ढक्कनादा, ढोल शब्द प्रबोधिनी, ढामिनी, ढामन ,प्रीता, ढम तन्त्र प्रकाशिनी, अनेक रूपिणी, अम्बा,अणिमा, सिद्धि दायिनी ,अमंत्रिणी, अणुकरी, अणुमद्भानु,संस्थिता, तारा, तंत्रावती, तन्त्र, तत्वरूपा, तपस्विनी,तरंगिणी, तत्वपरा, तन्त्रिका, तन्त्रविग्रहा, तपोरूपा, तत्वदात्री, तपप्रीति, प्रघर्षिणी, तन्त्रा, यन्त्रार्चन, परा तलातल निवासिनी, तल्पदा, त्वल्पदा, काम्या,स्थिरा, स्थिर तरा, स्थिति स्थाणुप्रिया, स्थपरा, स्थिलता स्थान प्रदायिनी, दिगम्बरा, दयारूपा, दावाग्नि, दमनीदमा, दुर्गा, दुर्गपरा, देवी,दुष्ट दैत्य विनाशिनी, दमन प्रमदा, दैत्य दयादान, परायणा,दुर्गति नाशिनी, दान्ता, दम्भिनी, दम्भ वर्जिता, दिगम्बर प्रिया, दम्भा, दैत्य दम्भ विदारिणी, दमना, दशन, सौंदर्या, दानवेन्द्र विनाशिनी, दया धरा, दमनी, दर्भपत्र विलासिनी, धारिणी, धरिणी, धात्री, धराधर, धरप्रिया, धराधर, सुता देवी, सुधर्मा, धर्मचारिणी, धर्मज्ञा, धबला, धूला, धनदा, धनवर्द्धिनी, धीरा, धीरा धीरतरा, धीर सिद्धि प्रदायिनी, धनवंतरि, धरा धीरा, ध्येया ध्यान, स्वरूपिणी, नारायणी, नारसिंही, नित्यानन्द, नरोत्तमा, नक्ता, नक्तंवती, नित्या, नीलजीमूत, सन्निभा, नीलांगी, नीलवस्त्रा, नीलपर्वतवासिनी, सुनील, पुष्प खचिता, नीला, जम्बु समप्रभा, नित्याख्या, षोडशीविद्या, नित्या, नित्य सुखावहा, नर्मदा, वन्दना, नन्दा, नन्दानन्द, विवर्द्धिनी, यशोदा, नन्द तनया, नन्दनोद्यान, वासिनी, नागा, नाका, नागबुद्धा, नागपत्नी, नागिनी, नमिता, शेष, जनता, नमस्कार वती नमः ,पीताम्बरा, पार्वती, पीताम्बर विभूषिता, पीत माल्याम्बराधरा, पीताभा, पिंगमूर्द्धजा, पीत पुष्पार्चनरता, पीतपुष्प समर्चिता, परप्रभा, पितृपतिः, परसैन्य, विनाशिनी, परमा,परतन्त्रा,परमन्त्रा, परात्परा, पराविद्या, परासिद्धिः, परास्थान प्रदायिनी, पुष्पा, पुष्पवती, नित्या, पुष्प मालाविभूषिता, पुरातना, पूर्वपरा, पर सिद्धि प्रदायिनी, पीता नितम्बिनी, पीतापीनोन्मत्त, पयस्तनी, प्रेमाप्रमध्यमा, शेषापद्म,पत्रविलासिनी,पद्मावती,पद्मनेत्रा, पद्मा, पद्ममुखी,परापद्मासन, पद्मप्रिया,पद्मरागस्वरूपिणी,पावनी,पालिका, पात्री, परदा, वरदाशिवा, प्रेतसंस्था, परानन्दा, परब्रह्मस्वरूपिणी,जिनेश्वर, प्रियादेवी, पशुरक्त रतप्रिया, पशुमांस प्रिया, पर्णा, परामृत परायणा, पाशिनी, पाशिका, पशुघ्नी, पशुभासिणी, फुल्लारविन्द वनी, फुल्लोत्पल शरीरिणी, परानन्द प्रदावीणा, पशुपाश विनाशिनी, फूत्कारा, फूत्परा,फेणी, फुल्लेन्दीवर लोचना, फट मन्त्रा, स्फटिका, स्वाहा स्फोटा, च फट् स्वरूपिणी, स्फाटिका,

घुटिका, घोरा, स्फटिकाद्रि स्वरूपिणी, वरांगना, वरधरा, वाराही, वासुकी, वरा, विन्दुस्था, विन्दुनी, वाणी बिन्दुचक्र, निवासिनी, विद्याधरी, विशालाक्षी, काशीवासि, जनप्रिया, वेद विद्या, विरूपाक्षी, विश्वयुग, बहुरूपिणी, ब्रह्मशक्ति, विष्णु ;शक्ति, पंच वक्त्रा, शिवप्रिया, बैकुण्ठ वासिनी देवी, वैकुन्ठपद दायिनी, ब्रह्मरूपा, विष्णुरूपा, परब्रह्म, महेश्वरी,भव प्रियाभवोद्मावा,भवरूप भवोत्तमा, भवपारा, भवधारा,भाग्यत्प्रिय कारिणी, भद्रासुभद्राभदा, शुम्भ दैत्य विनाशिनी, भवानी,भैरवी,भीमा, भद्रकाली, सुभद्रिका, भगिनी, भगरूपा, भगमाना, भगोत्तमा,भग प्रिया, भगवती, भगवासा,भगकरा,भग्यसृष्टा,भगयवती, भगरूपा, भगवासिनी, भगलिंग प्रिया देवी, भगलिंग परायणां, भगलिंग स्वरूपा, भगलिंग विनोदिनी, भगलिंगरता देवी, भगलिंग निवासिनी, भगमाला, भगकला, भगाधारा, भगाम्वरा, भगवेगा, भगाभूषा, भगेन्द्रा, भाग्यरूपिणी, भगलिंगांगसंभोगा, भगलिंगा,सवावहा,भगलिंगसमाधुर्या,भगलिंग निवेशिता, भगलिंग सुपूजा, भगलिंग, समन्विता, भगलिंग विरक्ता, भगलिंग समावृता, माघवी, माघवी मान्या, मधुरा, मधु, मानिनी,मन्दहासा,महामाया,मोहिनी,महदुत्तमा, महामोहा, महाविद्या, महाघोरा,महास्मृति,मनस्विनी, मानवती,मोदिनी, मधुराननना,मेनिका, मानिनी, मान्यामणि, रत्न विभूषणा, मल्लिका, मौलिका, मालाधर, मदोत्तमा, मदना, सुन्दरी, मेधा,मधुमत्ता,मधु प्रिया, मत्तहंसा, समोन्नासा, मत्तसिंह, महासती, महेन्द्र वल्लभा, भीमा, मौल्यं, मिथुनात्मजा, महाकाल्या, महाकाली, महाबुद्धि, महोत्कटा, माहेश्वरी,महामाया, महिषासुरधातिनी, मधुरा, कीर्तिमत्ता,मत्तमातंग, गामिनी, मदप्रिया, मांसरतामत्तयुक्, कामकारिणी,मैथुन्य, वल्लभा देवी, महानन्दा, महोत्सवा, मरीचिरमा, रतिमाया,मनोवुद्धि प्रदायिनी, मोहामोक्षा, महालक्ष्मी, महत्पद प्रदायिनी, यमरूपा, यमुना, जयन्ती, जयप्रदा, याम्या, यमवती ,युद्धा यदोः, कुल विवर्द्धिनी, रमा, रामा, रामपत्नी, रत्नमाला, रतिप्रिया, रत्नसिंहासनस्था, रत्नाभरणमण्डिता, रमणी, रमणीया, रत्या, रसपरायणा, रतानन्दारतवती, रघूणां, कुलवर्द्धिनी, रमणारि ,परभ्राज्या, धाराधिक, रत्नजा, रावी,रास स्वरूपा, रात्रि राजसुखावहा, ऋतुजा, ऋतुजा ऋद्धा, ऋतुरूपा, ऋतुप्रिया, रक्तप्रिया, रक्तवती, रंगिणी, रक्त दन्तिका, लक्ष्मी, लज्जा, लतिका, लीला, लग्ना, निताक्षिणी, लीलावती, लोमा हर्षा, ल्हादन, पट्टिका, ब्रह्मस्थिति

बह्मरूपा, ब्रह्मणा, वेदवन्दिता, बाला, युवती, घृद्धा, ब्रह्मकर्म परायणा, विन्ध्यस्था, विन्ध्यावासी, विंदु युक्त, विन्दुभूषणा, विद्यावती, वेदधारी, व्यापिका, बर्हिणीकला, वामाचार, प्रिया, वन्हि, वामाचार, परायणा , बन्धमोचन, कर्त्री, वारुणा, वरुणालया:, शिवाशिव प्रिया ,शुद्धा, शुद्धांगी, शुक्लवर्णिका, शुक्लपुष्प प्रिया, शुक्ला, शिव धर्म परायणा, शुक्लस्था, शुक्लनी, शुक्ल रुपाशुक्ल, पशु प्रिया, शुक्रस्था, शुक्रिणी, शुक्रा, शुक्ररुपा, शुक्रिका, षण्मुखी, षडंग, षट चक्र विनिवासिनी, षड्ग्रंथि युक्ता, षोढा, षण्माता, षडालिका, षडंगयुवती देवी, षडंग, प्रकृतिर्वशी, षडानना, षड्रसा, षष्ठी, षष्ठेश्वरीप्रिया, षडंकवादा, षोडशी, षोढान्यास स्वरुपिणी, षट्चक्र, भेदनकरी, षट् चक्रस्था, स्वरूपिणी, षोडशस्वर, रूपाषण्मुखी, षड्रसान्विता, सनकादि स्वरुपा, शिवधर्म परायणा, सिद्धा, सप्तस्वरी, शुद्धा, सुरमाता, स्वरोत्तमा, सिद्धविद्या, सिद्धमाता, सिद्धासिद्ध स्वरूपिणी, हरा, हरिप्रिया, हारा हरिणी, हार युक्, हरिरुपा, हरिधारा, हरिणाक्षी, हरिप्रिया, हेतुप्रिया, हेतुरता, हिताहित स्वरुपिणी, क्षमा, क्षमावती, क्षीता, क्षुद्र घण्टाविभूषणा, क्षयंकरी, क्षितीशा, क्षोणमध्य, सुशोभना, अजानन्ता, अपर्णाअहल्या, शेषशायिनी, स्वान्तर्गता, साधूनां, अन्तरानना रूपिणी, अरूपा ,अमला, चार्द्धा, अनंत गुणशालिनी, स्वविद्या, विद्यका, विद्या, विद्धा ,चार्विन्दा, लोचना, अपराजिता, जातवेदा, अजया, अमरावती, अल्पा, स्वल्पा, अनल्पाद्या, अणिमा, सिद्धिदायिनी, अष्टसिद्धिप्रदा, देवीरूप, लक्षण संयुता, अरविन्द, मुखा देवी, भोग सौख्य, प्रदायिनी, आदिविद्या, आदिभूता, आदि सिद्ध, प्रदायिनी, सीत्कार रूपिणीदेवी, सर्वासन विभूषिता, इन्द्रप्रिया, इन्द्राणी, इन्द्रप्रस्थ निवासिनी, इन्द्राक्षी, इन्द्रवज्रा, इन्द्रम द्योक्षणी, ईला, काम निवासा, ईश्वरीश्वर, वल्लभा जननी, ईश्वरी, दीना, भेदा, ईश्वर कर्मकृत्, उमा, कात्यायनी, ऊर्ध्द्धा, मीना, उत्तर वासिनी, उमापति, प्रिया देवी, शिवा, ओंकार रूपिणी, उगगेन्द्र, शिरोरत्न, उरगोरन वल्लभा, उद्यान वासिनी, माला प्रशस्त मणिभूषणा, उर्ध्द्ध, दन्तोत्तमांगी, उत्तमा, ऊर्ध्व केशिनी, उमासिद्धि, प्रदाया, उरगासन, संस्थिता, ऋषि पुत्री, ऋषि छन्दा, ऋद्धिसिद्धि प्रदायिनी, उत्सव उत्सवसीमंता, कामिका, गुणान्विता, एला, एकार ,विद्या, एर्णी विद्याधरा, ओंकार वलयोपेता, ओंकार परमा कला, ओं वद वद वाणी, ओंकाराक्षर

मण्डिला, ऐन्द्री कुलिशहस्ता, ओं लोक परवासिनी, ओंकार मध्य बीजा, ओं नमो रूपधारिणी, पर ब्रह्मस्वरूपा, अंशु, कांशुक वल्लभा, ओंकारा, अः फड् मन्त्रा, अक्षराक्षर विभूषिता, अमन्त्रा, मन्त्र रूपा, पद शोभा, समन्विता, प्रणवोंकार रूपा, प्रणवोच्चार, भाग ह्रींकार रूपा, ह्रींकारी, वाग्वीजाक्षर, भूषणां, हृल्लेखा, सिद्धि योगा, हृत्पद्मासन, संस्थिता, बीजाख्या, नेत्र हृदया, ह्रीं, बीजा, भुवनेश्वरी, क्लीं कामराजाक्लिन्ना, चतुर्वर्ग फलप्रदा, क्लीं क्लीं क्लीं रूपिकादेवी, क्रीं क्रीं क्रीं नाम धारिणी, कमला, शक्ति, बीजपा, शांकुश विभूषिता, श्रीं श्रींकारा, महाविद्या, श्रद्धा, श्रद्धावती, ओं ऐ क्लीं ह्रीं, श्रीं परा क्लींकारी, परमाकला, ह्रीं क्लीं श्रींकार स्वरूपा, सर्वकर्म फलप्रदा, सर्वाढ्या, सर्व देवीं, सर्व सिद्धिप्रदा, सर्वज्ञा, सर्वशक्ति, वागविभूति, प्रदायिनी, सर्वमोक्ष, प्रदादेवी, सर्वभोग प्रदायिनी, गुणेन्द्र, वल्लभा, वामा, सर्वशक्ति प्रदायिनी, सर्वांनन्द मयी, सर्व सिद्धि प्रदायिनी, सर्वचक्रेश्वरी देवी, सर्व सिद्धेश्वरी, सर्व प्रियंकरी, सर्व सौख्य प्रदायिनी, सर्वानन्द, प्रदादेवी, ब्रह्मानन्द प्रदायिनी, मनोवांछित दात्री, मनोवृद्धि समन्विता, अकारादि, क्षकारान्ता, दुर्गा, दुर्गति नाशिनी, पद्मनेत्रा, सुनेत्रा, स्वधा, स्वाहा, वषट करी, स्ववर्गा, देववर्गा, पवर्गां, समन्विता, अन्तस्था, वेशमरूपा, नवदुर्गा, नरोत्तमा, तत्व सिद्धि, प्रदा, नीला, नीलपताकिनी, नित्यरूपा, निशाकारी, स्तम्भिनी, मोहिनी, वंशकरी, उच्चारी, उन्मादा, कर्षिणी, मातंगी, मधुमत्ता, अणिमा, लघिमा, सिद्धा, मोक्षप्रदा, नित्या, नित्यानन्द प्रदायिनी, रक्तांगी, रक्तनेत्रा, रक्तचन्दन भूषिता, स्वल्पसिद्धि, सुकल्पा, दिव्यचारण, शुक्रमा, संक्रांन्ति, सर्वविद्या, सत्य वासर भूषिता, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थिका, पंचमी, षष्ठी, विशुद्वा, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, तथा द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावास्या, पूर्वा, उत्तरा, परिपूर्णिमा, खङ्गिंग्नी, चक्रिणी, घोरा, गदिनी, शूलिनी, भुशुण्डी, चापिनी, वाणी, सर्वायुध विभूषणा, कुलेश्वरी, कुलवती, कुलाचार परायण, कुल कर्म सुरक्ता, कुलाचार प्रवर्द्धिनी, कीर्तिः, श्री रमा, रामा धर्मायै, सततं नमः, क्षमा, धृति, स्मृति, मेघा, कल्पवृक्ष निवासिनी, उग्राउग्र प्रभा, गौरी, वेदविद्या, विवोधिनी, साध्या, सिद्धा, सु सिद्धा, विप्ररूपा, काली, कराली, काल्याः, काल दैत्य विनाशनी, कौलिनी, कालिकी, कचटतप वर्णिका, जयिनी, जय युक्ता,

जयदा, जृम्भिणी, स्राविणी, द्राविणी देवी, भेरूण्डा, विन्ध्यवासिनी, ज्योति भूता, जयदा, ज्वाला, माला, समाकुला, भिन्नाभिन्न, प्रकाशा, विभिन्ना, भिन्न रूपिणी, अश्विनी, भरणी, नक्षत्र सम्भवानिला, लाश्यपी, विनीता, ख्याता, दितिजा, दिति, कीर्ति, काम प्रिया देवी, कीर्त्या, कीर्ति, विवर्द्धिनी, सद्यों, मांस समालब्धा, सद्यश्छिन्नासि, शंकरा, दक्षिणा, उत्तरा, पूर्वा, पश्चिमादिक्, अग्नि, नैॠति, वायव्या, ईशान्यादिक्, ऊर्ध्वगाधोगताश्वेता, कृष्णा, रक्ता, पीतका, चतुर्वर्गा, चतुर्वर्णा, चतुमन्त्राात्मिकाक्षरा, चतुर्मुखी, चतुर्वेदा, चतुर्विद्या, चतुर्मुखा, चतुर्गणा, चतुर्माता, चतुर्वर्ग, कलप्रदा, धात्री, विद्यात्री, मिथुना, नारी, नायक वासिनी, सुरा, मुदा, मुदवती, मोदिनी, मैनकात्मजा, उर्ध्वकाली, सिद्धि काली, दक्षिणा, कालिका, शिवा, नील्या, सरस्वती, वगला, छिन्न मस्तका, सर्वेश्वरी, सिद्धविद्या, परापरम देवता, हिंगुला, हिंगुलांगी, हिंगुलाधर वासिनी, हिंगुलोत्तम वर्णाभा, हिंगुला, भरणाचसा, जाग्रती, जगन्माता, जगदीश्वर वल्लभा, जनार्दन; प्रियादेवी, जययुक्ता, जयप्रदा, जगदानन्दकारी, जगदाल्हाद कारिणी, ज्ञानदानी कारी, यज्ञा, जानकी, जनक प्रिया, जयन्ती, जयदा, नित्या, ज्वलदग्नि, समप्रभा, विद्याधरा, च बिम्बोष्ठी, कैलाशाचल वासिनी, विभवा, वडवाग्नि, अग्नि होत्र फलप्रदा, मन्त्ररूपा, परादेवी, गुरूरूपिणी, गया, गंगा, गोमती, प्रभासा, पुस्करा, विध्याचलरतादेवी, विध्याचल निवासिनी, बहू; बहुसुन्दरी, कंसासुर विनाशिनी, शूलिनी, शूल हस्ताच, वज्रा, वज्र हरा, दुर्गा, शिवाशन्ति करी, ब्रह्माणी, ब्राह्मण प्रिया, सर्वलोक प्रणैत्री, सर्वरोग हरा, मंगलः शेभना, शुद्धा, निष्कला, परमाकला, विश्वेश्वरी, विश्वमाता, ललिता, वासितानना, सदाशिव उमा, क्षेमा, चण्डिका, चण्डविक्रमा, सर्व देवमयी देवी, सर्वागम भयापहा, ब्रह्मेश, विष्णु नमिता, सर्वकल्याण कारिणी, योगिनी, योगमाता, योगीन्द्र हृदय स्थिता, योगिजाया, योगवती, योगीन्द्रानन्द, योगिनी, इन्द्रादि, नमिता देवी, ईश्वरी, प्रिया, विशुद्धिदा, भयहरा, भक्तद्वेवी, भयंकरी, भववेषा, कामिनी, भेरूण्डा, भय कारिणी, बलभद्र प्रियाकारा, संसारार्णत, तारिणी, पंचभूता, सर्वभूता, विभूति, भूतिधारिणी, सिंहवाहा, महामोहा, मोहपाश विनाशिनी, यमदूती, पिंगाक्षी, वैष्णवी, शंकरी, चन्द्रप्रिया, चन्दरता, चन्दनारण्य वाशिनी, चन्दनेन्द्र समायुक्ता, चन्द्र दैत्य विनाशिनी, सर्वेश्वरी, यक्षिणी, किराती,

राक्षसी, महा भोगवती देवी, महामोक्ष प्रदायिनी, विश्व हंत्री, विश्वरूपा, विश्व संहारकारिणी, धात्रीसर्व लोकानां, हितकारण कामिनी, कमला, सूक्ष्मदा देवी, धात्री, हर वामिनी, सुरेन्द्रपूजिता, सिद्धा, महातेजोवती, परा रूपवती देवी, त्रैलोक्याकर्षण कारिणी, इस तरह से हे देवि: तुमसे पीताम्बरा महाशक्ति श्री बगलामुखी का सहस्त्रनाम वर्णन किया। जो इसका पाठ करता है या पाठ करवाता है हे प्रियतमे। उसे सभी सिद्धियां मिलती है उसे सफलता मिलती है। यह मैंने विष्णु के द्वारा कहा गया महा स्तम्भन कारी श्रेष्ठ स्तव कहा है। प्रातःकाल, सुवह के समय, मध्यान्ह काल, दोपहरी में, संध्याकाल, शाम के वक्त हे पार्वति। एकाग्रमन से इसे पढ़ता है उसे समस्त सिद्धियां मिलेंगी एक बार पाठ कर लेने पर सभी पापों का नाश हो जाता है । दोवार पाठ करने से विघ्नेश्वरी गणेशजी के समान हो जाता है। तीन बार पाठ कर लेने पर सर्वथा समस्त काम सिद्ध हो जाते हैं। इस स्तव के प्रभाव से हे सुव्रते! साक्षात्कार भी होता है। मोक्ष का चाहने वाला मोक्ष प्राप्त कर सकता है। धन का इच्छुक धनवान बन सकता है। विद्या जिसे नहीं आती वह विद्यार्थी इसका पाठ करे तो उसे विद्या मिलती है तर्क व्याकरण विद्या का प्रदाता यह स्तव है। एक वर्ष तक पाठ करने से शत्रु की हानि हो जाती है। राजा इसके पाठ से वश में हो जाता है। इसके स्मरण करने से साधक राजा के समान बन जाता है। जो सदा भक्ति पूर्वक इसका पाठ करता है उसका हे प्रिये सब तरह से मंगल होता है। बहुतों के ऊपर अ-ध्यक्ष पद पर पहुँचता है प्रतिनिधित्व करने वाला होता है काव्य की रचना करने वाला कविश्रेष्ठ बन जाता है। मातृ योनिवत इसे गुप्त रखे प्रयत्न कर छिपाकर रखना चाहिये हरेक को प्रकट न करे। हेतु युक्त नित्य होता है और शक्ति युक्त सदा होता है। जो इसका नित्य पाठ करते हैं वे शिव के द्वारा शिव के ही समान बन जाते हैं। जीते जी जिन्दगी भर धर्म अर्थ भोग प्राप्त करते हैं मरने पर दुर्लभ मोक्ष मिलती है। हे महादेवि ये जो कुछ कहा है वह सत्य है ऐसी त्रिवाचा में करता हूँ इसमें सन्देह नहीं करना। इस स्तव के प्रभाव से देवताओं के साथ प्रसन्नता पूर्वक विहार करता है। सभी देवता प्रसन्नचित से इस स्तवराज का कीर्तन करते है। और उसके कीर्तन से; पीताम्बरा ओढ़ने वाली पीले चन्दन मद्य का विलेपन

से चर्चित सुर सुन्दरी परम कीर्ति का उदय करे ।। यह श्री उत्कट शम्बर नागेन्द्र प्रयाण तन्त्र में षोडश सहस्त्र के अन्तर्गत विष्णु शंकर के संवाद में पीताम्बरा देवी बगलामुखी का सहस्र नाम वर्णन कर समाप्त किया है ।। जयमाईजी की ।। शुभ्भूयातभू ।।

।। इति श्री वगलामुखी सहस्रनाम भाषा सम्पूर्णम् ।।

अथ तन्त्रान्तरे

श्री वगलामुखी विधानम् ।।

ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि सद्यः प्रत्ययकारणम् ।
साधकानां हितार्थाय स्तंम्भनाय च वैरिणाम ।।१।।
यस्याः स्मरण मात्रेण पवनोपि स्थिरायते ।
प्रणवं स्थिर मायां च ततश्च वगलामुखि ।।२।।
तदन्ते सर्व दुष्टानां ततोवाचं मुखं पदं ।
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेतिपदं ततः ।।३।।
बुद्धिंनाशय पश्चात् स्थिर मायां समालिखेत् ।
लिखेच्च पुनरोंकारं स्वाहेति पद्मंततः ।।४।।

षट् त्रिंशदक्षरी विद्या सर्व संपत् करामता । स्थिर मायां ह्लींकारः ।।

तन्त्रोंत्तरे-

वन्हिहीनेन्द्र माया युक् वगलामुखि सर्वेयुक् ।
दुष्टानां वाच मित्युक्तवा मुखं स्तम्भय कीर्तयेत् ।।५।।
जिह्वां कीलय बुद्धिं तु विनाशय पदंवदेत् ।
पुनर्वीर्जि तत स्तार वन्हि जायावधिर्भवत् ।।६।।

।। तारादिका चतुस्त्रिंशदक्षरा वगला मुखी इत्यमित ।।

तन्त्रसार में लिखे अनुसार अन्य तन्त्रों में वर्णित वगलामुखी के विधान का वर्णन करते है। ब्रह्मास्त्र को कहता हूँ जिससे शीघ्र ही साधकों का हित होता है और वैरियों का स्तम्भन। इसलिये साधकों के हित के लिये और शत्रुओं के स्तम्भन के लिये ब्रह्मास्त्र वर्णन करता हूँ।

ओं ह्लीं इसके बाद वगलामुखी इसके आगे सर्व दुष्टानां तत्पश्चात् वाचं मुखं पदं स्तम्भय तत्पश्चात् जिह्वां कीलय पद इसके बाद बुद्धिंनाशय फिर ह्लीं लिखे और फिर ओं स्वाहा लिखे। यह छत्तीस अक्षर वाली सर्व सम्पत्कारी विद्या वर्णन की स्थिर माया ह्लीं को कहते हैं।

अन्य तन्त्र ग्रंथ में ओं ह्लीं वगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ओं स्वाहा। यह चौतीस अक्षर वाली वगलामुखी वर्णन की है।

इसका ध्यान इस प्रकार से है॥

तस्याध्यानम्--

ॐ गंभीरां च मन्दोन्मत्तां स्वर्णकांति समप्रभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम्॥
मुग्दरं दक्षिणेपाशं वामे जिह्वांच वज्रकम्।
पीताम्बरधरां देवीं हृद पीन पयोधरां॥
हेम कुण्डल भूषां च पीत चन्द्रार्द्ध शेखराम्।
पीतभूषणभूषां च स्वर्ण सिंहासने स्थिताम्॥

गहन और स्वाभिमान में उन्मत सोने की सी प्रतिभा वाली, चतुर्भुजी तीन नेत्र वाली कमल आसन पर विराजमान, दाहिने हाथों में मुग्दर और पाश तथा बांऐ हाथों में शत्रु की जिह्वा और बज्र पीताम्बर धारण करने वाली सुवर्ण के कुन्डल पहने व आभूषण धारे, पीला अर्द्धचन्द्र शिरपर धारे पीले वस्त्राभूषण पहने सुवर्ण के सिंहासन पर विद्यमान है॥

अस्या पूजा प्रातः कृत्यादि प्राणायामांतं कृत्वा ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्॥

शिरसि नारद ऋषये नमः। मुखे त्रिष्टुप्छंदसे

नमः। हृदि बगलायै देवतायै नमः। लिंगे ह्लीं बीजाय नमः। पादयोः स्वाहाशक्तये नमः॥

नारदोश्च ऋषि र्मूर्ध्नित्रिष्टुप् छंदश्च तन्मुखे। श्री वगला मुखी देवी हृदये विन्यसे त्ततः॥

ह्लीं बीजं गुह्य देशे तु स्वाहा शक्तिस्तु पादयोरिति॥ ततः करांगन्यासौ। ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

बगला मुखि तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा॥ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्॥

वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं॥ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्॥

बुद्धिंविनाशय ह्लीं ओं स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्॥ एवं हृदयादिषु॥ तथा दिव्य तन्त्रे युग्म वागेषु सप्ताहि शेषान्येश्च मनूद्भवैः। करशाखासु तलयोः करांगन्यास माचरेन्॥

ततो मूलांते आत्मतत्व व्यापिने वगलामुखी श्री पादुकां पूजयामि इति मूलाधारे॥ मूलांते विद्या तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री पादुकां पूजयामीति हृदये ॥ मूलांते शिवतत्व व्यापिनी वगलामुखी श्रीपादुकां पूजयामीति शिरसि॥ मूलांते सर्व तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्रीपादुका पूजयामीति सर्वांगे। ततश्च मूर्ध्निभाले भुवोः श्रोत्र गण्डयो र्नसयोः पुनः। ओष्ठयो र्मुख वृत्ते च दक्षिणां से च कूर्परे। मणिबंधे गुलेर्मूलेभाले च कुचयोहृदि॥ नाभौ कट्यां गुह्यदेशे

वामाँसे कूर्परे तथा। मणिबंधें गुलेर्मूले ततश्च विन्यसेत्युनः।। दक्ष वामे चोरू जान्वो र्गुल्फयोरंगुलि मूलयोः।। क्रमेण मन्त्र वर्णास्तु न्यस्त्वा ध्यायेद्यथा।।

इसकी पूजा प्रातःकाल से प्राणायाम तक करके ऋष्यादिक न्यास करे 'नारद ऋषये नमः' कहकर शिर पर हाथ रखे 'त्रिष्टुप्छंन्द से नम' बोलकर मुखपर हाथ रखे 'बगलायै देवतायै नमः' हृदय पर हाथ रखे 'ह्लीं बीजाय नमः' बोलकर गुह्य स्थान पर स्पर्श करे 'स्वाहा शक्ति' बोलकर दोनों पैरों का स्पर्श करे।

इसके पश्चात् करांगुलिन्यास हृदयांगन्यास करे। 'ओं ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः' कहकर दोनों अंगूठा और हृदय पर न्यास करे। 'वगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा' कहकर दोनों तर्जनीयों पर और शिर पर स्पर्श करे। 'सर्वदुष्टानां' कहकर दोनों मध्यमा अंगुलियों पर और शिखा पर न्यास करे। 'वाचं मुखं पद स्तम्भय' बोलकर दोनों अनामिकाओं तथा दोनों भुजाओं का स्पर्श करे। 'जिह्वांकीलय' कहकर दोनों कनिष्ठिका अंगुलियों का व तीनों नेत्र स्थलों का स्पर्श करे। 'बुद्धिं विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा' कहकर दोनों हथेली दोनों हाथ के पृष्ठ भाग और बांए हथेली पर दाहिने अंगूठा तर्जनी से ताली बजाकर करन्यास अंगन्यास पूरा करे।इसके अलावा दिव्य तंत्र में लिखा है कि दो पांच सात सात तथा शेष वाकी के मन्त्र के अक्षरों से करांगन्यास करले। इसके बाद मूलमंत्र पढ़कर आत्म तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री पादुका का पूजन करता हूँ, कहकर मूलाधार में न्यास करे। मूलमंत्र के बाद विद्या तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री पादुकां पूजयामि कहकर हृदय पर विन्यास करे। मूल मंत्र के बाद शिवतत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री पादुकां पूजयामि कहकर शिर पर न्यास करे ॥ मूल मंत्र के बाद सर्व तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री पादुका पूजयामि कहकर शिर पर न्यास करे।। मूल मंत्र के बाद सर्व तत्व व्यापिनी वगलामुखी श्री पादुकां पूजयामि कहकर सर्वांग में न्यास करे।

इसके बाद शिर पर, ललाटपर, भुकुटियों पर;कानों पर, कपोलों पर, नासिका पर, दोनों होठों पर, मुखारविन्द पर, दाहिने दोनों कंधों पर, कोहनीयों पर, कलाई पर, दोनों हाथ की अंगूलीमूल में,भाल पर,स्तनों पर,

हृदय पर, नाभि पर, कमर में, गुह्य स्थान पर, बांए कंधे पर, कौहनी पर, मणिवंध कलाई पर, अंगुलीमूल पर, न्यास करले। तत्पश्चात फिर दाहिनी बांई जंघामूल पर, दोनों घुटनों पर, दोनों टकुनों पर, दोनों पैरों की अंगुली के मूल स्थानों पर, क्रम पूर्वक मन्त्राक्षर का न्यास करे। जैसी विधि से ध्यान बताया गया हो उस विधि से ध्यान करे।

ततोध्यानम्

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेदी सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णां। पीताम्बराभरण माल्य विभूषितांगी देवीं नमामि धृतमुग्द्र वैरिजिव्हाम्॥१॥

जिव्हाग्र मादाय करेणदेवी वामेन शत्रुं परिपीडयंतीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीतांबराढ्यां द्विभुजां नमामि॥२॥

एवंध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य बहिः पूजामारभेत्॥ तत्र प्रथमतोऽर्घ्य स्थापनं॥ तद्यथा॥

सुधा के सागर के मध्य मणि मण्डप में रत्नवेदी पर स्थापित सिंहासन से ऊपर बैठी पीले रंग वाली पीताम्बर पहने, आभूषण माला से विभूषित देह वाली देवी को, मुग्दर धारै, बैरि की जिव्हा को पकड़े नमस्कार करता हूँ।।१।।

जिव्हा का अग्रभाग हाथ से ग्रहण किये बांए हाथ से शत्रु को पीड़ा पहुँचाने वाली देवी, दाहिने हाथ से गदा की मार से शत्रु को चोट पहुँचाने वाली, पीताम्बर ओढ़े दो भुजी देवी वगलामुखी को नमस्कार करता हूँ।।२।।

इस तरह से ध्यान करके मानसोपचार से पूजनकर बहिर्याग पूजन का प्रारम्भ करे। पूजा में सर्व प्रथम अर्घ्य स्थापना करे जो इस प्रकार है।।

अष्टां गुलं चतुस्रं विधाय ईशानादिषुपूर्वादिदिक्षु च कुसुमाक्षत चन्दनैः॥ ग्लौंगणपतये नमः॥ इत्यनेन गज दानेन संम्पूज्य तेन मधुना चार्घ्य आरोपयेत्॥

ततो वार त्रयं विद्यया संपूज्यांगानिन्यसेत्॥ ततोधेनु योनि मुद्रा प्रदर्श्य तेनोदकेनात्मानं पूजोपकरण चाभ्युक्ष्योत्त्रिः॥

आठ अंगुल का चतुरस्र मण्डल बनाकर ईशानादिक पूर्वादिक दिशा में चन्दन पुष्प अक्षत से 'ग्लौं गणपतये नमः' दश दिग्गजों की पूजा करे। मीठे शर्वत शहद से अर्घ्य पात्र में से अर्पण करे ।। धेनुमुद्रा योनिमुद्रा प्रदर्शित करे अर्घ्य के जल से अपनी आत्मा व पूजा सामग्री का तीन बार प्रोक्षण कर दे।

अस्यापूजायन्त्रम्

इसका पूजायन्त्र बतलाते हैं।

त्र्यस्रं षडस्रं वृत्ताष्ट दलं भूपुर समन्वितम्। ततोमूल मुच्चार्य आधार शक्ति कमलासनाय नमः'। एवं शक्ति बीज मुच्चार्य पद्मासनाय नमः। ततः पूर्ववत् ध्यात्वा पीठे आवाह्यषडंगानिविन्यसेत्॥ ततोमुद्राःप्रदर्श्यपूर्ववाषडंगेन मण्डलं यजेत्॥ ततो मूलेन मंत्रयित्वा धेनुयोनिमुद्रां प्रदर्शयेत्॥ तत आत्म विद्याशिव स्तत्वै बिंदुत्रयं मुखे क्षिप्त्वा तर्जन्यंगुष्ठ योगेन सांगां सावरणां वगलामुखीं तर्पयेत्॥ ततोयथा सम्भव मुपचारैः पूजयेत्॥

त्रिकोण षटकोण वृत्त अष्टदल भूपुर सहित यन्त्र बनावे मूल मंत्र का उच्चारण करके आधार शक्ति'कमलासनाय नमः'। इसी प्रकार शक्ति बीज बोलकर'पद्मासनाय नमः'इसके बाद पहले लिखा गया ध्यान करके सिंहासन पर आवाहन करके षडंगन्यास करे तत्पश्चात् मुद्राप्रदर्शित करके पूर्ववत् षडंग से मण्डल की पूजा करे। मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करके धेनु योनि मुद्रा दरसावे इसके बाद आत्म विद्या शिव तत्वों के द्वारा तीन विन्दु मुख में देकर तर्जनी अंगूठा के योग से सांग सावरण पूजा वगलामुखी देवी की

तर्पण करके करे। जैसा जो कुछ भी बने जैसी सामग्री जितनी पूजा सामग्री हो उससे वगलामुखी देवी का पूजन करे ।

तत आवरणपूजामारभेत्

त्रिकोणे सं सत्वाय । रं रजसे । तं तमसे नमः इति। ततः षट्कोणेषु पूर्वे ॐ सुभगायै नमः। अग्निकोणे ॐ भग सर्पिण्यै नमः। ईशाने ॐ भगावहायै नमः। पश्चिमे ॐ भग सिद्धायै नमः । नैर्ऋते ॐ भगपातिन्यै नमः।। वायो ॐ भगमालिन्यै नमः। अष्टपत्रेषु ब्राम्ह्याद्यामातरः पूज्याः ।। पत्राग्रेषु जयायै नमः ॐ विजयायै नमः ।। अजितायै नमः।। अपराजितायै नमः ।। जंभिन्यै नमः ।। स्तंभिन्यै नमः ।। मोहिन्यै नमः।। आकर्षिण्यै नमः।। ततो द्वारेषु-ॐ भैरवाय नमः।। तद्वाह्ये इन्द्रादीन् वज्रादीश्च सम्पूज्य धूपादि विसर्जनान्त कर्म समापयेत्।। यथा शक्ति जपं विधाय त्रिशूल मुद्रां प्रदर्श्य पुष्पांजलि त्रयं दत्वा दैवो योनि मुद्रां प्रदर्शयेत।। ततो भैरवाय बलिं धृत्वा विसर्जनान्तं कर्म समापयेत्।। अस्य पुरश्चरणं लक्षः।। तत्पश्चात् आवरण पूजा प्रारम्भ करे।।

त्रिकोण पर संसत्वाय नमः,रं रजसे नमः,तं तमसे नमः षट् कोण पर पूरव में सुभगायै नमः,अग्नि कोण में भगसर्पिण्ये नमः,ईशान में भगावहायै नमः, पश्चिम में भगसिद्धायै नमः । नैऋति में भगपातिन्यै नमः,वायव्य में भगमालिन्यै नमः । अष्टदल पर ब्राम्हीमाहेश्वरी आदि आठ माताओं की पूजा करके पत्र के अग्रभाग पर जया, विजया, अजिता, अपराजिता, जंभिनी, स्तंम्भिनी, मोहिनी, आकर्षिणी की पूजा करे।

तत्पश्चात् द्वारों पर भैरवनाथ की पूजा करे उसके बाहर इन्द्र, अग्नि,

यम, नैऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईश्वर ब्रह्माअनंत की पूजा करे उनके वज्रादिक आयुधों की पूजा करे। धूप दीपादि देकर विसर्जन पर्यंत कर्म समाप्त करदे।तत्पश्चात् यथाशक्तिः जप करके त्रिशूल मुद्रा प्रदर्शित करे। तीन वार पुष्पांजलि चढ़ाये देवी वगलामुखी को योनी मुद्रा से प्रणाम करे इसके बाद भैरवबलि प्रदान करे। विसर्जन पर्यन्त बलिदान कार्य पूरा करे। इसके मंत्र का एक लाख का पुरश्चरण है। जैसाकि तन्त्र ग्रंथों में लिखा हुआ है जो इस प्रकार है।

पीताम्बर धरोभूत्वा पूर्वाशाभिमुख स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मंत्री हरिद्रा ग्रंथि मालया॥१॥ ब्रह्मचर्य रतोनित्यं प्रयतो ध्यान तत्परः॥ प्रियंग्वाश्च रसेनापि पीत पुष्पैश्च होमयेत्॥ ततःप्रयोगः॥ कुरुते वाग्गति स्तम्भं दुष्टानां बुद्धिनाशनम्॥ जप होम प्रयोगे च मंत्रं चाप्ययुतं जपेत ॥ प्रियंगु हरितालाभ्यां लवणं जुहुयान्निशि। स्तम्भयेत् पर सैन्यानि नात्र कार्या विचारणा अथवा पीत पुष्पैश्च होमये त्स्तंभनेषु च॥ स्तम्भनेषु च सर्वेषु प्रयोगः प्रत्ययावहः॥ ओंकारयो संपुटयो रूर्ध्वाधः शिरसोलिखेत् ॥ मध्यगं नाम साध्यस्य तद्बह्ये याद्यमक्षरं। बीजं द्वितीय वर्गस्य तृतीयं विंदु भूषितम्॥ चतुर्दश स्वरोपेतं संलिखे त्पृथिवी गतं । ठाकरेश समावेष्ट च चतुष्कोण पुरं बहिः। तत्कोण रेखा संसक्तैः शूलैर्वज्राष्टकं लिखेत्॥ त्रिशूलं मध्य रेखायां पृथ्वीबीजानि पार्श्वयोः। अष्ट स्वपि च कोणेषु तद्बहि र्बगलां लिखेत॥पृथिव्यंतरिक्षं तं वाह्ये मातृका परिमण्डलं । आवेष्टव्य चाष्टधापश्चा त्तद्बाह्ये स्थिर मायया ॥ निरुध्यांकुश

बीजेन नाद संमिलितांघ्रिणा। लिखेत् पूर्व वदविष्टच पश्चाच्च वगलामुखीं। पट्टे पाषाण पट्टे व हरिद्रोन्मत्त तालकैः दिव्यस्तम्भे मुखस्तंम्भे लिखित्वा गाढ माक्रमेत्॥ विवादेतन्त्र मालिख्यभूर्जे तैरेव वस्तुभिः॥ कुम्भकारस्य चक्रस्यभ्रमतो विपरीतकः। मृत्तिकां समुपादाय वृषभं कारयेत्ततः। दुष्टं स्तंभयत्येव मुखं व्रहस्पतेरपि॥ इतितंत्रसारोक्त प्रयोगाः। विश्वसारोक्त--

कालीं तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी। भैरवी छिन्नभस्ता च विद्या धूमावती तथा। वगला सिद्धविद्या च मातंगी कमलान्विता। एतादृशा महादेवि सिद्ध विद्याः प्रकीर्तिताः॥

॥ इति तन्त्र सारोक्त श्री वगलामुखी देवी पटलम्॥

पीताम्बर पहनकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठकर हरदी की माला पर एक लाख वगलामुखी पीताम्बरा देवी का मन्त्र जाप करे। नित्त ब्रह्मचर्य पूर्वक वगलामुखी देवी का ध्यान करे। कांगुनी रस पीले पुष्पों से हवन करे।

जप में हवन में प्रयोग करते समय दस हजार का जाप करे तो वाक्वाणी गति चाल का स्तम्भन हो जाता है। नमक हरताल कांगुनी के हवन करने से शत्रु सेना का स्तम्भन हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं करना।

अथवा स्तम्भन करने के लिये पीले पुष्पों का हवन करे। सब प्रकार के स्तम्भन में यह प्रयोग किया जाता है।

ऊपर नीचे ओंकार का सम्पुट लगाकर लिखे मध्य में साध्यनाम उसके बाहर की तरह आदि अक्षर दूसरे वर्ग का बीज तीसरे पर विन्दी लगाकर चौदह स्वर अक्षरों से बांधे ठाकार से वेष्टित कर लपेटे उसके बाहर चतुष्कोण बनावें उसके कोने की रेखा पर शूल वज्र याने त्रिशूल और मुग्दर अष्ट आयुध बनावें रेखा के मध्य में त्रिशूल और बगली में लं बीज लिखे आठों

कोणों पर बाहर की तरफ बगला लिखे भूपूर के बाहर मातृका अक्षरों को लिखे उसके बाहर आठ स्थानों पर माया बीज ह्रीं लिखे। पट्टे पर या पत्थर पर हरदी हरताल व धूतरे के रस से देव स्तम्भन वामुखस्तम्भन में इसे लिखकर विवाद में इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर उक्त वस्तुओं से कुम्हार के चाक की उल्टा चलाकर उस पर से मिट्टी लेकर उस मिट्टी से बैल की प्रतिमा बनावें तो दुष्ट का स्तम्भन हो जाता है यदि यह वाचस्पति वृहस्पति भी हो तो भी मुख स्तम्भन हो जाता है। यह तन्त्रसार में वर्णन किया गया प्रयोग दरसाया है।।

विश्वसार तन्त्र में लिखा है कि काली, तारा, महाविद्या, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, विद्या, धूमावती, वगलामुखी, सिद्धविद्या, मातंगी, कमला ये दश महादेवी सिद्धविद्या कहलाती है तन्त्रसार में वर्णित यह वगलामुखी देवी का पटल कहा जो समाप्त हुआ।।

।। इति श्री वगलामुखी तन्त्रसिद्धि सम्पूर्णम् ।।